जनक राम कर गहिमुद माही। बैठारे सिंघासन पाही ।।
तिष्ट तिष्ट बोले मधु भीनी। कुश पेंग पहिरन हित दीनी ।।
कुश के सुचि जुग बिष्टर टोरी। दक्षिन पदतट धरिस बहोरी
प्रभुसन कहेव जोरि जुगपाना। यह विस्टर लीने भगवाना ।।
अक्षत हरद रत्न कुश धारे। धरे चारमनि भाजन भारे ।।
नाना सुमन सुगंधन सानी। तिन मह भरेउ देव सरिपानी।
बैठे श्रीरघुनन्दन प्यारे। इक सौ तिनके पाई पखारे ।।
आदि विष्णु भो भो श्रीनाथा। करहु ग्रहण पादारघ पाथा।
दो०-कुश विस्टर पद वाम को, कीना पुनि निमिनाथ।
पात्र एक रतनन जटित, धरो राम के हाथ ।।
अरध भजनन कोजो नीरा। तामह छोड़त भो नृप धीरा ।।
अर्ध-अर्घ यह अर्ध विशाला। लीजै सो मम दत्त कृपाला ।।
आचारज बच्च जनक सुजाना। चार समुद्रन को किये ध्याना
आवाहन कीने मुद छाये। तेजवान मुनि ह्वै तह आये ।।
अपनो जल कुँभन मह कीने। ते नृप अग्र मुदित धरि दीने ।।
तंदुल हरद दर्भ तिन माही। भरे रतन जिन मोल महाही।
तिन कुँभन के जलसन रावा। तीन वार आचमन करावा ।।
अहो अनन्त सगर कुल दीपा। लेहु आचमन कहेउ महीपा ।।
दो०-बक हृदय श्रुति दगन सों, दर्भ सरल दिवाई।
किये श्रोत वंधन बहुरि विधि सौ तिरहुतराई ।।
पुनि मधु पर्क हेत मलिवाना। उत्तम घीउ एक पल आना ।।
दधि पल तीन सहत पल एका। स्वर्ण पात्र में लियस विवेका।

वेद मन्त्र पढ़ राम प्रवीना । कुश सौ ताहि विमिश्रित कीना
नृप अंगुष्ठ तर्जनी लाई । विनय सहित किंचितसु उठाई ।।
दयो राम के दक्षिण हाथा । हृदय प्रीति कहेउ लेहु ममनाथा
परखि प्रेम राघव सुख पायो । ताहि सप्रीति सुधा सम पायौ ।
इहि क्रम तीन वारवह लीना । सागर सलिल आचमन कीना
पुनि पुनि रथ लैके रघुराई । अपने दोऊ दृगन छिवाई ।।

दो०-कुश गोरी थापन कियो, बहुरि राम रघुनाथ ।
सब उपचारन सौ कलित, पूजो अपने हाथ ।।

कुश इक जनक लियो निजपाना । ताहु गहेउ राम भगवाना ।
निजनिजतनको खैचि निपाला।ताहूविनसोकलुषकहाइहिभाला
प्रायश्चित हेत श्रीमाना । गो सहस्त्र को दीनेउ दाना ।।
पय वंतिनि नव वत्सन वारी । वसन विभूषण सो श्रृंगारी ।।
राम करत गन नायक पुजा । लिन्ह प्रगट मनोरथ पुजा ।।
प्रगट गौंरी सो पुजन लेहि । राम बंधु युत कर धरि देही ।।
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद विधाना । अनल थापया वेदि मतिमाना
प्रगटयो परम प्रकाश हुतासा । ज्वाला बढ़ी दाहिनि आसा ।।
जनक सबंधु बसीष्ठ बुलाये । तासु पानि मधुपर्क दिवाये ।।
गनपति पुजन आदि चारा । करवायो गुरु गाधि कुमारा ।।
सतानन्द सो दोंउ मुनि गाये । वनत आशु अवसियहि बुलाये
मिथिला पति शुभ वसन मगाये । जे वरहेत प्रथम बनवाये ।
गुंफित नाना रतन सुरंगा । भूसित करे राम के अंगा ।।

सतानन्द नरपति रुख जानी । आयसु दीन्ह जाय महारानी ।।
दो०-सतानन्द आनन्द भरि, कह्यो सुनैनहि जाय ।
जाहि जानकी वहिनिन संग, भई घरी अब आय ।।
गुरु निदेश सुनि सुमुखि सुनैना । हरषित भई अमित सुखऐना
गुरु पतनिहि वर बृद्ध कुलीनी । कुल समानि जे नारि प्रवीनी
सबहि बुलाय कही सुनि लेहीं । देविलली कहँ आशिष देहीं ।।
सुनि देहि अशीष सिय कहँ जय जय सदा जय जय लली ।
अहिवात पूरन हो अचल जगसुर सरी जब तक थली ।।
प्रिय होहु पति कहँ प्राण सम गिरिजा महेशहिं जस प्रिया ।
लक्ष्मी यथा प्रिय विष्णु तस पतिदेव राखहिं नित हिया ।।
जनक पाट महिषी जगजानी । कही सखिन सो मुदित वखानी
दो०-उमा रमा शारद सबहिं, कपट नारि शुभ रूप ।
सियहिं सँवारन सब लगीं, करि श्रृंगार अनूप ।।
नखशिख सीताहिं सुभग सिंगारी । चली लिवाय मनोहरनारी
कोमल कलित पाँवड़े परहीं । अरघदीन्ह द्विज शान्तिहिपढ़हीं
मण्डप तर अब चलहिं कुमारी । संग सखिन सब साजु सवाँरी
सुनत सखी लै सिय तहँ गमनी । मंगलगीत गाय गजगवनी ।
चलै चारुचामर चहुँ ओरा । छजत छत्र छवि छैक्षिति छोरा
बोलहिं सखी नकीव सुखारी । जय जय जय मिथिलेशकुमारी
पानदान आदिक सब साजा । संयुत सोहत सखी समाजा ।।
सहितभगिनिसखिमण्डलमाहीं।शोहत सियछवि कहिनहिजाही
मन्द मन्द पग धरति जानकी । छवि सिंगार रसरूप खानकी ।

मनहुँ मशालन मण्डल भासी। दीपहिं चारि महताव प्रकासी।
भूषित भूपण अंग सुदेशा। चमचमात साड़ी वर वेषा ।।
खौरी सुभग शीशमहँ राजै। स्वर्णतन्तु मणि खचित सुभ्राजै
मौरिजटिलमोतिनतिनकेगुच्छा।झमककुण्डलढिंगहिनथ गुच्छा
सिय शोभा को कहै बखानी। अमित त्रिदेवी अंश समानी ।।
वनितन बीचि सोह अस सीता। नखत वींच जनु चन्द्र पुनीता
मैथिल नारि सहित सुर देवी। करहिं गान मंगल सिय सेवी।।
दो०-सोहति बनिता बृन्द महँ, सहज सुहावन सिय।
छवि ललना गनमध्य जनु सुखमा अति कमनिय ।।
आवत दीखि वरातिन्ह सीता। रूप रासि सब भाँति पुनीता।
सबहिं मनहिं मन किए प्रनामा। देखि राम भये पूरन कामा।
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता। कहि न जाइ उर आनँद जेता।
मुनि त्रिदेव सबसुर दिगपाला। सहित समाज छके सुखजाला
जय जय धुनि सब करहिं सुहाई। जहँ तहँ नारिन्ह मंगल गाई।
आंगन गगन वहिर पुरमाही। होत कोलाहल सब थल पाही।
पंच शब्द धुनि जहँ तहँ छाई। कहि न जाय सुनतहि मनभाई।
पुनि कुल गुरु शुभआयसुमानी।सियहिंसुआसन दियसुखसानी
कुवरिन पीछे बैठ बिदेहू। सहित अनुज कुशकेतु सनेहू ।।
दो०-निजकुल केरि रीति सब, कहत सूर्य सुखमान।
सुनि कुल गुरु दोऊ करहिं, ब्याह सुवेद विधान ।।

॥ देव पूजन ॥

विधि कराये पढ़ि मन्त्र अचारा। गिरिजा गनपपुजावहिंवारा

सब सुर लेहि प्रगटि प्रियपूजा । आपन भाग गिनै नहि दूजा ।
सनमुख रामहिं जनक सकासी । शोभित सिय बैठीं सुखरासी।
अधोनेत्र निरखनि सियरामा । प्रेम पागि इकराम अकामा ।।
तरकिन जाय सुखद रसरीती । मन बुधि वानी पार अतीती ।
बेद रूप धरि कहबिधि ब्याहा । उपरोहित तस करै उछाहा ।
लगेउ होम होवन हरषाई । आहुति लेहि अगिनि प्रगटाई ।।

।। श्रीसुनैना अम्बाजी को आना ।।

कन्या दान समय शुभ जानी । आवन कहेउ मुनिन पटरानीं ।
जनकपाट महिषी सिय माता । जेहि समान नहि रचाबिधाता
सिय मातु सोभित एक जग, सुख सुजस सुन्दरता सती ।
गुण रूप शीलहु धामधनि, पाहुन मिलीजस जगमनी ।
सिय अंक खोलि अम्बकहि, लखि लाभ ललचहिं सुरतिया ।
मुनिराज आयेसु कहि कुँअर, मंडप चलन हर्षण हिया ।।
मनमोद मोदित अम्ब सुनि मंडपहि सुआसिन सहचली ।
शुभ शब्द नूपुर गान प्रिय श्रुति शान्ति धुनि होवति भली ।
नृप बाम दिसि राजी निरखि,वर मन मुदित नहि जा कही
लखि मातु भागहिं पुष्प झरि सब सुरन बोले जय सही ।।
जनक सुनैना सोह हिमगिरि मैना सोह जस ।
वर दुलहिन लखि मोद, बढ़यो महावात्सल्य रस ।
दो०-पुनि वशिष्ठ आयसु भई, राम दहिन दिशि सीय ।
बैठहिं आसन सुभग सुची,सुनतहिं तससखि कीय ।

दुलह दहिनिदिश राजतिसीया। छबि शृंगार सुखमा कमनीया
देखत राम जानकी जोरी। नयनवंत सुख सिन्धु हिलोरी ॥
जनक तवहि मुनि आयसु पाई। कनक थार अतिशुभ्र मगाई।
सुचि सुगन्ध मिश्रित जलपूरा। स्वर्णकलश जड़ित रतननपूरा
धरे राम के सनमुख लाये। भूप मुदित मन सुख न समाये ॥
आनंद सिन्धु मगन निमिराऊ। लगे पखारन पायँ प्रभाऊ ॥
परस करत पद कमल राम के। साने सुख श्यामल सुधामके।
रामसिया पदकंज पखारत। जिनहिं शम्भु हृदि कमलसम्हारत

दो०-पद धोवत सुर जय जयति, बोलत झरन प्रसून।
मुदित निशान बजावत, छनछन नवसुख दून ॥

दम्पति जनक पखारि सुपादा। पायो हृदय अमित अहलादा।
सुख मग्न देव समाज सब, लखि लखि हृदय पुलकावहीं।
धनि नृप पखारत पाद पंकज भाव भावित भावहीं ॥
शिव ध्यान ध्यावत जाहि निशि दिन रमतयोगी मन जहाँ।
रज धारि पावन मुनितिया, मन मुदित गवनी पति पहाँ ॥
जेहि चरण सुरसरि वारि सुचि, करपूत त्रिभुवन प्रतिघरी।
प्रक्षालिते पद भूप निमिवर गति लही पावन करी ॥
जय जय जयति जय जय जनक सब बोलि कहहीं बलि बली
धनि राम जाकर पाहुने हैं मिलयो सिय पुत्री भली ॥

सो०-मुदित पखारत पाद, रघुकुल मणिवर वेष को।
जनक हृदय अहलाद, देखत युगल किशोर कहँ।

दम्पति जनक पखारि सुपादा। पायो हृदय अमित अह्लादा।
बहुरि लोक कुल रीतिहिं धारी। पाद पखारत निमि नरनारी
जनक कह्यो मम सब परिवारा। चरण पखारि लेय सुखसारा
तब भाँवरी आदि विधि होई। ये दुर्लभ पै है पद कहँ कोई।।
जनक वचन सुनि सब हरषाने। चरण पखारन को उमगाने।
धोये चरण मुदित कुशकेतू। चरन पखारत निमि सुख लेतू।
जनक भ्रात सह नारि ललामा। धोये पद सनिसुखसियरामा।
जनक सुवन लक्ष्मीनिधि आये। सिद्धि कुंअरि सहअतिहिंसुहाये
दम्पति बैठि हरष हिय छाई। भगिनि भाम पद धोवेंसुहाई।
लक्ष्मीनिधि ने पाय पखारे। लहे मोद जब युगल निहारे।।
दो०-निमिकुल के सब बृद्धजन, आये सहनिज नारी।
भये परमपद योग्य सब, रघुवर चरण पखारि।।
जे सुरमुनि को रूप धरि, बैठे रहे समाज।
चरण पखारे ते सवन, निमि वंशिन के व्याज।।
फिर सब जनक कुटुम्बिन आये। प्रक्षाले श्रीपद सुख पाये।।
भूमि सुवन मंगल मतिवाना। चरण पखारि महामुद माना।
कुल गुरु दोउ समय शुभ जानी। शाखोच्चार कीन्ह सुखदानी
वर दुलहिन करतल करजोरी। कीन्ह क्रियाकुल गुरुन्हबिभोरी

।। शाखोच्चार: वर पक्षे ।।

गुरु पद पदुमा पराग बंदि, गणनाथ मनावौं।
शेष शारदा बंदि, शंभु पद शीश नवावौं।।

दिव्य सच्चिदानन्द राम जेहि कुल महँ प्रगटेउ ।
नव दूलह वर वेष धारि एहि मंडप हुलसेउ ।।
वंश बखान सुजान बृन्द, सन आज सुनावौं ।
सिय दुलह की कृपाकोर मति निर्मल पावौं ।।
प्रथम विष्णु के नाभि कंज प्रगटेउ चतुरानन ।
तिनते भये मरीचि ताहि सुत कश्यप तप धन ।।
विवस्वान महराज ताहि सुत मनु भये सुन्दर ।
श्रीइक्ष्वाकु प्रसिद्ध ताहि सुत भये तदन्तर ।।
श्री विकुक्षि ते वाण ताहि अनरण्य महावल ।
श्रीपृथु पुत्र त्रिशंकु ताहि सुत धुन्धमार बल ।।
युवनाश्वात्मज मान्धाता सुत सन्धि विमलयश ।
श्रीध्रुव सन्धि भरतसुत असित सगर असमंजस ।।
अंशुमान सुत श्रीदिलीप सुत भए भगीरथ ।
श्री ककुत्स्थ सुत श्रीरघुसुत कलमाष पादवर ।।
श्रीशंखन के भये सुदर्शन अग्निवर्ण तेहि ।
शीघ्रग केमरू भये प्रभुश्रुक अम्बरीष जेहि ।।
श्रीमत नहुष ययाति नाभाग समुज्वल ।
श्रीअजके भये महाभाग दशरथ कुल कुण्डल ।।

।। कवित्त ।।

तिनके सुखधाम अभिराम लोक लोचन के,
शंभु हिय मानस मराल गुनखान हैं ।

सच्चिदानन्द घन शील निधि कोमल चित,
प्रेमवश प्यारे उदार असमान हैं।
ब्याह साज साजे मध्य मण्डप बिराजे,
काम देखि लाजे साजे भौंह के कमान हैं॥
श्रीराम भरत, लखन शत्रुहन लाल,
सुख के देवैया चारो नौशे जन प्रान हैं।

स्वस्ति श्रीमत्सकल जगदघध्वंसन परमोदार विनोद विचार सदाचार सच्छास्त्राध्ययन विद्वज्जन गोष्ठी प्रकाश वशिष्ठ गोत्र वाशिष्ठैक प्रवर श्रीमन्नाभागवर्मण: प्रपौत्र: १, श्रीमदअजवर्मण: पौत्र: २, श्रीमदशरथवर्मण: पुत्र: ३,प्रयत-पाणि: शरणं प्रपद्ये । स्वस्ति सुवासो भूषयोर्वरकन्ययोर्मंगल मास्ताम् । इति वर पक्षे वारत्रयं पठेत् ॥

॥ शाखोच्चार: कन्या पक्षे: ॥

श्रीगुरु मूरति हृदय धारि गणपति सिरनावौं।
गिरिजा शंभु प्रसाद पाइ निमिकुल गुन गावौं॥
जेहि कुलमहँ श्रीपराशक्ति मिथिलेश ललीजू।
प्रगटी करुणाधाम भगत हित कमल कलीजू॥
निमिसुत श्रीमिथिराज ताहि सुत प्रथम जनकजू।
ऊदावसु महाराज नन्दिवर्धन सुकेतु जू॥
देवरात सुत भये बृहद्रथ महावीर पुनि।
श्रीसुधृति सुत धृष्ट केतु हर्यश्व तासु सुनि॥

श्रीमरू पुत्र प्रतीन्धक तेहि सुत भये कीर्तिरथ ।
देवमीढ़ महाराज विबुध सुत भये महीध्रक ॥
दो०-कीर्तिरात सुत भये महारोमा यशध्वज ।
स्वर्णरोम सुत ह्रस्वरोम के भये सिरध्वज ॥

॥ कवित्त ॥

ताहि की लड़ैती सुकुमारी शोभाशील खानि,
जाको मुखचन्द्र देखि चन्द्रहूँ लजात हैं ।
रूप की उजारी देखि दामिनीहूँ फीकी परै,
भूषन अनेक अनमोल सोहैं गात हैं ॥
उमा रमा शारदा न उपमा में आवै नेकु,
रतिसत कोटिहूँ को कहै कौन वात है ।
जानकी माण्डवी, उर्मिला, श्रुति कीरति जू,
चारो दुलहिन आज अतिहीं सुहात हैं ॥

स्वस्ति श्रीमत्सदाचारा चरण परिलब्ध गरिष्ठादि मुनिगण जे गीयमान यशश्शरच्चन्द्रकर धवलीकृत जगत्त्रयस्य गौतम गोत्रस्य गौतमाङ्गिरसाण्यायेति त्रिप्रवरस्य श्रीमत्स्वर्ण रोमवर्मणः प्रपौत्रीं १, श्रीमत् ह्रस्वरोमवर्मणः पौत्रीं २, श्रीमत् शीरध्वज वर्मणः पुत्रीं ३, प्रयतपाणिः शरणँ प्रपद्ये स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वर कन्यपयोर्मंगलमास्ताम् । इतिकन्या पक्षे वारत्रयं पठेत ॥

॥ पाणिग्रहण कन्यादान ॥

इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव ।
प्रतीच्छ चैनां भद्रं ते पाणि गृह्णीष्व पाणिनाँ ॥
दो०-धर्मचरी तुव सहचरी, सदा संचरी संग ।
छायासी माया विगत, दायामय सब अंग ।
मेरे पंकज पाणि में, पंकज पाणि लगाय ।
लेहुलाल अवधेश के,लली मोरि चितचाय ।
बोले जनक सुनहु रघुनाथा । पूरण काम सुखप्रद साथा ॥
गुण आगरी प्राण प्रिय वाला । रुप उजागरि धर्म विशाला ॥
शील विनय संकोच स्वरूपा । सब प्रकार तुम्हरे अनुरूपा ॥
सब विधि अहै अलंकृत कीन्ही । ग्रहन करहु मैं आयसु दीन्ही।
दो०-अस कहि दम्पति हरषि उर,सीतहि हाथ बढ़ाय ।
रामहिं सौपेउ मंत्र पढ़ि तन मन गयो भुलाय ॥
पढ़ि सुमन्त्र यहि भाँति ते, छोड़ि दियो जलधार ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, माच्यो जय जयकार ॥
ध्रुवपुर लों अरु भूमि भरि, भूतल में इकवार ।
वाजन बाजे विविध विधि, भो सुख पारावार ॥
एकवार बोले सकल, जय जय दशरथ लाल ।
जय जय जनकलली भली, हम सब भये निहाल ॥

॥ हवन विधि ॥

समिधि मगाय समय कहदीनी । वेदी द्विजन प्रज्वलित कीनी ।
सोधि द्रव्य साकिल्य बनावा । रघुकुल मनि सौं हवन करावा

दो०-चतुरासीनि सुआहुतैं, दईं राम निज पानि।
मंत्रन जुत तन धरि अनल, लई भाग्य बड़मानि ॥
करि श्रुति रीति होमशुचि कियऊ। बरदुलहिन गठबंधनभयऊ
भावरि होन लगी हरषाई। प्रमुदित सुरन निसान बजाई ॥
वरषहिं पुष्प देव हरषाई। मंडप मंगल गीतहिं गाई ॥
विप्र वेद वहु विरदहिं बन्दी। कहहिंजयति जय सबहिं अनंदी
दो०-मुनि आयसु लक्ष्मीनिधी, कुँवर सिय भ्राता मतिवानि।
लाजा परसत हरषि हिय, भाम भगिनि के पानि ॥
धर्मधीर लक्ष्मीनिधि आये। उत्तम धान सूप महँ ल्याये ॥
सो सिय राघव के कर राखी। परन लगी भाँवर जिमि भाषी
आगे सिय रघुनन्दन पाछै। देहि सुअगिनि प्रदक्षिण आछै ॥
दंपति रूप मनोहर राजै। नहिं तिहुँपुर उपमा तिन काजै ॥
मनिखंभन प्रतिविम्ब दिखाई। तासु तर्कना इकचित आई ॥
धरै विपुल तनरति रति नाहू। अवलोकत रघुराज विवाहू ॥
दरश लोभ इत सकुचव होई। प्रगटत लीन होत जनु सोई ॥
भयो समाज सकल अनिमेषी। भये मगन जिन वह छवि देखी
छ०-युग सखी सिय के संग की, अस कहहिं हँसि हँसि कै तहाँ
धीरे चलहु कछु लाल है सुकुमारि जनकलली महाँ ॥
सुनि दुलह नयन नवाय रहत लजाय मृदुमुसक्याय कै।
अरविन्द पूरणचन्द देखत रहत ज्यों सकुचाय कै ॥
जबलोपरी त्रय भाँवरी तबलो सिया आगे चली।
पुनि चारि भाँवरि देतमें भे दुलह आगे छविभली।

जब रही सिय पुरसर चलत तब अस भली सोहत रही।
जनु जात आगे भान के सित भानु पूरणिमा लही ।।
जब भये दशरथ कुंवर आगे चलत जनक कुमारी के।
तब लसत मानहुँ चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारि के ।।
सिय दुलह भांवरि अग्नि की दोउ देत प्रमुदित मोहहीं।
सिय पानि नीचे दुलह कर आगे चलति सिय सोहहीं ।।
परसत सुलाजा प्रेमयुत तन मन दशा सब खो गई।
श्रीनिधिहुँ सिया दूलह लखी अनुपम छटा आनँद मई ।।
वहु देव वरसत सुमन सुख मन मुदित वाद्य वजावहीं।
मन मोह त्रिभुवन राम सिय सेहरा सिरन झमकावही।।
घनबीच दामिनि दिव्य जनु बनरा वनी लखि लखि परै।
सिरमौर मौरी सोह सुठि युग चमक विद्युत लज मरै ।।
सिया भूषण प्रतिबिम्बयों तन महँ लसत अतिलाल के।
जनु नखत आदित चन्द्र छाया मधि खसै जल श्याम के ।।
प्रभु पानि शोभित सिय सहित मरकत मनहु कंचन कसे।
जनु गौर लागत राम सिय साँवर लसे प्रतिबिम्ब से ।।
यहि भांति सप्त पदी कराये कुमार गौतम को सुखी।
वेदी निकट ठाढो करायो राम सीता शशि मुखी ।।
लाजा परसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करन सों।
कीन्ह्यो निछावर सकल जनु वर वधू रतना भरनसों ।।
भाँवरि भयो आनन्द अपारा। भाग विदेह कहै को पारा ।।
गुरु वशिष्ठ तब कही सुवानी। कुँवर नेग पावै सुखदानी ।।

दशरथ सहित प्यार प्रभुकीना । दियो मणिमाला प्रेम प्रवीना।
राम बाम दिसि आसन एका । बैठहिं सिया बिलम्बन नेका ।।
सखिन सुनत शुचि सिया उठाई । दूलह बाम दीन्ह पधराई ।।
लखिलखिदेवसुमनबहुबरषहिं। वजत निसान मनहिमनहरषहिं
पुनि वशिष्ठ अनुसासन पाई । भये जथाथित आसन आई ।।

॥ प्रतीज्ञा वर दुहिन के ॥

सात वार सिय वांछित दीने । सिय पै पाँच बचन प्रभु लीने ।
गुरु निदेश लै पानि सिंदूरा । सिय सिर दीन्हे रघुवर पूरा ।।
सिय सीमंत सिन्दुर लगायो । कमलकरन सो लगेउ सुहायौ ।।
मनहुँ जलज निज अरुण परागा । देत सुससिहिं सुधा अनुरागा
बहुरि सुआसिनिसेंदुर दीन्हा । चिरअहिवात मनहुकरिचीन्हा
सह त्रिदेव सब सुर की वामा । मंगल आशिष देहि अकामा ।।
अक्षत पुष्प हाथ निज लीन्हा । सुरनर मुनि समाज सुखभीना
मंगल पढ़हि सनेह सम्भारी । जयति राम जय सिय सुकुमारी।
पुष्प बरषि सब भरे उमाहा । कह त्रिवाच भो राम विवाहा

दो०-यहि विधि सीताराम को, श्रुति विधि भयो विवाह ।
देखि देखि सब सुख मगन, साने महा उछाह ।।

छं०-बैठे वरासन रामु जानकि मुदित मन दशरथ भए ।
तन पुलक पुनिपुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फलनए ।
भरि भुवन रहा उछाहु, राम विवाहुभा सवही कहा ।
केहि भाँति वरनि सिरात रसना एकयहु मंगलु महा ।।

।। तीनों भाइयो का विवाह ।।

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै ।
मांडवी श्रुति कीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै ।।
भरतचन्द्र आवहु यहि ठौरा । पूरहु लाल मनोरथ मोरा ।।
शतानन्द जब आयसु दीन्हा । शुदर्शना बोलि तब लीन्हा ।।
दो०-बैठायो कुशकेतु को, गाँठि जोरि प्रिय सदासना नारि ।
लियो अंक सो मांडवी, तिमि संकल्प उचारि ।।
दई भरत मांडवी कुमारी । जनक अनुज कुशकेतु सुखारी ।।
पुनि बाजे बाजे नभ माही । वर्षे फूल देव हरषाहीं ।।
पानि ग्रहण करि मांडवी केरो । बैठयो भरत सकुचि प्रभुनेरो।
मातु सुभद्रा बैठी आई । गठवंधन मुनि तुरत कराई ।।
दो०-लखनलाल आपहु इते, सनमुख बैठहु आय ।
करहु उर्मिला कन्यका, पाणिग्रहण हर्षाय ।।
पुनि विदेह के वचन सुहाये । लखन लाज वश नयन नवाये ।।
दीन्हयो सैनहिं सासन रामा । बैठयो लखन जायतिहि ठामा ।।
तहँ उर्मिला अंक बैठाई । लै कुश अक्षत निमि कुलराई ।।
पढ़ि कै मंत्र सुता करकंजू । धरि लक्ष्मण कर पंकज मंजू ।।
कान्तीमती कर जल ढरवाई । दई लखन उर्मिला सुहाई ।।
तिहि अवसर वाजे पुनि बाजे । वरसहिं सुमन देव जय गाजे ।
यहि विधि पाणिग्रहन कराई । बैठे लखन उर्मिला सुहाई ।।
बहुरि बचन मिथिलेश उचारा । अब बारी रिपुदवन तुम्हारा
पाणिग्रहण श्रुति कीरति केरो । करहु मुहूरत मुनिन निबेरो ।

सकुचि शत्रुहन प्रभु रुख पाई। बैठे कुशध्वज सन्मुख आई ॥
पढ़ि सुमन्त्र संकल्प समेतू। दिय श्रुति कीरति कहँ कुशकेतू ॥
श्रुति कीरति रिपुदवन लजाई। बैठे निज आसन पै आई ॥
बजे मधुर बहु भाँति नगारे। मंगल गान उमंग अपारे ॥
दो०-यहि बिधि चारिहुँ दुलह को, चारिहुँ बधुन सुहाय।
पाणिग्रहण कराय करि, प्रमुदित निमिकुल राय ॥
जेहि विधि सिय रघुवीर केर,सुखद भयो शुभब्याह।
सकल कुमारन ब्याहे तिमि, कीन्हे अति उत्साह ॥
यहि विधि चारिहु दुलह को, चारि हुवधुन सुहाय।
पानि ग्रहन कराय करि, प्रमुदित निमि कुलराय ॥
जेहि भाँति रघुपति भाँवरी लाजा परोसनहुँ भयो।
तेहि भाँति तीनहूँ बन्धु भाँवरि चार विधिवत ह्वै गयो
छ०-निज दिव्य दूलह संग शुचि दुलहिन सुमंडप राजहीं।
जनु ब्रह्म चार स्वरुप बनावनि शक्ति सहसुख भ्राजहीं।
लखि देव चौगुन रंगरस भरि प्रेम दुन्दुभि बहु हनीं।
सुर बृक्ष फूलन बृष्टि करि, आनन्द जयतिवना वनीं।

॥ राजाओं की कन्याओं का कन्यादान ॥

दो०-दस सहस्र नृप प्रथम जे, भये विगत अभिमान।
तिन आपनि आपनि सुता, अरपि प्रभू कहँ आन।
विनय करी भो राम विलासी। कीजहु इनहु सिया की दासी।
कृपा दृष्टि प्रभु सब तन जोये। करे असंख्यन प्रेम समाये ॥
चारहु दूलह मंडप राजैं। को वरणै सुख आनँद आजैं ॥

आरतिकरहिं निछावरि करहीं। आनन्द उमगिउमगिउरभरहीं
गुरु निदेश ध्रुव दरसन लीना। बहुरि हृदय अवलोकन कीना
बारहु दूलह दुलहिन देखी। सब समाज सुख लहेउ विशेषी।।
दशरथ सुख को वरनिन जाहीं कह सियराम मोदमन माहीं।।
सुतसुत वधू निहारिन हारी। तुच्छ गिनै सब सुख फलचारी।
दाइज दीन्हो जनक बहूता। को कवि कहै नहीं कहिजाता
पुनि वर वधू विभूषण नाना। जटित सूर्य शशिमानी प्रधाना।
अमित निचोलअमौललला‌मा। दियोजनकसुख भरितिहिठामा
पारिजात पुहुपन की माला। पहिराई मिथिला महिपाला।।
वस्त्र विभूषण विविध प्रकारा। मनि सुवरण नवरत्न अपारा
हयगय स्पन्दन दास सुदासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी।।
देख सुरेसहिं लागत लाजा। पायो दाइज दसरथ राजा।।
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी।।
पूजन कियो वर वधुन समेतू। षोडष विधि नृपनिमि कुलकेतू
साधु साधु मुनि देव बखाने। दानि शिरोमणि जनकहिं जाने
दो०-दीन्ह जाचकन हरषि हिय, नृप दशरथ बहु दान।
उबरा सब जनवासहिं गयो, देवहुँ हने निशान।।
जनक मुदित मन मुनि सब केरी। कीन्ही पूजा विविध सुखेरी
दान मान विनती सुखसानी। किये सरस हिय होय अमानी।।
सकलवरातहि नृपसतकारयो। भक्तिविविधतनभूति बिसारयो
पुष्पान्जलि करि सुरन्ह प्रणामा। कियेजनकवर विनयललामा
अवसर जानि सहितनिज भ्राता। उठयोविदेह विनोदनाघाता

कौशलपति को पूजन कीन्हयो । हयगय वसन विभूषणदीन्ह्यो
स्पन्दन शिविका सजे अनेका । भाजनविविध भाँति सविवेका
देयहु अंगन अतर लगायो । मोद मूल तांबूल खवायो ।।
दियो अँगूठी रत्न प्रधाना । बहुरि विनय वस बचन बखाना
तब सम्बन्ध जो भयो नृपाला । मारे भाग बढ़ गई विशाला ।।
भयो महान आपके नाते । सबविधि गिनिये मोहिं निजताते।
दो०-राजभूति परिवार गृह, सेवक सुत तब नाथ ।
मोहिं मानि आपन सदा, करहु छोह पद माथ ।।
वोलयो पुनि विदेह करजोरी । परिचारिका दारिका मोरी ।।
भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं । तजि खेलन ज़ानैकछु नाहीं ।
समय सम्हारव क्षमि अपराधा । अवलो लहींन कौनिहुँ बाधा
इतते उतसुख विभव महाना । पैशिशु भाव कछू नहीं ज्ञाना ।
राजरीति सब दिहहु सिखाई । करै न कछु विन शासनपाई ।
रहीं कुमारी प्राण पियारी । भई सकल सुत वधू तिहारी ।।
चारहु कुँअरि यथा तब प्राणा । मानहिं लरकिन्ह तथा समाना
करुना करन योग ये वाला । नयन पुतरि समवली भुवाला ।।
मोर मान इनकर कुशलाई । बहुत कहाँ लगि कहौं बुझाई ।।
पुत्रवधू पुनि आपु कुमारी । को इनते अब मोहिं पियारी ।।
जिमिमिथिलातिमिअवधअगारा।जानहु सबविधिसुखउपचारा
नयन पूतरी सरिस कुमारी । बसिहैं सदन सदा सुखारी ।।
भयो कष्ट आवत यहि देशा । बोलि पठायेऊ सुनहुँ नरेशा ।।
सो अपराध क्षमहि हिय हेरा । जानहु सदामोहि निजचेरा ।।

देखि जनक वर विनय सुप्रीति । बोले दशरथ बचन सप्रीति ।।
आत्म सखा मोरे नर नाहा । रहे सदा रहिहैं चष चाहा ।।
भाव विनय रस दोउ नृपछाके । कहैं परस्पर सुखमन साके ।।
दो०-यह शुभ तब सम्बन्ध ते, भये हमहुँ धनि रूप ।
पुत्र कीर्ति, जय, भूति भली, लाधे ललित अनूप ।।
राजन देहु रजाय अब, जनवासे कहँ जाऊँ ।
निशा अशन कुँवरन सहित, करन हेतुचलिजाऊँ ।

।। चक्रवर्ती को जाना ।।

कही विदेह आप पगु धारे । बाकी कछुक विधि व्यवहारे ।।
चार कराय सुतन पठवै हौं । अब नहिं कछुक विलंब लौहौं ।
बालक नींद दिवस अलसाने । किमिकरिहौं विलंब जियजाने ।
शुन मिथिलेशहिं बारहिं बारा । करिप्रणाम मुनिजनन उदार।
पुनि नृप चले मुदित जनबासा । वरनत जनकप्रीति सहुलासा
विश्वामित्र वसिष्ठ समेतू । चलयो भूप जनवास निकेतू ।।
विविध भाँति पुनि वजै नगारा । भये सयंदन सब असवारा ।।
भयो सुमंत सहित तिहिकाला । चली संग चतुरंग विशाला ।।
इत भूपति जनवासे आयो । शतानन्द उतवचन सुनायो ।।
मंडप महँ सब रानी आई । कुवँरि कुंवर चुमाइ सुख पाई ।।
गावन लागि सखिन विधिनाना । परमानन्दन जाय बखाना ।

।। कोहवर परिकरण ।।

बोली तहाँ सुनैना रानी । बोली सखीजन सुखी सयानी ।।
लै दुलहिन दूलह कहँजावो । हिलिमिलि कोहवर चारकरावो

सुनि उमगान्यो अनुरागा । सखिन संग जुरि कै बड़भागा ॥
गावहिं गीत मोद रससानी । दुलहन सो असगिरा बखानी ॥
चलहु लाल कोहवर सुखदाई । चारहु बंधु उठे मुसक्याई ॥
आगे आगे चलीं सुवासिनि । अर्घ्य देत हिय माँह हुलासानी ।
तहाँ लक्ष्मीनिधि की नारी । सिद्धी नाम तुरत पगुधारी ॥
राम पाणि गहि चली लिवाई । जोरे गांठी चारिहु भाई ॥
दो०-पुनि पुनि रामहि चितव सिय, सकुचति मनु सकुचैन ।
हरत मनोहर मीन छवि, प्रेम पियासे नैन ॥
आगे दूलह दुलहिनि पीछे । उभय और सब सखी तिरीछे ॥
सिय सह कोहवर चली लिवाई । तैसे अलग अलग सब भाई ।
जनकनगर की सखी सयानी । बोलहि व्यंग भरी बहुबानी ॥
चलहुँ कुवँर कछु धीरे धीरे । सुनियत घरके अहो अमीरे ॥
दो०-शोभा अमित न जाय कहि, सुघर दुलह वरवेष ।
नेति नेति कहि सब लखहिं, हारे शारद शेष ॥
स्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन
जावक जुत पदकमल सुहाए । मुनिमन मधुप रहत जिन्हछाए
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रबि दामिनि जोती ।
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु विसाल विभूषनसुन्दर ।
पीत जनेउ महाछवि देई । करमुद्रिका चोरि चित लेई ॥
सोहत व्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ॥
पिअर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनिमोती ।

नयन कमल कल कुण्डल काना। वदन सकल सौंदर्ज निधाना
सुँदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥
छ०-गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुन्दरी वरहिं विलोकि सबतिन तोरहीं
सुन्दर दुलह चारी सलोना अपार श्रृंगार मनोर उजेरो।
श्यामल किशोरलला सबको चित चोरहि नैन निहारो ॥
ये निज रुप प्रकाशहित चारो दुलह मण्डप कीन्ह उजीयारो।
ताह पै दुलह भेष सजे मनमोहन मुरति है वर चारो ॥

॥ कवित्त ॥

श्याम गौर जोरी अनुप लसै मण्डप तर,
निज तन प्रभा से करत उजियारी है।
चहुदिशि चन्द्रमुखी ठाढि अनुराग भरी,
करि के चुमावन घर कोहवर तयारी है।
आरती उतारति पर भुषण मणि वारि बहु,
चलन केहेत सखि पाँवड़ेहु डारी है।
यहि छवि सदा मेरे नयनो में छाय रहो,
रघुनन्दन प्यारी जनक की दुलारी है।
द्वार के छेकाई नेगचार भली विधि करै,
आप किछु कहैं किछु लाल से कहावहीं।
देइ गारी सब नवला निहाल होत,
नवल वचन व्यंग सुनि सुख पावहीं ॥

जैसो सुख सरसत कोहबर की दुआरी,
कैसे को बखानै कोई बानीमें न आवहीं।

दो०-कोहबर में दूलह सहित, चले कुँवर बर चार।
हास विलासहिं करन हित, सखियन रोकी द्वार।
एक सखी पिय के भुजहिं,गाहे तिरछे करि नैन।
बोली मृदु मुसकाय के, परम रसीले बैन ॥

॥ श्रीलालजू बचन ॥

प्राण प्रिया मोहि जाने दो भीतर,
बाट क्यों रोकत योवन माती।
मुसकाइ लुभाय लियो मन को,
सब यारन के जियरा तरसाती ॥
उठाय के घूंघूट घेर में घूमत,
नैन के सैन से मैंन जगावती।
काह फिरौ इठलात प्रिया तुम,
जाय लगो कोइ और के छाती ॥

॥ सखी बचन ॥

ठाढ़ रहौ अब लाल यहाँ पै, नहि बल चले तिहारो।
देहु नेग जो रीति यहाँ की, तब कोहबर पगु धारो ॥
यहां नहीं कोउ अहै ताड़का, सहजहिं मारि गिरायो।
नही ऋषि नारी पग छुवाई, जेहि डारयो कहाँ पठायो।
नहिं इत अबला चाप लेकर के,झपटि कियो दुइ खण्डा।
यहाँ नारि मिथिला के प्यारे, सकल चपल है सण्डा ॥

हर्ष सहित मम नेग दीजिये सुजश लीजिए भारी।
मनमोहनजू सुनहु साँवरों, कोहबर जाहु करारी ।।
जबहिं सखी अस बचन सुनाई। बोले लखनलाल मुसकाई ।।

।। श्रीलखन लालजू ।।

का तुम चाहत नेग सखी सब, नेकहुँ जो हमहूँ सुनि पैहौं।
जो न बनै उनसों कछु नेगु,सो मैं तुमको सबही भरि दैहो।
बाहु पै पूरी परै नहिं जौ तौ तुरंत खवरि जनवास पठैहौं।
है रघुवंश कुमार घनो 'वसुनायक' मैं तब हेतु बुलैहौं ।।
लखनलाल की सुनि असबानी। कही सखी एक चतुर सयानी

।। सखी वचन ।।

लाल बोलते बचन आप कस, सुधा समान रसीले।
देखन में लागत अति सूधो हो छटि छयल छबीले ।।
हम तो मांगत नेग आपनो तुम मुदरस गरवीले।
रघुनन्दन जु नेग दीजिए, प्यारे रसिक रंगीले ।।
असवानी भाषी सखि जबहीं। बोले भरतलाल हँसि तबहीं।

।। श्रीभरतलालजू वचन ।।

देन हेतु मोहि अवधपुरी सों, आपुहिं लियो बुलाई।
अब उल्टी माँगत हमही सों, सुनि अचरज उरछाई।
देन काम है प्यारी तुम्हारो, लेन हमारो कामा।
जोतुम दियो लियो हम सदासो, और करो कछुनामा।
भरत वचन सुनि के एकनारी। बोली बिहँसि बचन सुकुमारी

॥ सखी बचन ॥

सुनहु जगत के सार भरतजी, रस के बचन कहँ सीखे।
जानि परत है निज भगिनी ढिग जाय जाय रस चीखे॥
मिले मोहिं चितचोर आजु तुम कवन सहाय बुलैहौ।
यहाँ नहीं बल चले रावरे मारि गुलच्चम खैहौ॥
नेग चुकाय जाहु कोहबर में, सुनहु लाल सिख मोरी।
रघुनन्दन नहिं सको देइ तो, विनय करो सिय करजोरी॥
सुनत सखीन के बचन रसीले। बोले रिपुहन छैल छबीले॥

॥ रिपुहनलालजू ॥

नेगहिं लेन की चाह सखी अस, जोतुम्हरे चितमाहिं समाई
ले चलिये सँग चारों भाई को, लीजिये नेग सबै भरवाई।
जेहिं विधि सो सुख होय तुम्हें, करिहैं नितही हम सोइ उपाई।
द्वार तजो हठ छाड़ि के भामिनी, काही करावत प्यारी हँसाई
सो०-सुनि रिपुहन के वैन, भइ निहाल सुकुमारि सब।
बोले राजिव नैन, बचन अमिय रस बोरि जब॥

॥ श्रीराघवजू बचन ॥

विश्वामित्र मुनि ज्ञानी पिताजी से माँगि आनि,
संग में न हम कछु लाये हे सहेलिया।
देर होत जाने देहु बात मोरि मानि लेहु,
ठाढे ठाढे चरण पिराये हे सहेलिया।
दिल एक साथ लायो, प्यारी तुम लियो चुराय,
तिरछी नजर को चलाई हे सहेलिया॥

प्यारे की प्रिय मधुमय बानी । विना दान बिक गई सयानी ।।
रतन अमूल्य आज मै पाई । सहस नेग सम जाय न गाई ।।
तजौ द्वार अब सिया दुलारे । कोहबर चलो प्राण के प्यारे ।।
रउरे दरशन हित सब लागीं । आई सखीं भवन अनुरागीं ।।
रसिक राज रघुनन्दन प्यारे । रजनी भर सुख लेहु दुलारे ।।
करो मोहि चरनन की दासी । यहि अभिलाष रही उरखासी।

दो०-मणि जर तारिन की वनी, आसन मन अभिराम ।
तहँ तहँ बैठति भई कुअरी कुअर सुखधाम ।।

॥ कोहवर प्रवेस ॥

दो०-मँगलमय दुलहिन सिया, इलह मंगल रूप ।
मंगल कोहबर के भवन, प्रविसे परम अनूप ।

॥ कवित्त ॥

॥ कोहवर घर वर्णन ॥

मणिमय महल है विसाल सप्तावरण,
चित्रित बिचित्र बनो शोभा अधिकाई हैं ।
मध्य के भवन स्फटिक मणी की भीत,
वनेउ है चन्दोवा चन्द्र सूर्य हूँ लजाई है ।।
मूँगा अरु मोतिन की झब्बा लटकाय घने,
हीरन के झालर ललित लहराई है ।
सुन्दर झरोखा जाली रतन रचित बनी,
नवरंग मणिन कीं लटटू लटकाई है ।।

॥ पुरइन बाँस पुजाना ॥

रानी सकल समाज ते, सुआसिनी लै संग।
विधि व्यवहार करावहीं, गान सहित बहुरंग।
पुरइन बाँस पुजावहीं, दुलहा दुलहिन हाथ।
मातुशिवा पुजवाइ के, सबबिधि भई सनाथ ॥
नर नरायण पद कमल, करि प्रणाम सियराम।
ताहि भांति अनुजहु करी,दुलहिन सहित प्रणाम।
पृथक पृथक विधि सब करे, दुलहा दुलहि समेत।
मगन गान रनिवाँस सब, करते तालहिं देत ॥

आगे सिद्धि सखि सब पाछे। सुरतिय सम पर भूषण आछे ॥
वद्रीदेव पुजन करवाई। विप्र बधु सब चार कराई ॥
तहाँ कमला शशीकला पियारी। बोलि बचन भरी सुखारी ॥
हमरे कुलकर जो कछु चारा। हमकर वैहै सहित बिचारा ॥
ऐ अजान जानहि कछु नाही। कहँते आई यह घर माही ॥
असकहि दुलह दुलहिन ढिग आई। चार करावन लागी सुहाई

॥ देवि पूजन ॥

आये रघुवंशिन के देवा। तुम सो लाल करावन सेवा ॥
तिनको सिर नावहुँ सब भाई। इन्है देवी कौशल्या पठाई ॥
भरत विहँसि तब बचन बखाने। रंगदेव तजि देबन जाने ॥
जिनके घर देवन बहुताई। ज्ञान विराग योग अधिकाई ॥
ते सेवन देवन को जानै। देवन रीति भुवन महँ आनै ॥
कहै बचन पैहो नहि पारा। सखि कर वहुँ कोहवर चारा ॥

गाय गाय वर मंगल गाना । चार करायो सहित विधाना ।।
तहँ रनिबास हाँसरस माचा । सबही कर अतिशय मनराचा ।

।। देवी पूजन ।।

तब सिद्धा रघुवर ढिग आई । कहि मृदु वचन सनेह जनाई ।।
उठहु लाल सब अनुज समेता । चलहु देवि घर पूजन हेता ।।
चारो कुंवर उठे तत्काला । चले सकल जनु राज महाला ।।
कोई कोई भेद सकल यह जाने । विहँसति मदन भेद वखाने ।।
तिन कहँ नयन सैन समुझाई । सिद्धा गई लवाई रघुराई ।।
मूरति निकट गये जब रामा । कहि सिद्धा तुम करहु प्रणामा ।
राजकुअर हे मुनि मनहारी । यह देवी कुल पुज्य हमारी ।।
विनय उक्त तेई रीझे । नाहि करो तबहीं ई षीझे ।।
ताते शीघ्र नबावहु माथा । लेहु अशिस पुलकि रघुनाथा ।।
तुम्हेहु चित इहँवाँ के आये । द्वोथिथि मंगल इनहिं मनाये ।।
नाई रिझे जप तप कीन्हे । नाईं खुषी गान मन दीन्हे ।।

दो०-केवल कर जोरे द्रवति, इनकी सरल सुभाव ।
सर्वों विघ्न विनास कर, सब कामना पुराव ।।
बेगि पाय परू दीन है हँसि वोले रघुराय ।
क्रोध अनुग्रह किमिलषों बैठी बदन दुराय ।
कहि सरहज गृहि गोचरी, माया इनकी नाम ।
मुख सब कहनदेखावहीं द्रवति करत प्रणाम ।।
तुम अश्नान करी नही, छुवोनइन कहँ लाल ।
बरबस राम छुअत भये, हँसी सकल नव बाल ।।

कहि रघुनन्दन पद तरी हमरी लई चोराई ।
ताकहँ निज कहति, अनुचित कहिन डेराई ।।
तुम सबका हम कहँ ठगहु, नाना युक्ति लगाय ।
सकल कला हम जानहीं, दीन्ह बशिष्ठ पठाय ।।
सब सरह जहँ सती भई, लालन मुख निहार ।
ननदोई सरहज सहित करत अनेक बिहार ।।
पुनि आई निमि वंसिन की सुता,
सुहाई दूलह देखन नारि जुरि आई ।
आई सारि सरहज सम्बन्ध,
गारी देन बाँधी पर बन्धु ।।
फटिक पुतरि धरि दूलह चारो,
बचन रचन कहि अनुरागे ।
यह कौशलपुर केरी कुमारी,
मिथिला महँ आई सुकुमारी ।।
तुमहि देखी लाज बसन बोलती,
नहि आसए उरकी कछु खोलती ।
भगनि मनाय लिवाय जाहु घर,
करहु समीप चुक सांवर वर ।।

।। मुदरी विधि ।।

अनुशासन रनिवास पाइ के सखी सयानी ।
मणि जराव के थार बिमल कमला जलआनी ।।

रामलला के निकट चमेली सखि धरि दीन्हा ।
निरखि बदन छबि सिन्धु राम को अतिसुख लीन्हा ।।
युग वराटिका रतन की रानी सबहिं देखाइ के ।
कमला जल मणिथार में ताकहँ दई डुबाइ के ।।
बिधि रानी उच्चार करी सबही सुनाइ के ।
दुलहा दुलहिन वोर सब बिधि बुझाइ के ।।
सुनहु राय के सुअन सुनहु तुम राजदुलारी ।
जोत कपर्दिक जलते लैहि पहिले सोइ हरी ।।
ताते शीघ्र निकालहूँ कहि मंगल गावन लगी ।
जन्त्र अनेकन बाजही परानंद सुख जगमगी ।।
पार्वति कहि सुनहु लाल रघुलाल बिहारी ।
लेहु कपर्द्दिक अैंचि थारते विजय तुम्हारी ।।
रामकुँअर जब जनक थारमहँ कर दीन्हो हैं ।
सिय मुख शशि प्रतिबिब रत्नमें लषि लीन्हो हैं ।।
नहि चालत भुजको लला मनमें अतिआनंद भाई ।
सिय शारद के कहेते पिय करतर ते लै लई ।।
पहुँचि में श्रीराम लाल नवरत्न विराजे ।
ताहि मध्यमणि बृहद येक तहँ सिय छबि छाजे ।।
लखि पियरस बस हारिगे विजय भई श्रीजनकजा ।
सखियन हास बढ़ायऊ रामलाल तब गै लजा ।।
भरत लषन अरु शत्रुहन हारि गगे यहि रीति ।
श्रुति कीरति अरु मांडवी भई उर्मिला जीति ।।

सिद्धा लक्ष्मीनिधि प्रिया, रघुवर सों वर वयन।
बोली रौरे हारली, सिय सों राजिव नयन ।।
अब तो सब रस रीति में होइहि रौरे हार।
चेतक छबि इत कुँवरि सब, तुम आशक्त विहार।

॥ जुया खेल की विधि ॥

जो तुम्हरे कछु मन अभिमान। हमहि है बड़ चतुर सुजान ।।
खेलहु लाल जुआ यहि ठाऊ। जीते चतुर धरायो नाऊ ।।
दो०-असकहि रतन अनेक धरि, कनकथार भरि बीर।
लगी खेलावन विमला सखि,सियको अरु रघुवीर।

॥ सवैया ॥

मुसक्याय सुनैन नचाय तबैं कह सिद्धि कहै हँसि कै बतिया।
न जुया में लाल ललि से जीतन पैहौ लगाय रहे अपनिघतिया
सिय आजु न लाज को काज कछु छल छाजि छटे रघुराइपिया
मतो बातजई मिथिलापुरकी पछितात जई सिगरी रतिया ।।
सजनी कोउ सिद्धि की बोली तहाँ,
अब जनि हैं सत्य सखी सिगरी।
यदि हारि गये लला इतते,
रघुवंशिन बात सबै विगरी ।।
सति भे नहिं कौशलनाथ सुते,
यह विस्व में कीरतिहूँ बिगरी।
रघुराज के श्यामल गौरन की,
नहिं न्याय की नीति अवै निगरी ।।

दुलह त्यौं दुलहीन को जुआ सखि,
यान लै सिद्धि खेलावन लागी ।
लै मुक्तामणी मानिक हीरन,
पाणि उछालन लगी सुहागीन ।।
लागे होन यथा के खेल,
हसति परस्पर निजदाव सभार ।
हारे लला अब हारे लला,
अस भाषति देति तिया बहु तारी ।।
जीती हमारि लली रघुराज,
मगाओ द्रुतै अनुजा मुनि प्यारी ।
कही नागरी कोउ मिथिला की । करहु कला करिकलाचलाकी
आज लो हारेन तब रघुराज,
सोहारे गहौ सिय पायन पावन की ।
आतुरी चातुरी भुलि गई सब,
मोहनी रूप कीरति अनोकी ।।
रावरे को ठगिवो रह्यो आवत वाउरे को पहीचाना की ।
जानकी जानी इतीन सुजान लगे जुया खेलन की ।।
चंचलता न चली रघुराज करीलली सीछटा छल छकी ।
पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसी बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी ।
लेहुँ काह मुदलालन लहकौरी । करहुकुँवर करकेली सकरौरी
मिश्रीयुत दधि देहु खवई । कुवरि खवैहैं पुनि बरियाई ।।
कहैं सिद्धि पुनि गहि पट छोरी लालन कहँ मनभाई ।
रामहि लगी सिखावन गौरी, देखहि सियहि खवाई ।।

लाड़नि तनिक दिखाय संकोचहि लीन्ही निज गुठानाई।
देखत दशा हँसि दै तारी रघुवर सरहज सारी॥
अति संकोच लखि दूलह लाजे दिये वोर बुधवारी॥
हास विलास विविध विधि होत कोहवर में साज

बिधि कराइवे हेतु राम दिशि पारवती हैं।
जनक नन्दनी बोर शारदा परम सती हैं॥
मंगल समय बिचारि विधि लहँकौरी आई।
दधि मिश्री मणि जटित थारवहु सहचरी लाई॥
दुलहा दुलहिनि के निकट धरि दीन्ही अनँदभरी।
मंगल गान करें सखि चहुँदिशि कोहवर मेखरी॥
पार्वती कहि मधुर बैन रघुनन्दन सों हँसि।
लहकौरी निजकर खवाइये सिया वदन शशि॥
रघुनन्दन सकुचात कमल कर संपुट कीन्हे।
मन्द मन्द मुसुकाई सबन के चित हरि लीन्हे॥
पारबती तब आपने करते रघुबर करधरी।
जनकलली मुख देति है देहि मिश्री आनँद भरी।
सिद्धि कुअरि हँसिसो सुधा दियो अधर लपटाय।
यहु के रस पिय चखि लेहु रहे लाल मुसकाय॥

॥ लहकौर ॥

मानो अहि निजमणि प्रतक्ष करि शशि के मध्य में।
छवि अमृत को ग्रहन करत अति प्रेम बध्य में॥

अरु अपनी मणि शशिहिं देत अस छबि ह्वै आई ।
ऐसहिं कर अहि वदन इन्दु त्रैबार सोहाई ।।
पुनि यहि विधि रघुकुल तिलक दधि मिश्री खवाइतै ।
सब निज प्रियन षवायउ ये कहिं छवि सब ठौंर भै ।।
बहुरि शारदा जनकलली कहँ लगी सिश्वावन ।
छवि अमृत को ग्रहन करत अति प्रेम बध्य भे ।।
रामलाल को मुख निहारि जो चंदत जावात ।
दधि मिश्री मुख इन्दु देहु मन भावति प्यारी ।
मंद विहँसि गई गृहि सकोच में जनक दुलारी ।
अपनो जूठन जानि के नहीं उठावती कर कमल ।
तब सारद निजकर धरी सिय सरोजकर अतिअमल ।
लगी सवावन रामलला मुख दधि मिश्रि को ।।
धुंधट वोट निहारी अैन मुख भई लषिपिको ।
फूली कंचन बेली मनहूँ फलतरु तमाल को ।
चुम्मन करत सप्रेम सारदा लषि विहाल भो ।
ताहि समय की उपमा कविजन हृदय विचारहीं।
मन बुधि चित अहमित विसरि जातन बनत उचारहीं ।
हे रघुवंश कुमार लाल अति प्रेम समेता ।
अध रामृत कुंअरिन कि लेहु पावहु सुख हेता ।।
एहि विलासमय बचन सुनते रघुवर मुसुकाने ।
ताहि समय की प्रीति रीति को कौन बखाने ।।

बहुरि शारदा जानकी कर कमलनि को घरिलई।
दधि मिश्री को लेन हित थार उपर करधर दई ॥
बहुरि हाँस रस युक्त कहति हे राजदुलारे ।
एह लहकौरी बाहु प्रेम युत प्राण हमारे ॥
ऐसी स्वादिक वस्तु तुमहिं नहि प्राप्ति भई है ।
कौशल्या यद्यपि खवाई दई वस्तु कई है ॥
तुम जननी के प्राण सम यद्यपि तुम सबको लहै ।
इन कन्यन की जूठरस अति दुर्लभ मोमन कहैं ॥

॥ दुलहा सखी हास सियाजू की जूठन ॥

रस स्वाद के भौन प्रवेस किये,
अबही कहु स्वाद कहाँ से बताऊँ ।
सुधि पाई जबै मुनि नारद से,
तबते हिय में अति ही अकुलाऊँ ।
चलि के द्विज के संग आय यहाँ,
उवलोकि पुरी सो महा सुख पाऊँ ।
करुणा करि के 'जय-माला' मिली,
तब ते चित चौगुन चाह बढ़ाऊँ ।
रस स्वाद हमार अधीन है आपके,
प्यावो जबै रस स्वाद बताऊँ ।
हम भूखे हैं दिनन अनेकन के,
नहि थोरि सुधा करि पान अघाऊँ ।

दुवले हम हैं तुम जानति हों,
रसपूरण दो जेहि शीघ्र मोटाऊँ।
सब साज समाज संयोग जुरे,
केहि कारण हो अजहूँ ललचाऊँ।
दो०-यो कहि लालन चुप रहे, सबके हृदय चोराय।
सिधिकुअरी अति नम्र होइ, कही सुनहु रघुराय।

॥ कवित्त ॥

ओह प्राण प्यारे अबधेश के दुलारे,
आप मिथिला में कृपाकरि आपहीं पधारे हैं।
धारे हैं अंग–अंग कोटिन मनौज छबि,
मिथिला निवासिन पर जादु पढ़ि डारे है॥
डारे हैं घायल करि नैनन के बानो से,
कसकत हिय रेन दिन होत नहि न्यारे है॥
न्यारे कोई चाहै नाहि, काम धाम भावे नाहि,
आपके सनेह सुधा छाके मतवारे हैं॥
दो०-सिद्धि कुँअरि हँसि सो सुधा, दियो अघर लपटाय।
यहुके रस पिय चाखिलो, रहे ललन मुसुकाय॥
सियकर अँगुरिन मणिजराव के भूषण सोहै।
तेहि नग महँ पिय मुख मयंक प्रतिबिब लषो है॥
मगन भई छवि देखि आँगुरी चालति नाही।
मोहि गई सिया पिया इन्दु मुख की परिछाही॥

शारद नही उठावही मेरो कर असमन रही ।
चष चकोरि श्रीजानकी रघुवर मुखको शशि कही ॥
दसा प्रेम सिय देखि पिया सुधि भूलि गई है ।
तैसहिं सब रनिबास नेह में बिबस भई है ॥
कोहबर में जे रही ताहि क्षण सब बरभागी ।
सब दुलहिनि दूलह सरोज मुख के अनुरागी ॥
तहँ की सकल विलास सुख नहिं वचनन में आवई ।
मन बुधि बर वाणी अगमता कहँ कबि किमि पावई ॥

॥ हवीस खीरख्योन विधि ॥

मेवा मिश्री युत हविष्य मणि थारन आई ।
सरहज सब निजकर सरोज ते धरि सब ठाई ॥
बहुरि अमित पकवान थार सहचरि ले आई ।
लाई बहुरि मलाई अपर सब तरह मिठाई ॥
ललित कटोरन में धरी दधि माजून बनाई के ।
सब दुलहन को कहत भई पावहु प्रेम अघाई के ॥
चली हाँस की बात लाल तुम काके जये ।
कौशल्या है गौर राय पुनि गौर सोहाय ॥
तुमको देखत श्याम ताहि ते शंका आई ।
लक्षमण काहे गौर स्याम तुम देहु बुझाई ॥
मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहात हैं ।
मातु पिता तब गौर है यह परपंच देखात हैं ॥

द्वयि उर्मिला स्याम राम कहि मृदु सुसुकाने ।
सुनहुँ कुअरि अब श्याम हेतु हम सत्य बषाने ।।
ताते मेरो अंग स्यम रंग श्रृंगार रूप हम ।
है श्रृंगार को श्याम रंग श्रृँगार रूप हम ।।
ताते मेरो अंग श्याम छवि धाम काम सम ।
निध्या करि बोलति भई है परत्व पुनि गौर को ।।
स्याम जहाँ मोहित रहें तुम आये इतदौर को ।
दो०-सुनहुँ सुमन मकरंद हित मधु पहिं कौन बौलाई ।
भ्रमर आपु ते आवई, जहँ सुगन्ध रस छाई ।।
सुनि सरहज रसमर्म्म को फूली हिय अरविंद ।
सब के मन अति मोद भई भाकति मुख रघुनंद ।
निध्य करि कोई प्रशन बहुरि पिय उत्तर सुनिके ।
जनकनन्दनी मुदित बात सब मन में गुणि के ।।
मंद मंद मुसुस्याति दमिनि द्युतिहि लजावति ।
झीन वसन के ओट देषि पिय मन अगरावति ।।
लषि लषि पिय मन हर्षअति मनहुँ रंक राजा भयो ।
सिय मुखचन्द निहारि के विरह ताप पिय मिटि गयो।
ननदोइ ते बहुत हाँस रस सरहज कीन्ही ।
मन भावत सुख दुहुँ और दीन्ही अरु लीन्ही ।।
भोन भई उपनेति सिलय सूची झारी लाई ।।
सहचरि सबकी मुख धोवाई दीन्हीं अँगु छाई ।।
बीरी ललीत सँवारी के साशु सकल दुलहन दई ।
सहचरि कुअरिन को वीरी ललीत सुख भई ।।

यशध्वज नँदन प्रिया जाहि रति मोहनि नामा।
नख शिख मधुर सरूप सुन्दरी छबि की धामा ॥
महरानी ते बसन ओट करि वात जनाई।
बड़ी बेर ते मौर शीस पर हे रघुराई ॥
उतरि जाइ तो अति भली रानिन की सम्मत लई।
मौरि लई उतारि के कुलही पेन्हन को दई ॥
बहुरि दई गुलचाइ हँसन लागे रघुराई।
पानदान वीरी समेत सियवर ढिग आई ॥
मणि कोपर गरीदाष बादाम बिराजे।
लौंग छोहरा किसमिसादि सब मेवा भ्राजे।
श्रीसिद्धा बोली तबै खाहु लाल वीरी ललित।
बहुरि खाहु मेवा मधुर अतिसप्रेम मिश्री सहित।
पानदान जो रामलाल ढिग सखियन राखी।
बीरन में छल भरे भेद कोइ सकइन भाखीं ॥
जब रघुवर कर लई खोलि के देखन लागे।
उड़ी फुदगुदि फुरर मधुर स्वर बोलत भागे ॥
दशवीरा तक खोलि के देख्यो ये कहिवात है।
रसिक शिरोमणि नवल छवि मन्द मधुर मुसक्यात है
सखियन हाँस बढ़ाइ जे रघुलाल बिहारी।
कुअँरि सकल मुसुक्याति वोट घूंघट छविकारी ॥
नयन कोर रघुकुल कुमार निरखत सो शोभा।
विहँसिन मधुर निहारि सिया की मन अतिलोभा।

जनक प्रिया सुखमानि के वीरी ललित सुगन्ध मई।
अपने करते ल्याइ के रामलाल कर में दई ।।
दो०-चारों कुंअर प्रणाम करि, लइ बीरी निज हाथ ।
पावन लगे निशंक ह्वै रानी निरखि सनाथ ।।

।। सातों सरहजों के नाम ।।

जनक पुत्र लक्ष्मीनिधि सिद्धा तेहि प्रिया नाम ।
कुशध्वज के हैं श्रीनिधि, निध्या करि तेहि बाम ।।
यशध्वज के धितवर्त्त हैं, रति मोहनी प्रियाजानि ।
विरध्वज के पुत्र त्रय, प्रथम देव दानि नाम ।।
चित्रकांति तिनकी प्रिया, रूपशील गुणखान ।
अज्ञा पर दोसर तनय, रूपशील गुणखान ।।
सौदर्य गर्भिता नारि तेहि, मंगल मोद निधान ।
तृतिय वंश प्रवीण हैं, मन मालिनि प्रिया जान ।।
केकी ध्वज के पुत्र येक सेवा पर छवि अैन ।
मदनावलि तिनकी प्रिया,जेहिछवि कहत बनैन ।।
इतिसातों रघुलाल की, सरहज सुख की रासि ।
रहिं सिय वरढिग करत अति,विविधि भाँति की हाँसि

।। देवि पूजा ।।

अपर सहेलिन संग लै, तेहि कोठरी माँहि ।
जो लीला करने चहति,सो कोइ जानत नाहिं ।
सब दुलहिनि की पदतरी, किंकरि तै मगवाइ।
येक मूरति निर्मान करि, वस्तर दियो उठाइ ।।

।। देवी पूजन ।।

झला बोर तापर धरी, चद्दर येक अनूप ।
अंग छपा बैठी मानो, कोउ एक सुघर सरुप ।।

तब सिद्धा रघुवर ढिग आई । कहि मृदु वयन सनेह जनाई ।।
उठहु लाल सब अनुज समेता । चलहु देबि घर पूजन हेता ।।
चारो कुअर उठे तत्काला । चले सकल जनु राज महाला ।।
कोइ कोइ भेद सकल यह जाने । विहँसति मदन भेष बषाने ।।
तिन कहँ नयन सैन समुझाई । सिद्धा गइँ लवाइ रघुराई ।।
मूरति निकट गये जब रामा । कहि सिद्धा तुम करहुँप्रणामा ।
राजकुंवर हे मुनि मन हारी । यह देवी कुल पुज्य हमारी ।।
विनय सुनत तेई रीझै । नाहि करो तबहिं ई षींझे ।।
ताते सिघ्र नबावहु माथा । लेहु अशिस पुलकि रघूनाथा ।।
तुम्हेउ रिझे जप तप कीन्हें । नाई खुसी गान मन दीन्हें ।।

दो०-केतल कर जोरे द्रवति, इनकी सरल सुभाव ।
सर्वों विघ्न विनास कर, सब कामना पुराव ।
बेगि पाय परू दीन ह्वै, हँसि बोले रघुराय ।
क्रोध अनुग्रह किमिलषों, बैठी बदन दुराय ।।
कहि सरहज गृहि गोचरी, माया इनकी नाम ।
मुख सब कह न देखावहीं, द्रवती करत प्रणाम ।।
तुम अश्नान करी नही, छुवो नइन कहँ लाल ।
बरबस राम छुअत भये, हँसी सकल नव बाल ।।

कहि रघुनन्दन पद तरी, हमरी लई चोराइ।
ताकहँ निज देबी कहँति, अनुचित कहिन डेराइ।
तुम सबका हम कहँ ठगहु, नाना युक्ति बनाय।
सकल कला हम जानहीं, दीन्ह बशिष्ठ पठाय॥
सब सरहज हँसती भई, लालन मुख निहार।
ननदोई सरहज सहित, करत अनेक बिहार॥
अब जाइये जनवास को, लाल होत अतिकाल।
कालि कलेउ के समय देहौं उतरु रसाल॥
सुनि सरहज के युक्ति युत, बैन मंजु मुसुक्याय।
प्रेम सुधा बरसत श्रवन, कहे बचन रघुराय॥

छं०–सुनि सिद्धि के अस बचन सुन्दर, रचन पाय हुलास।
चारिहु कुँवर प्रमुदित उठे, करि विविध हास विलास।
दिय छोरि गाँठी सिद्धि सुँदरि वर वधुन की सकुचाय।
चारिहु कुँवर चारो सासु को सहुलास शीश नवाय॥
यहि भाँति चारिहूँ बंधु द्वारे आ गये सुखछाय॥
तेहिकाल मिथिला पाल संयुत लाल आयो धाम।
मिल राम वारहिं बार भरतहिं लषण अरु रिपुशाल॥
करजोरि सब माँगे विदा शिरनाय दशरथ लाल॥
भेटेयों बहुरि लक्ष्मीनिधिहुँ प्रभु मिले सहित सनेह।
चारहु कुमार सवार भेइत गये गेह विदेह॥
गवने कुंवर जनवास को सुन्दर सखा सब संग॥
जनक सजाये हय तब पाँचा। श्याम कर्ण देखत मन राँचा॥

कुंवरहिं कह हय लाल चढ़ाई । देहु तुरत पितु पहँ पहुचाई ।।
सुनत कुँवर अति भये सुखारी । हयन चढ़ायो दूलह चारी ।।
आपहु चढ़े सखन संग लीने । जे गुण शीलहुँ प्रेम प्रवीने ।।
दो०-सखन बीच दूलह लसत, नाचत जात तुरंग ।
सम वयस्यक सबहीं फबत, देखत बनत सुदंग ।।
छ०-बाजी उछालत नयन चालत चले राजकुमार ।
मैथिल सखा राजकुमार गवने संग पंच हजार ।।
फहरात विमल निशान आगे तुंग द्वै असमान ।
मनु तासु पवनहि पाय तारा बृन्द नभ बिलगान ।
बाजत अनेकन दुन्दुभी नहिं शोर भुवन समात ।
पुर नारि नर मोदित खड़े पथ बृन्द बृन्द बतात ।
गल मुख पद सुभ भूषण भूषित चमचम चमक सुभाय ।
मनहु मदन हय रूप विराजित परसत प्रभु ललचाय ।।
हर्यहिं नचावत अति थिरकावत दूलह राम सुवेसा ।
अमित काम वारततिन ऊपर, सिहरा मौर घनेसा ।।
चारहुँ दूलह जात सुसोहैं सह लक्ष्मीनिधि सारा ।
हास विलास होत मगमाही हँसहिं सबै निमिवारा
देखि देखि सुर होहिं सुखारी, वरषहिं बहु बिधि फूला ।
जय जय कहहि प्रेम रस पागे, दुन्दुभि हनि अनुकूला ।
देखहिं चढ़ी अटारिन्ह नारी, भरी प्रेम रस बाँकी ।।
दूलह कहहिं सुनाय सुदूलह जात बहिन रक्षा की ।।
सुनत लाल सकुचहिं हिय हरषत मैथिल हँसत सुभाये ।।

दो०-अवधपुरी दासी सकल खड़ी महल के द्वार ।
आवत लाल निहारहि नयननि मेष बिसार ॥
उतरी सवारिन ते सकल दूलह चारो भाई समेत ।
चले महल अति मुदित मन विप्र आशिष देत ॥

छं०-यहि भाँति चारिहुँ कुँवर आवत भये वर जनवास ।
देखन बराती सबै ठाढ़े नहिं समात हुलास ॥
तजिके तुरंग उमंग भरि एक संग चारि कुमार ।
पितु कियो निउछावरै पद बन्दि बारहिं वार ॥
आई सब माता आरती करि निछावर कीन ।
गई भीतर मातु लिवाय चारो,ललन मोदहि भीन।
हिल मिल किये भोजन सबै व्यंजन विशेष निकाय ।
कीन्हे शयन पर्यंक निज निज अरुण नैन अलसाय ॥
तहँ सकल कौशलनगर बासिन बढ़ी अतिशाय प्रीति ।
नहिं राम व्याह किसाबिती वर्णत निशागय बीति ॥

दो०-सकल वराती जागते, लहे प्रमोद प्रभात ।
बन्दी जन विरुदावली गाय उठे अवदात ॥

नौवत झरन लगे सब ठौरा । भये दुन्दुभि के कल शोरा ॥
उठयो चक्रवर्ती महराजा । सुमिरि आतम राम छवि छाजा ॥
प्रातकृत्य सब भुप निबाही । दीन्हो दान समायन उछाही ॥
रघुकुल तिलक उठेयुत भाई । करि भज्जन सिंगार सुखदाई ॥
सहित वन्धु पितु के दरवारा । आये चारहु राजकुमारा ॥

उतै जनक सब साज, भरि शतानन्द के संग ।
पठवायो जनवास महँ, हित व्यवहार अमंग ।।
तुरंग नचावत मग छवि छावत बाजत बिपुल नगारे ।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पगु धारे ।।
छ०–द्वार समीप देखि अतिसुन्दर मणिमय चौक सँवारे ।
राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ।।
लक्ष्मीनिधि तब उतरी तुरंग ते चारह कुँवर उतारे ।
पानि पकरि रघुनन्दन जी को भीतर महल सिधारे ।
द्वीप द्वीप के जहँ महिप सब जनक समीप विराजे ।।
बैठे सभा सकल निमिवंशी सुरअंशी इमि छाजे ।।
रघुनन्दन तहँ अनुज लखन युत सादर पाय जुहारे ।
देखत उठे सकल निमिवंशी जनक निकट बैठारे ।।
इते सुनैना सखी पठाई । लक्ष्मीनिधि कहँ निकट बुलाई ।।
जनवासे अब लाल सिधारौ । लै आवहु लिवाय वर चारौ ।।
इतहिं कलेऊ करहिं कुमारा । भवन विभूषित होय हमारी ।।
दो०-सुनि विदेह नन्दन चल्यो, दुलह लिवावन काज ।
चढ़ि तुरंग मढ़ि मोदरस, संग सखान समाज ।।
गयो जहाँ राजत रघुराजा । सभा सभायुत राज समाजा ।।
लक्ष्मीनिधि आवत लखि राजा । भयो अनंदित सहितसमाजा ।
लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा । आशिष दई भूपमति धामा ।
शीश सूघ अंकहिं बैठायो । चिबुक परसि बोल्यो कहँ आयो ।।
लक्ष्मीनिधि कह हे महराजा । भेजहुँ कुवर कलेऊ काजा ।।

भूप कह्यो लै जाहु कुमारे। का पूछहु मिथिलेस दुलारे ॥
सुनतसुखी लक्ष्मीनिधि भयेउ। लालनिकट आशुहि चलिगयऊ
विहँसि कह्यो चलिये रनिवासा। मातु बुलायो दर्शन आसा॥
करन कलेवा बन्धु समेतू। आशु पधारिये रघुकुल केतू ॥
उठि रघुनन्दन चारिहुँ भाई। पिता चरण पंकज शिरनाई॥
चढ़े कुवर सब तरल तुरंगा। चले सखा सब सोहत संगा ॥
डगर डगर तिमि नगर मझारी। फैली सुधि आवत वरचारी।
दो०-पुर नर नारी लखन हित, बैठे अटारी द्वार।
कहहिं कलेऊ करन हित, आवहिं राजकुमार।

॥ विदेह का मिलना ॥

मिलि विदेह आशिष दई, लै गये भवन लिवाय।
यथा योग्य भ्रातन सखन, सहित लाल बैठाय॥
करत भये सतकार बहु, अङ्गन अतर लगाय।
दै वीरी पूछि कुशल, प्रेम अम्बु दृग छाय॥
प्रभु बोले करजोरि कै, आप कृपा कुशलात।
जैसे लक्ष्मीनिधि अहैं, तैसे हम सब भ्रात॥
छं०-तहाँ सुनैना की यक आई सहचरी।
कुवर बुलावन हेतु महाँ मुद उरभरी॥
रामहिं आवत देख सुनैना आई धाय के।
तीनहुँ अनुज समेत आरती करि बैठाय के॥
तहाँ लक्ष्मीनिधि नारि सिद्धि आवत भई।
करन कलेऊ हेतु विनय करत भई॥

उठे राम लै बन्धु कलेऊ करन को ।
बैठे आसन माहिं महामुद भरन को ॥
व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्याय कै ।
मुख सरहज अति सुख पाय परोसे आयकै ॥
सनमुख बैठी सिद्धि सहित सखियान के ।
गारी गावन हेत स्वरूप गुमान के ॥
चितलाय सुनहु चितचोर छयलघनु धरि सारी,
सरहज की प्रेम भरी रस गरी ॥
अवध बिहारी और वस्तु तो सुलभ अनतहुँ,
यह तो सुलभ य हाँहीं ।
यह रस स्वाद मधुर गारी को औंर ठोर कहँ नाही ।
चुनिचुनि हम सब गुनगन गावहि सुनहुँ गुनहुँ मनमाँही
कवहु रसिक सुनि हँसहि ठठाके कवहु मन्द मुसुकाही ।
नित रहै विलसती यह विनोद कोहवर अवध बिहारी ।
दो०-यहि विधि मिथिलापुर युवति, गारी गावत जाहिं ।
मन्द मन्द भोजन करत, सकल बन्धु मुसुक्याहिं ॥
यहि विधि भोजनकरिअभिरामा । कियआचमनबन्धुजुतरामा
उठि चामिकर चौकन जाई । बैठे धोय कर पद सब भाई ॥
मुकुटन शिरन सुधारत माहीं । आय सुनैना कह्यो तहाहीं ॥
कौशल मुकुट उतारहु लाला । मिथिला मुकुट देहु यहि काला
असकहि मणि मंडित धरिथारन। मुकुट चारिवर प्रभापसारन
पहिरायो चारिहुँ वर माथे । पद्मराग मरकतमणि गाथे ॥

अति कोमल फूलन की माला। लालन गर पहिराय विशाला
बन्दि विदेह महिप पटरानीं। नेग कलेवा कर सुखदानी ॥
माँगहु जौन रहै अभिलाषे। तब प्रभु जोरि कञ्जकर भाषे ॥
यही नेग जननी अब दीजे। लक्ष्मीनिधि सम मोहि करि लीजे
मैं सुत सेवक तू महतारी। देह अम्ब रुचि यही हमारी ॥
दो०-शील विनय रस के भरे, मधुर लाल के वैन।
सुनत जनक रानी युगल, भरि आये जल नैन ॥
लालन नात हमार तुम्हारा। यही रहै सर्बदा बिचारा ॥
एवमस्तु वोले रघुनन्दन। सदा प्रनत जन पर अभिनंदन ॥
सर्वस पाइ सुनैना रानी। गई अनत सिधि आगम जानी ॥
तुम्हरे दरस हम भये सुकृत पुनित सकल प्रकार सो।
महिमा तुम्हारी भुति महिमा कौन करै उपचार सो।
हम दियो तुमको सोंपि चारहुँकुँवर ताजि छल छन्दको।
लालन करन पालन करन तुम पिता देन अनन्द को ॥
कौशल नगर मिथिला नगर के आप एक अधिश हो।
यामेन दूसरी बात कछु तुम बिषय कर्म अनीश हो ॥
दशरथ वचन सुनि सब सभा सद साधु साधु उचारही।
दशरथ सनेह विदेह लखि दृग वारी धारहि ढारही ॥
बोल्यो वहुरि निमिवंश भूषण काल्हि महल धधारिये।
करि कै कृपा निज कुंवर युत मम भवन जुठन डरिये ॥
माँगी विदा निज भवन गवन विदेह लहि सुखसार है ॥

पहुँचाय द्वारहि देश लौ अवधेश चले मिथिलेश को।
करि सबिध वन्दन सहित नन्दन पाय मोद अशेश को ॥

॥ शीष्टाचार दोनों राजा मीलन ॥

दो०-सुनहु लाल अभिराम अब, करहु जाय आराम।
साँझ समय मिथिला नृपति, आईहै हमरे धाम ॥

द्वै धावन तहँ आशुहि आये। अवधनाथ यह खबर जनाये ॥
दरशहेत मिथिलापति आवत।सुनिदशरथ अतिशय सुखपावत
कियो सकल दरवार तयारी। लियो बंधु सरदार हँकारी ॥
राम बन्धु युत लियो बुलाई। नर भुषण आये सुखदाई ॥

दो०-महाराज नवखंड पति बैठायो सहित समाज।
राज मण्डलि नखतसम चन्द्र सरिस रघुराज ॥

॥ छन्द गीतिका ॥

मिथिलेश आवत जानि कौशलनाथ चारि कुमार लै।
कछु लेन आगे चल्यो सकल उदार वर सरदार लै ॥
चलि द्वार देशहि मिल्यो मुदित महीप सो मँड़ित महाँ।
मिथिला धीराज प्रणाम कीन्ह्यो भुजन भरी मुदित तहाँ ॥
तहा राम चारहु बंधु कीन्ह प्रणाम जनक महिश को।
मिलि मुदित मिथिला नाथ हाथ पशारि दीन आशीश को।
अवधेश को अभिवंदि कुशध्वज मिल्यो कुँवरन जायके।
तिहि राजकुंवर प्रणाम कीन्ह सलाज शीश नवाय के ॥
पुनि आये लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कोशलेश नरेश को।

यहिविधि परस्पर मिलिसकल पुनि पूछिकुलश अनंदसो।
अवधेश चले लेवाइ जनकहि पकरि कर अरविंद सो ।।
दोउ राज बैठे एक आसन दहिन दिशि मिथिलेश है ।
बांये सुकौशल राज राजत और वीर अशेश है ।।
आगे विराजत लाल चारहुँ बंधु लक्ष्मीनिधि युते ।
दहिने कुशध्वज और निमिकुल वीर एक एकन युते ।।
वहु भाँती शिष्टाचार वचन उचारि अवध भुवार को ।
करजोरी बोल्यो जनक आपु समान यहि संसार को ।।
निमिवंश पावन कीयो दीन्हो सुयश मोहि दराज है ।
किमि करौ प्रति उपकार गुणि उपकार आवति लाजहै ।
प्रेम मगन नृप गिर उचारी । कहियो पितुहि प्रणाम हमारी ।।
पुनि कहियो अस सो सुखदाई । जो महि होंइ रजाई ।।
लक्ष्मीनिधि तहँ वन्दन करि कै । गयो महल मुदित मनभरीकै
कौशलनाथ निदेश सोहावन । दियो सुनाय पिता कहँ पावन ।
सुवर सुरकारनति हिवारा । कीन्ह्यो जनक तुरत हँकारा ।।
दियो निदेश रचहुँ ज्योनार । त्रिभुवन व्यंजन विविध प्रकारा
सिगरे सुपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्यवनार हुलासन ।।

।। जेवनार परिकरण ।।

दो०-मिथिलापति ज्योनार हित, बोलि पठाये नाथ ।
जो आज्ञा प्रभु दीजिये, करों वेगि धरि माथ ।।
भूप बचन सुनि परम सुखारे । गुरु वशिष्ट असवचन उचारे ।

दो०-अवसि चलिय मिथिलेश गृह,आजु उचित असआहि।
लै बराति निज संग में, भोजन करनो चाहि ॥
विजोइ भई जनवास में, नित्य नेग सब कीन।
दुतिय विजोइ चलतभये,भोजन दिशि चितदीन ।
सुनत महीप जुड़ानी छाती। जेवन चले साथ ले बराती ॥
इतै करी अवधेश तैयारी। महल पधारन हेतु सुखारी ॥
साजें सकल सुन्दर रघुवंशी । जे त्रिभुवन महँ विदितप्रशंसी।
चारि कुमारन भूप बुलाये। चारि उतंग मतंग चढ़ाये ॥
नाम जासु शत्रुंजय नागा । जिहिं विलोकि दिग्गजमदभाग ॥
तापर भयो भुवाल सवारा। जिमि ऐरावत शक्र उदारा ॥
दो०-राम लखन दक्षिण दिशा, बाम भरत रिपुशाल ,
चारि चारु चामर चलत, सोहत छत्र विशाल ॥
सजी सैन्य सब बजे नगारे। फहरत लगे निशान अपारे ॥
प्रतिहार बोलहिं यक ओरा । मंजुल करहिं जाँगरे शोरा ॥
पुरवासी देखन सब धाये । देखि-२ धनि-२ सुख छाये ॥
जहँ तहँ कहहिं जनकपुरवासी । धन्य-२ नृप अवध निवासी ॥
भई खबर महलन महँ जाई। आवत अवधनाथ नृप राई ॥
राज समाज सजि सब साजा। बैठ रह्यो विदेह महराजा ॥
समधी आगम मनहिं बिचारी। आगे लेन चले पगुधारी ॥
द्वार देश अवधेश निहारी । कर गहि जनक लियो उतारी ॥
कीन्ह प्रणाम परस्पर दोऊ। बन्दे यथा योग्य सब कोऊ ॥

दो०-दीन बन्धु बन्दे जनक, सहित बन्धु युत बन्धु ।
शील सिन्धु को रामसम, नागर नेह प्रबन्धु ।।

छ०-परत पाँवरे महल द्वार लौं, वसन अनूप बिछाये ।
तेहिं पर सुतन समेत चले, दशरथ नृपति मनभाये ।।
आस पास महराज बन्धु सब, अति छवि शोभा करहीं ।
रघुवंशी जेते कुमार, दूलह सँग मन हरहीं ।।
सकल बरातिहिं मण्डपहिं आये, अति शोभा भई ।
जनक मुदित भावहिं सहित, पदपखारि आसन दई ।।

सादर सबके चरण धोवाये । जथा जोग्य आसन बैठाये ।।
मुनि वशिष्ठ आदिक विप्रनको । धोये जनक हर्ष चरननको ।
पुनि दशरथ के पाँय पखारे । शील सनेह को वरनै पारे ।।
राम सहित पुनि तीनों भाई । धोये चरण हृदय हुलसाई ।।
धोये चरण चारु सबहीं के । सीच्यो सलिल सदन सव नीके ।
अवधनाथ कहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा
भोजन मन्दिर गये लेवाई । यथा जोग्य आसन बैठाई ।।
मृदुल गलिचा पन्नन के प्यारे । बैठाये तिन राज कुमारे ।।
जड़ित चन्द्रमणि चौकी चारु । बैठाये कौशल भरतारु ।।
मखमल बिछे सुपीढ़न ऊपर । बैठी सव बरात सुख तापर ।।

छ०-वीरसिंह अरु सूरसिंह जय शील सिंह बर ।
विजय सिंह श्रीरतन भानु परताप दिवाकर ।।
शशि शेखर इत्यादि सब रघुवंशी मंडप लसै ।
पीताम्बर पहिरे सबै, धन्य भाग्य जे उर वसै ।।

गोप ग्रींव वर लसत रतनमय जड़ित सवन को।
मुक्तामणि की माल नाभि लो लसत बरन को ॥
दुलहुन की शोभा अनूप सो वरनि न जाई।
पहिरे मणि भूषण अपार नखशिख छवि छाई ॥
मंडप के चहुँओर अवधवासी सब सोहैं।
रूपशील गुण भरे लखत नयनन मन मोहैं ॥
भूषण वसन अनूप सबन के सुन्दर राजै।
कोटि काम मन हरण कान्ति छविभौन विराजै ॥
परदा गिरी अनूप झलि मिलि वरनि न जाहीं।
पुरवासिन को भीर गान धुनि अधिक सुहाहीं ॥
पंच शब्द धुनि होत विविध नूपुर तहँ बाजै।
मानहु रागिनि सकल आय नृप धाम विराजै ॥
जब नृप समुझे सकल वराती बैठे आदर।
सूपकार नृपसुनि निदेश पत्रल परसन लगे आगर।
हरित मणिन के पत्र कनक की कील जराईं ॥
अस पनवारा विमल सवन के ढिग पहुँचाई ॥
स्वर्णपात्र जल भरे सुहाये। सबके दहिने ओर धराये ॥
दो०-सब सुआर मणिथर लै, परसहिं अति हर्षाय।
सूपोदन प्रथमहिं दियो, छोड़ि सुधृत सुखछाय ॥
परस्यो ओदन विविध प्रकारा। मोती भात सुनाम उचारा॥
केशरि भात नाम शशि भातू। कनकभात पुनि विमलविभातू
अरुण पीत अरु हरितहुँ वरणै। आदेन विविध कौन कविवरणै

षट रस भोजन चार प्रकारा। इक इक पुनि बहुभाँति अकारा
मधुर सरस शुचि सुखद सुवासे। परसे मुदित सुआर सुघासे ।।
विविध भाँति पकवान सुहाये। जनकहुँ पावन हेतु निहोरे ।।
पंच कवलि करि सकल बराता जेनन लागि मुदित मन भाता
जेवत जानि सुमैथिल नारी। गारी देन लगीं सुखकारी ।।
नारि पुरुष लै नाम सुगावै। पावनहार प्रमोदहिं पावै ।।
दशरथ राउ मुदित मनहोही। हँसहिं समाज सहित सुखजोंही
छं०-अगनित वस्तु अनूप भूप तुम सब बनवायो।
व्यंजन विविध प्रकार सार अमीय जनु लायो ।।

।। सवैया ।।

सुनि के शुभ गारि पियारी लहैं सुखभारी सबै अतिमोद भरै
मुसुक्याय के ग्रास उठावत पावत जेंवत माहि विलम्ब करै।
मधुरे धुनि वाणी मनोहर जो सब ब्यंजन को सुख स्वाद हरे
श्रुति के सुखदायक मंगल में रसना रस के सुख भूलि परे ।।
छं०-श्रवण करत राजाधिराज अवधेश सुवन सँग।
सब भाइन मिलि हँसत राय प्रमुदित नाना रंग ।।
राम वन्धु जुत अति अनुरागे। भोजन करन लगे सुख पागे ।।
दधि चिउरा विदेह कर लीन्हे। कौशलपति आगे धरि दींन्हे।
कह्यो जोरिकर तिरहुत माही। याते और पदारथ नाहीं ।।
और सकल रावरी विभूती। हमरे तौ इतनी करतूती ।।
हमनहिं तुमहिं जेवावन लायक। लेहुकृपाकरि रविकुलनायक
कह्यो अवधपति सुनिय विदेहू। जो करि कृपा आजुतुम देहू ।।

सो सादर हम सिर धरि लेही। असदाता पैहैं पुनि केही ॥

॥ गारी गान ॥

सुनहु राम दूलह मनभावन पावन रूप तुम्हारी जी।
पै एकबात सुनी हम ऐसी माय तुम्हारी छिनारी जी ॥
आजी रही तुम्हरी रघुनन्दन बांकी निपट चलाकी जी।
कामकला की सब गुण छाकी डोलत परपति झाँकीजी।
जो तुम्हार नानी सुनु न्यारे सुखदानी गुण खानी जी ॥
रसिक बात में बड़ी सयानी सकल बात हम जानी जी।
मामी रहि तुम्हार सुखधामी अवलन में रहि नामी जी।
अति चटकीली रसिक रंगीली करत अनेकन स्वामीजी।
रामलला तुम्हार जो मौसी गुण शोभा उजियारी जी ॥
रूप सँवारी गलिन गलिनमें करति फिरति बहुयारीजी।
फूफू रहि तुम्हार जो प्यारे सो जोवन मदमाती जी ॥
पान चबावति मृदु मुसुकावति परसों प्रीति लगातीजी।
बहिन तुम्हारी नाम शान्ती दइ सन्तन सुखकारी जी।
विभान्डक के पुत्र शृंगी रिषि तिनके संग सिधारी जी।
राजकुमारिन सहित जहाँ लगि है रघुबर को प्यारीजी।
सब मम भाइन के हैं सारे सब दुइ बापन वारे जी।
रामलला युत भले सखा सब सुनिये गारि हमारी जी।
रघुनायक यह प्रेम की गारी लीजिये पटुक पसारी जी।
रस रस पावत विहँसि बराती। सुनत गारि नहिंहोंहि अघाती
भोजन बीच महारस छायो। पुनि पुनि परसि सुआर सुहायो।
लेहिं और पुनि औरहुँ लेई। शवद सुनत प्रेमारस देई ॥

सो सुख वरणि लहै नहिं पारा। महामोद मन सरहत सारा।
भोजन भयो यहि विधि भाता। देखत सुनत कहत सुखदाता।
अचमन करि पुनि पान सुपारी। पाई सकल बरात सुखारी ॥
माँगी विदा जान जनवासे। कह्यो बचन तब जनक हुलासे।
केहि विधि कहौ जान अवधेशा। जान कहत जियहोत कलेशा
कौशल नायक बंदि विदेहू। गमन्यो वर्णत जनक सनेहू ॥
जनकहु बोलि घराति लीन्हे। भोजन किये सवहि सुख भीने ॥
चले हरषि दशरथ जनवासे। बजत बाद्य वहु कौतुक हाँसे ॥

॥ राजकुँवर सब कोहवर जाना ॥

चलहु लाल अबहीं कोहबर में समय नेग की आई।
चले रसिक मणि हँसि सरहज जो सखियन मंगल गाई।
कोहबर आय्र विराजे छविनिधि वन्धु सहित रघुराई।
तेहिं क्षण पुरकन्या बहु आई सरहज सबहिं बुलाई।
सादर सो बैठायो निज ढिग चमकत अंग गोराई।
हाँस कुशल सब गान प्रवीणी चितवन में रसिकाई।
लखि छवि धाम राममुख निर्मल सबके नयन लोभाई।
वचन विलास अनेकन उचरत दुहूँ दिशि अति मनभाई।

॥ हास्य विनोद ॥

दो०-वसन रुचिर बहु मोल के, झीनी अतिहिं सुगन्ध।
पहिरे सब नारी मुदित, छवि निधि रूप वैसंघ ॥
इन्द्रहिं वरुण कुबेर गृह, जो संपदा प्रमान।
अधिक ताहिं ते नारि एक, भूषण बसन परिधान।

जगमगात भूषण सकल, मणि मोतिन चहुँओर ।
निरखि मगन नृपसुवन सब, रतिपतिके चितचोर ।

॥ छन्द ॥

सिद्धा कही रघुवर सुनाय मृदुवचन अनूठी ।
तियको पिय सुख विन सकल सुख लागत झूठी ।
ताते तुमहिं बुझाय कहौं, जो जग व्यवहारा ।
सर्बोपरि सुख है विशेष समवयस विहारा ॥
शान्ता भगिनि तुम्हारि विपिन रिषिसंग दुख पावति ।
कबहुँ रहति उपवास कन्द भषि दिवस गमावति ॥
कोइल नाहिं करील बृक्ष पर रहि सुख लहई ।
हंस कुमारी नहीं मानसर तजि निरवहई ॥
ताते सुनहु सरोज मुख, अब बिलम्ब नहिं कीजिए ।
शान्ता बहिन बुलाइ कै, आरज सुत कहँ दीजिए ॥
सुनि सिद्धा के बैन अपर सरहज मुसुकाई ।
भली ठीक रचि दीन्ह, मानिहैं यह रघुराई ॥
रघुनन्दन सरहज के बैन, सुनि मृदु मुसुकाने ।
सर्वगुणन के सीव, शत्रुहन कहहिं वरवाने ॥
सुनहु चारु बदनी तुम्हरी मति मोहिं सुहाने ।
एही चलन तव ग्राम तो, हम सब कर कल्याण ।
हम सब तुम सब एकवय, चलहु अयोध्या सुखकरै ।
अपर नारि तब ग्राम सब, लेहिं बराती मन हरै ।
हँसे राम अनुजहिं समेत, सब नारि नहिं हँसाई ।

बढ़यो हाँस अगनित प्रकार को, कोहबर में छवि छाई ।
एक सखी बोलत भई, सुनहु लाल चंचल महाँ ।
चलती तो तब संग में, तुम लोलुप मोहिं सुखकहाँ ।
कोई सखी कहि जान देहु यह बात सयानी ।
लखहु राम को रूप सहज आनन्द सुखदानी ।
नयन श्रवन कोलाभ आजु निधि सब विधि कीन्ही ।
सुकृत भयी सहाय जो मनभावत सुख लीन्ही ।
सरहज पान खवावहिं अमित हाँस अससुख भई ।
सिद्धादिक नारी सबै मनवांछित सब सुख लई ।

।। अष्ट सरहज के नाम ।।

दो०-जनक पुत्र लक्ष्मीनिधि, सिद्धा तेहिं प्रिय नाम ।
कुशध्वज के है श्रीनिधि, निध्या तेहिं नाम ।।
यशध्वज के धृतवर्त हैं, रतिमोहिनी प्रिय जान ।
बीरध्ब्रज के पुत्र त्रय, प्रथम नाम देव दान ।
चित्र कान्ति तिन की प्रिया रूपशील गुणवान ।
अज्ञापर दूसर तनय, महाँ सुशील सुजान ।।
है सौन्दर्य गंभीरता तिन प्रिया मोद निधान ।
तृतीय वंश प्रवीण है मनमालिन प्रिय जान ।।
केकी ध्वज के पुत्र एक, सर्वो पर छवि ऐन ।
मदनावती तिनकी प्रिया, जेहिं छवि कहत बनैन ।।
छं०-इन सातों सरहजहिं लाल की सुख की रासी ।
रहि सियवर ढिग करत अति विविध भाँति की हाँसी

तब सिद्धा कहि सुनहुलाल, रघुलाल बिहारी ।
हम कहँ अति अभिलाष चलव हम संग तुम्हारी ।
लक्षण सब लखि लेहु, बुद्धि निधि विद्या भारी ।
हम तो सेउब सर्वकाल, पुनि रह आज्ञा कारी ।
हँसि बोले सीतारमण शुभ लक्षण तब अंग है ।
लेव संग छाड़व नहीं, मो मन अधिक उमंग है ।

दो०-यहि विधि अमित विनोद करि, विदा माँगि पुनिलाल ।
आये जनवासे सकल, अति हर्षित नृपलाल ।।

।। इति कोहबर विनोद ।।

दो०-छोड़ दइ तब द्वार को, दुलहा दुलहि समेत ।
कोहवर में गवनत भये, बनत न उपमादेत ।।
मणि जरतारिन की बनी आसन मन अभिराम ।
तहाँ तहाँ बैठति भई कुंअरी कुँअर ललाम ।।
रानि सकल समाज ते सुआसिनि ले संग ।
विधि ब्यवहार करावहीं गान सहित बहुरंग ।।
पुरइन बाँस पुजावही, दुलहा दुलहिन हाथ ।
मातु सिवा पुजवाई के, सब विधि भई सनाथ ।।
नर नारायण पद कमल, करि प्रणाम सियराम ।
ताहिभाँति अनुजहिं करी, दुलहिन सहित प्रणाम ।।
पृथक–पृथक विधि सब करे, दुलहा दुलहि समेति ।
मगन गानरणि बाँस सब करते तालहि देति ।।

❀ पद बातीं मिलावन ❀

क्यो न मिलावत बाती लाल तुम क्यो न मिलावत बाती ।
बात मिलाये मिलत दम्पति मन नेह दीन दीन अधिकाती ।
याको प्रभाव विदित जग सो कापै कहि नही जाती ।
सकुच विहाये मीलायो वावी वीती याम गुण राती ।।
समुझावती मुसुकावती सखियन सबही प्रेम रंग राती ।।
काहे न टारत वाती लाल अब काहे न टारत बाती ।
वाती देख संशय उर उपजी लिखै मातु कहँ पाँती ।।
यह न होय धनु तोरेअ शंभु को मारेऊ ताड़का धाती ।
कोउ जननी भगनी न सिखलायो वाती लागे ताती ।।
की लै जैहो नगर अयोध्या मातु कौशिल्या काती ।
नयन बनाय भौन कस होई रहेउ पठयो बोली बराती ।।
कीटारो की भगनी हारो जौ तुम्है सुगम सुहाती ।
जो मागो सोई देउ लाड़ीले मणि माणिक बहु जाती ।।
शाल दोशाला मोल बहु केरे जो तुम्हारे अधिक सुहाती ।
बिहँसीं बयन बोलेउ रघुनन्दन हमरे कुल नही लहाती ।
कै कै सुमति चारी जनि कहाँ है जो हमरे संग जाती ।
सुनत बचन मुख मोरी हँसी सखी कोउ कोउ असकहती ।
अरीसखी खोट छोट जानी सब जानो रघुवंशिन की जाती ।
जो मागउ सो दीयो सासु सब लालन वाती मिला रसवाती
लागी असि सै मनाय शंभु सुर छोह मोह मदमाती ।
बनी रहै लालन लाड़ली सब अचल प्रीति दीन राती ।

जन परिषत सो सुख किमि कहि सकै हिया शारद सकुचाती।
दो०-साँझ समय सानन्द नृप, निमिकुल मणि अवतंश।
निज समाज लै हर्षयुत, गे जनवास प्रशंस ॥
आज चतुर्थी कर्म विधाना। ताकर सब साजहु समाना ॥
शतानन्द कहँ जनक हुलासे। बर चारों पठयो जनवासे ॥
गौतम सुत चलि अवध भुवालैं। कह्यो चौठारि कर्महिं हालैं।
राउ कह्यो मम गुरु पहिं जाहू। तिन युत कुंवरन कहँ लै जाहू
गौतम सुत वशिष्ठ पहँ गयऊ। विश्वामित्रहिं आवत भयऊ ॥
समाचार सब दियो सुनाई। सम्मत कह्यो दोउ मुनिराई ॥
दो०-तहँ वशिष्ठ चारिहुँ कुँवर, लीन्हें आसु बुलाय।
रतन जाल की पालकी, दुलहन लिये चढ़ाय ॥
गाधि सुवन अरु आपहुँ आशू। चढ़ें एकरथ सहित हुलासू ॥
पंच सहस संग राजकुमारा। छरे छबीले तुरँग सवारा ॥
अगनित परिकर विविध नकीबा। चले संग बोलत जय जीवा
चारि चारु चामर अति चारू। करै कुँवर शीशन संचारू ॥
राकाचन्द्र छत्र छबि छाजे। मुर्छल विविध विशाल विराजे ॥
यहि विधि चारिहु कुंवर सुहाये। जनकभूप रनिवासहिं आये।
दूलह आवत सुनत सुनैना। कलश साजि लिये महिषि सुनैना
पठई मंगल हित अगवानी। गावत चली सुमंगल वानी ॥
द्वार देश महँ दूलह लीनी। देखि महाछवि आनन्द भीनीं ॥
मुकुट जड़ाऊ रतन के खासे। मुकुत्त झालरै झलक विलासे ॥
तनु नारंग रंग वर वागे। कटि फेटे अति सुन्दर लागे ॥

छहरति सुछवि छोर छै छोनी। मुक्तामणि माणिक अतिलोनी

दो०-परे परतले कंध में, जगत जवाहिर ज्योति।
हीरन की हारावली, हिमकर किरण उदोति।

लसत कंठ पन्नन के कंठे। मनु बुध बहुत रूपधरि बैंठे ॥
जुगलजुगल श्रुति जलज सुहाहीं। मनुउड़श्वेत श्याम घनमाहीं
भुज अंगद वर कड़े विराजै। मणि मंजीर कमल पद भ्राजै ॥

॥ प्रथम कंगन छोरण विधि ॥

❀ सिद्धावचन ❀

कंगन की बर गाँढ़ को, खोलहु लालजू।
प्यारी बदन विलोकत होहु निहालजू ॥
सरहज की मृदु वचन सुनत पुलकित भये।
कंगन खोलने के दिशि मन अरु दृग दये ॥
प्रथमदृष्टि परि नयन नयन नयना लगी।
कंगन पर दिये हाँथ हाँथ रस उर पगी ॥
कंगन खोले कौन सुद्धि नहिं देह है।
पिय प्यारी मन में मन हरण सनेह है ॥

॥ निध्याकरी वचन ॥

एहन होय सारंग जो तुम झटि तोरिदै।
सिय डोरन छोरन चित चोरन लाल हैं ॥
सिथिल भये पिय हाँथ साथ कंगन लसे।
चंचल दृग रतनार गाँठ पर नहिं बसे ॥

जनककिशोरी गोरी भोरी लाल को।
डोरी छोरि न जाय लषन मुख बाल को॥
पुलक अंग रोमांच लाल अद्‌भुत लसे।
सदा विहारी नेह प्रेम इन मन वसे॥

॥ इति मोहनी वचन ॥

की कंगन डोरी छोरहु चित थीर कै।
नाहि तो लेहु बुलाई बहिन कहँ बीर कै॥
सरहज हँसि हँसि कहँहिं सुनत खोलन लगे।
पुनि कर भूषण दृष्टि लगे तहई पगे॥
गाँठी कंगन कठिन छुटत नहिं प्रेम बस।
मन सकुचत गणपतिहिं निहोरत वारदश॥
कर कंपत झंपत विबिलोचन लाल कै।
छवि निहारि सब रानी गय निहाल भै॥
कोपर जल ढरकावत पूगीफल धरे।
छवि अद्‌भुत देखि सकल की मन हरे॥
रति रति नायक देखत चमर ढुरावहीं।
सो शोभा सुखसागर किमिकवि गावहीं॥
कर पर कर कहँ धरे बिबस मन ह्वै रहै।
कंपत कर संकत मन जब छोरन चहै॥
कंगन में अँगुरी अरुझे सरुझेन सो।
मानहु व्याल लरत शशि छाँह मराल सो।

॥ अथ मालिनी वचन ॥

कि कर जोरहु लाल कि खोलहु कंगना ।
धीरज धरि खोलि सकुचीं सब अँगना ॥
एहि विधि सकल कुअरि कंगन खोलत भये ।
तेहि अवसर भरि मंडप आनंद सुख छये ॥
महरानी मन मोद महासुख को कहे ।
बर दुलहिनि कहँ देखि जन्म को फल लहे ॥
राई लोन उतारहिं मंगल गावही ।
आरति सबहिं उतारति छवि मन भावहीं ॥
चारिहुँ दूलह अनुपम शोभा । देखि सकल नारिन मनलोभा ।
लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तिनका तोरहिं पलक निवारी
तहँ वशिष्ठ कौशिक मुनि आये । शतानन्दहूँ संग सिधाये ॥
औरहुँ विप्र बृन्द जुरि आये । पढ़न लगे स्वस्त्ययन सुहाये ।
आरती करि नीछावर कीन्हा।अतिअनन्द उमगसुख लीन्हा ॥
उतर पालकी ते वर चारी । अन्तःपुर कहँ चले सिधारी ॥
तेहिंअवसर लक्ष्मीनिधि आये। मिलि कुँवरन तिनसंग सिधाये
मंगल गान करत कलभामिनी । अर्घ्यदेत गवनी गज गामिनी
कौशिक शतानन्द गुरु तीनो। मंगल पढ़न प्रवेशहिं कीनो ॥
मंडप तर दूलह सब आये । मिली सिद्धि सखि मंडप भाये ॥
दो०-चारि चारु आसन अमल, बैठे दूलह चार ।
शतानन्द कौशिकहूँ गुरु, लगे करावन चार ॥

गौरि गनप पूजन करवाये । पुनि चारिहूँ वर वधुन बुलाये ।।
बरन बधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ।।
पुनि बैठाये आसन माहीं । सविधि कराये होम तहांहीं ।।
सकल चार चौथी कर कीन्हें । अन्तः पुरवासिन सुख दीन्हें ।।
तेहिं अवसर आयी महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ।
कहयो मुनिन सो वचन त्वराई । भयो असन अतिकाल महाई।
चौथी कृत्य शीघ्र करवाई । भोजन करै अवसि इन आई ।।
सूखी गये कुँवरन मुख कैसे । शरदा तप लहि सरसिज जैसे ।।
मुनि कह कृत्य भई विधि लाई । असन करावहु कुंवरन जाई।
तब रानी सब कुंवरन काहीं । असन करायो भौनहिं माहीं ।।
करि भोजन रघुकुल करचन्दा । बैठे आय चौक सानन्दा ।।
तहाँ सिद्धि लै सखी सिधारी । दीन्हों अतर पान सतकारी ।।
दो०-करजोरी कहयो लाल सो, सुनहु प्राणपति लाल ।
हमरे कुल की रीति यह, चलि आई सब काल ।।
चौथी छूटि जाति जिहिं बारा । तिहिंदिन होरी होत अपारा
दुलहिन दूलह सरहज सारी । होरी खेलहिं रंगन डारी ।।
ताते सजहु आप हित होरी । यह सुख देखन की रुचि मोरी ।
सिद्धि वचन सुनि कै सुख छायी । बोले मंजु बचन रघुराई ।।
जो जो रंग तुम्हें मनभावै । सो सो करिय न कछु रहि जाबै ।

।। चौठारी की होरी ।।

बहुरि चले रघुकुल मनी जहाँ होरी के कुन्ज ।
अवरख और अबीरकी लगी अनेकन पुन्ज ।।

रचना अतिविचित्र लखि रामलाल मनमोह।
अतर गुलाब अनेक रंग के अनेकन सोह ॥
पिचकारी के ढेर बहु सब रंग मनिमय चित्र।
और दमकला अमिति विधि देखहु परम विचित्र ॥
थाल अनेकन हैं धरे भो कसतुरीके छवि ऐन।
गने कवन कुँकुमा को सकुचत सारद वैन ॥
फूलन के छरी गेंद बहु जहाँ तहाँ धरे अपार।
जनु दशदिशि आनन्दकी फूली नव तरुवाग ॥
चोबा चंदन की बनी कुँड सुगन्ध अपार।
जहाँ तहाँ ड़लियन में भरे बहु फूलन के हार ॥
श्यामहि सखिन दिखायेउ फिर फिरहँ सत हँसाय।
परमानन्द मगन सब मोपे वरनि न जाय ॥
मध्य चौक मनिन सिहासन दुलहा दुलहिन हेत।
तहाँ बैठे प्रिय सिय सहित बहिनिन्ह प्रेम समेत॥
छत्र लिये कोऊ सखी चामर कोऊ करसोह।
ब्यजन लिये कोऊ सखी छबिरति मनमोह ॥
सुख सागर रघुवंश मनि बोले सिद्धा पाहि।
अब संकोच या महलमें तामें सुख कछु नाहि।
घूँघट में मुह ढ़ाकिके बैठी ननद तुम्हार।
कैसे खेलिहैं मम संग होली सुख सुकुमारि ॥
मंद विहसि सिद्धा कही है संकोच समाज।
है महान कुल में उचित यही रसिक सिरताज ॥

फिरि रउरे अनुकूल सब कोऊ मन बाहर नाहि ।
यह कहि वीरी ललित वरदई श्यामहि मुखमाहि ।।
गुल चालेउ पुनि मंद हंसी नैनन भरे सनेह ।
श्याम मनोहर वैन सुनि पुलकि पल्लवित देह ।।
बोले पुनि रघुलाल विहारी । सुनिये सरहज वर वैन हमारी ।
हम एक संग खेलहि रंग पिचकारी । देखै ननदै दसातुम्हारी।।
अरु मेरो मन हरन विनोदा । देखहि ननद तुम्हारि प्रमोदा ।।
रस में सब लज्जा मिट जाई । विहरहि मम संग तुमहि देखाई
घूँघूट में दुलहिन मुसकाही । अति अहलाद सो वरनि नजाही
तब तकि एक सखि पिचकारी । भरी लालरंग लालउर मारी
पीत वसन भये अरुन सुहाई । अति छविमय सो वरनि नजाई
मंद विहसि बोले रघुराई । यह छल भयो अनींत कहाई ।।
नीति यह जो भरी पिचकारी । खड़े होहि हम तुमहि प्रचारी
तब तुम मन भावत रंग धरहु। हार जीत कहँ तबहि विचारहु
सो०-चन्द्रानन चहुँ ओर लिये फूल गेदा ललित ।
मध्य किशोरी किशोर फुल गेंदा खेलन लगे ।
विविध फूल के हार पिय प्यारी पहिने दोउ ।
लज्जित तन रतिमार कसकत फूलन के लगे ।
नख निष भूषण फूल फुले खड़े सनेह में ।
निरखि नैन अलिभूल सकल प्रियन के एकरस।
फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।

करि करि सकल विवेक हास कलाजुत खेलही ।
उड़ी अलि अतर लगइ पिया पिया के हाथ से ॥

॥ होरी खेल ॥

अस कहि उठे लाल रघुराई लगी होन होरी सुखदाई ।
गावहि सखी मनोहर गीता चलत पिचका परमपूनीता ।
अतर अबीर उड़े चहुओरी नचै सखी सब कंधनजोरी ।
नूपुर की धुनि वरनि न जाई यन्त्र बजत सों अधिकसोहाई।
जाल रन्ध्रपुर जुवतिन देखी लखि छवि अतिसुख भयेविशेषी
फूलन गेद चले चहुओरा दोउ दिशि हर्ष प्रेम नहि थोरा ।
चोवा चंदन पकरि लगावै नाचन चावहि ताल वजावहि ।
चलत कुँकुमा अतिहि परस्पर जगमगाइ गयो सब होलीभरे।
सकुच त्यागि सब जनकदुलारी कछु कुँकुमा चलाइ उरमारी
रघुनन्दन भरि भरि पिचकारी तकितकि उरज लाड़िलीमारी
घूघुट ओट विहसि मुखमोरी मारी पिचका जनककिशोरी ।
येहि विविधि करि अनेकन लीला रामश्याम सुन्दर मृदुशीला
तेहि अवसर रघुनन्दन कुंकुमा लै कपोल तकि मारी ।
लखि तेहि कोरी राजकिशोरी लै झोरी उठि दौरी ।
मूठिन चपल गुलाल चलावति घेर लियो चहु ओरी ।
ललकोरे पुनि रघुनन्दन को बहु कुंकुमा पमारी ।
कोउ के भुज कोउके कपोल तकि कोउ के कुच विच मारी।
मूठिन प्रति मूठी चलाइ के चमकहि चपला कुमारीं ।

चहल पहल भो राजमहल में छाई अबीर अधियारी।
कोहो होरी ओहो होरी बोलहि सब हो हो होरी।
गावनवारी गावन लागी दै दै हाथ हथेरी।
लखि कौतुक छज्जन ते छाड़े केशर रंग पिचकारी॥
राजकुमर कुँकुमनि चलावै पिचकारी सुकुमारी।
निज पराय लखि न परै काहू की मची धूम धुधकारी
तब रघुनन्दन सिद्धि वदन महँ दौरि मलेउ मृदुरोरी।
सो अति चपल लपटि लालन को लाल गुलाल मलोरी
भीजी पागै लटपट बागै लपटि सो अंगन लागै।
रंगी अबीर अनोखी अलकै हलकै कुँडल आगे।
परसि कपोल रामलाल को प्रेम मगन में प्यारी।
वार वार पट सो मुख पोछति करति प्रान बलिहारी।
लखि प्रसन्नमुख पान पवावति सरहज प्रान पियारी।

दो०-रंगमय वसन उतारि सब पहिरे श्रीरघुवीर।
परम मनोहर मनिन मई नाना भूषन चीर॥
सब सरहज गई कुज में नवल सिंगार बनाय।
कुमरिन कहँ लै आयेउ दइ पिया ढिग बैठाय।
सब सखियन मिलि गाइ पुनि सजि सब अंग अनूप।
पुनि आई नन्दोइ ढिग निरखति मधुर स्वरूप॥
परम ललित वीरी दई लालन मुख करि रंज।
बहु उपमा को भवन भो मुख दोउ करकन्ज॥

पुनि उर अतर लगाय के मंद विहँसि श्रीरघुलाल।
याह छवि परम अनूप लखि काम रति उर शाल ॥

॥ सिद्धाजी के साथ होरी ॥

हमहिं कहौ तौ वाहर जाई। होरी वसन पहिरि सब भाई ॥
नर्म सखन लै अपने संगा। आवैं करन फाग रस रंगा ॥
कही सिद्धि यह भली विचारी। सजि आबहु करि फागुतैयारी
हम देखब बल सकल तिहारे। जैहौ जनवासे हठि हारे ॥
उठें लाल सब वन्धु समेतू। बाहर आये रघुकुल केतू ॥
भवन जाय सब सखन बुलाये। होरी होन हाल सब गाये ॥
नर्म सखा सुनि भरे उमंगा। सजै श्वेत अम्बर सब अंगा ॥

॥ सवैया ॥

फेंटे कसे कटि में चटकीलो मजीले महीप लला हैं अनोखे।
चौलड़े त्यों मुक्ताहल माल सुता राबली छवि छीने अनोखे।
खेलन फाग सजे रघुराज सुराज कुमार महाचित चोखे।
अंगनि अंग उमंग भरे निज जोहत होत अनंग के धोखे।

दो०-होरी मन्दिर में उतै, सिद्धि सजाई साज।
लै सीता सँग गवन किय, संयुत सखिन समाज।

छं०-भरि भरि झोरी करलै रोरी राजकिशोरी गोरी।
उठी भई सिद्धी के आगे पिय सँग खेलन होरी ॥
सिद्धि समीप महीप सुता सब चहुँदिशि मंडल कीने।
महल महोदधि ते मनु निकसे कोटिन चन्द नवीने ॥

पुनि तहँ सिद्धी कुँवरि बुलाई आई गावनि वारी ।
जिनकी ताने परत सुकाने सुरतिय मानै हारी ।।
झाँझ मृदंग शंख सहनाई वीणावेणु सितारैं ।
जल तरंग मुरचंग उमगहु बाजै सब एक बारै ।।
लाल रिझावन काम जिवावन वाम सुगावन लागी ।
सुनि तियरंगी फाग उमंगी हृदय रंगरस जागी ।।
मृदु मुसक्याय खाय मुखवीरी सखियन ओर निहारी।
ठाढ़ भई होरी खेलन को लक्ष्मीनिधि की प्यारी ।।
बोली चन्द्रकला विमला सो तुम नरहो मुद होरी ।
नृप लालन मारी गुलाल नहिं गही लहै बरजोरी ।।

॥ सिद्धि के साथ होरी है ॥

गोरी एक ठौरी सबै, लै लै झोरी वाम रहियो तैयारी ।
अली झुंड बाँधी तत्काली चली जहाँ लाल सुखधाम ।।
अगर कपुर और कस्तुरी । केसर अंग राग अति रुरी ।।
कमला लिय विमल कर सोहै । अति आसक्त लाल तनजोहै ।।
यहि विविधि वस्तु सुख दाई । सरहज रुख सहचरि लै आई ।
लगि होन मंगल बहुगाना । बजन लगे बाजन विधि नाना ।।
इत रघुनन्दन अनुज सखन युत सुन्यो सिद्धि दिशि गानै ।
सुघर सेवकन सपदि बोलाये, जे कलगान सुजानै ।।
मुरलि मुचंग मृदंग मंजीरन में मिलाय सुर दीने ।
दै दै तारिन गाइ धमारिन मतवारी तिय कीने ।।

चलत लाल के सखा अनुज सब मंडल बाँध सिधाये ।
अति हुलसे विलसे दिलसे रस फन्दहिं से तहँ आये ।।
उत सुन्दरी घमंडभरी सब रिधि सिद्धी करि भाइयीं ।
दमकिदमकि दामिनि सो कामिनि गजगामिनि उठि धायी ।
चंचल नैनी चितवनि पैनी मुददैनी पिक बैनी ।
राजकुमारहिं रूप रिझैनी नैनी दरप दरैनी ।।
लिये गुलाल उताल बाल सब, लाल समीप सिधारी ।
चितैं रहै मुखचन्द लाल को तन मन योवन वारी ।।
तेहिं औसर एकसखा कुमकुमा कोलै कपोल तकिभारी ।
लखि तेहिं गोरी राजकिशोरी लै झोरी उटि दौरी ।।
मूठिन चपल गुलाल चलावति घेरि लियो चहुँओरी ।
ललकारे पुनि लखन सखन प्रति बहु कुमकुमनि पवारे।।
कोउ के भुज कोउ के कपोल तकि कोउके कुच बिचसारी ।
मूठिन प्रति मूठिन चलाय कै चमकहिं चपल कुमारी ।।
चहल पहल भो राज महल में भय अबीर अँधियारी ।
निरखन आयी नगर नागरी ते चढ़ि सबैं अटारी ।
लखि कौतुक छज्जन ते छाड़े केशर रँग पिचकारी ।।
राजकुँवर कुम कुमनि चलावैं पिचकारी सुकुमारी ।।
रंगनि सनीधुन्ध पाटानी दरसी कछुक उजेरी ।
तब रघुनन्दन सिद्धि वदन महँ दौरि मल्यो मृदुरोरी ।।
सोई अति अपरया लालन को गाल गुलाल मलोरीं ।
चन्द्रावती मुखचन्द्र चितै पुनि रिपुहन परम खेलारी ।।

झपटि लपटि रोरी मुखमारयो करनहिं छाड़यो प्यारी।
सोउ चित चंचल चपल चातुरी आतुरि नवल नवेली।
रिपुसूदन दृग अंजन दीन्ही मलि कपोल अलबेली॥
इत रघुवर के सखा छवीले, उत सब राजकुमारी।
अविर गुलाल रंग पिचकारिन मची महल में रारी॥
हेलि मेलि सों झेलपेल सो खेले खेल खिलारी।
नेकन रुकै चुकै नहिं, मूठी करहिं मार पर मारी॥
ललकारयौ पुनि अलिन लाड़िली ते खुलि खेलन लागी
एक-एक गोरी सौसौ झोरी मूठि करोरन तकि मारी॥
को केहिं बूझै एकन सूझै अस छाई अँधियारी।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चन्द्रिका तेउ न छिपी छिपाई॥
सिद्धि कुँवरि तब रामकुंवर को लियो तुरत पहिचानी।
चूमि कपोल अमोल महल में गइ लिवाय गहिपानी॥
सारीं सुभग ओढ़ाय लाल को घूंघट दियो बनायी।
सिय समीप बैठाय सलोनी बोली बात छिपायीं॥
सियनइ दुलहिन आई है यह काहु न परीं चिन्हारीं।
होरीं कौतुक देखन आयीं भूलि परीं इत प्यारीं॥
बड़ी लजोरिन घुंघट खोलति बोलतिहुँ सकुचाई।
राखेहुँ अपने पास लाड़िलीं नहिं कहुँजाइ भुलाई॥
सिद्धि कह्यौ सब राजकुमारिन बंद करो अब होरीं।
करहु न रारीं भो श्रम भारीं सब मन काम फलोरीं॥

अस जिय जाकी गति मनसा की तस ताकी मति पाकी ।
नृपति सुता की मौज मजाकी रहि नहि अब कछु वाकी ।।
सुख सो ह्वै हैं सिद्धि महल में वीस विसे रघुराई ।
सबसे पहिले सिद्धि सिधारी जहँ श्रीजनकदुलारी ।।
मधि में पट परदा करि दीन्हीं बाहर अवध बिहारी ।
गोल कपोल पोछ अंचल ते ऐचि लियो अँग सारी ।।
भूषण वसन साजि बैठायो पान खवायो प्यारी ।
तेहि छिन गये भरत रिपुसूदन लखन सखन सँग ठाने ।।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चितै कै नैन चकोर जुड़ाने ।
लखन कह्यो पुनि सिद्धि कुंवरि ते तुमसब विधि सुखदाई
देहु रजाय करहिं अब मज्जन सखन सहित रघुराई ।
सिद्धि कह्यो फगुआ बिन लीन्हें नहि मनिहैं सुकुमारी ।
सुनि सरहज के बचन रंगीले बोले अवध बिहारी ।।
यह सब राज समाज साज जुत हम तुम्हार बढ़ि प्यारी ।
भूषण बसन बात यह केती लेहिं सबै सुकुमारी ।।
अस कहि नैन सैन दिये रघुवर लखन सुचैन सुभाये ।
विविध निचोल अमोल आभूषण वहुत निडोल मँगाये ।।
जानि लाल रूख सिद्धि कुंवरि के सब समीप धरि दीने ।
राजकुमारी सब प्यारी प्रति पठयो सिविरि सुखमाने ।।
तेहि अवसर सिरताज तियन की जनकराज की रानी ।
एक सखी तहँ तुरत पठाई जहँ श्रीनिधि की प्यारी ।।

चारिहुँ कुवर तुरत नहवाबो भो अब बहुत प्रयासू ।
दोउ कर कमल जोरि रघुवर सो बोली मृदु मुसुकाई ।।
अब रघुनन्दन मज्जन कीजै बंधुन सहित बिहारी ।
यह सुनि तुरत उठे रघुनन्दन अनुज सखन युत प्यारे ।।
सुरभि सलिल महँ मज्जन करिकै सासु समीप सिधारे ।
पुनि थारिन मह वहु परकार के विंजन परुसन लागी ।।
जेवत जानि सखन युत रामहि बोलि अति सुखपागी ।।
कहहु तात होरी किमि खेल्यो केहि विधि भयो हुलासु ।
बार बार दुलारि राम को पुछति सब रनिवासु ।।
उतरन देत सकुचि रघुनन्दन लखन कह्यो तब वैन ।
होंरी सुख रावरे महल को देवहु वरनि सकैन ।।
दई अचै वीरी मुख दीन्हें सेवक दियो पोसाके ।
पहिरे चारो कुँवर रंगीले छैल छबीले बांके ।।
सखन सहित सिरनाय सासु पद पाय अशीष वहोरी ।
हरषित आये सिद्धि महल में जहँ सब राजकिशोरी ।।
सब सुकुमारी सिद्धि कुमारी देखि उठी सुख बाढ़ी ।
बैठारे अपने समीप में होत विनोदहिं गाढ़ी ।।

।। शयन कोहबर में है ।।

दो०-तब दुलहिन सब चलि, शयन कुन्ज अति प्रीति ।
मरि अनुराग को कहै, गाय कबि मिलत न रीति ।
कोहबर मधि जहाँ द्वार है, सब कुँअरि ठाढ़ी तहाँ ।
भीतर कुंजन जाति लालन बैठे हैं जहाँ ।।

सखिअन बहुत बुझाइ लाल संकोच मिटाई।
निज-निज पति ढ़िगगई कुँअरिन सब हरषाई।

॥ कवित्त ॥

कोठा पर जाय पिया सेज पर विराजे,
सिया प्यारीजू न सेज पर जाति सकुचाइ के।
कोहबर द्वार कुंअरि ठाढ़ि जहाँ,
सिद्धि कुमारी बात कहे समुझाय के॥
शुभ दिन आज यदि संग में न सोबो,
तो भी चरण छुवावो, सेज सगुन मनाय के।
फेरि मेरे संग चलु, सोउँ तहाँ कुँज प्यारे,
रुचिर अनुहारी सेज राखिहै लजाइ के॥

॥ दशरथजी की होली ॥

॥ छप्पय ॥

धनुष जज्ञ जहँ भइ तहाँ बरफ रसक रामे।
दशरथ नृपहिं बोलाइ तहाँ सादर बैठाये।
निज समाज युत महाराज दशरथ तहँ सोहैं।
एक दिशि जनक नरेश लसे सुसमाज बनो है।
पुर नारी रणि बाँस युत महल चतुर दिशि राजहीं।
सब पुर के आये तहाँ बाजन नाना बाज हीं।
नृत्य अमित बिधि होन लगी सब गुणिगण आये।
उडन लगे अबरख अबिर चहुबोर सोहाये।

पिचकारी दमकला चलत चहुबोर सोहावन।
नभते सुरगण लगे पुष्प अंजलि बरसावन।
एक पहर होरी भइ दोउ दिशि परमानन्द भये।
अमित रत्नमणि द्रब्य बहु जनक राय दशरथ दये।
सभकी भई सलाह चलिए कमला अश्नाना।
उठे राम दोउ सब समाज युत कीन्ह पयाना।
मग में रंग अमित प्रकार के बरसन लागे।
पुर नभ लौ आनन्द देखि सबहि अनुरागे।
कमला तट की को कहे जलमें जो उत्सव भई।
सारद शेस न कहि सके यह बिहार अद्भुत नई।
करि अश्नान सुदान देइ दोउ राम सिधाये।
दशरथ गै जनवास जनक निज मन्दिर आये।
पुत्र दमादन सहित अमित बिधि भोजन कीन्हा।
निरषि रामछवि श्याम राम वांछित फल लिन्हा।
बहुरि आचमन करि सकल पान अत्तर वर पाइके।
निज निज थल सबही गये प्रेमानन्द अघाइ के।

॥ राम कलेवा ॥

भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये।
सुनिके पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये।
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेसू।
गवनहु तात तुरत जनवासे जाह श्रीअवध नरेशू।

बिनय सुनाय राय दशरथ सोपाय रजाय सचेतू ।
आनहु चारिहुँ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरे उरमोद उमङ्गा ।
सखन समेत मन्द हँसि गवने चढ़िचढ़ि चपल तुरङ्गा ॥
सखन सहित तह उतरि तुरंग ते मिथिलापति के वारे ।
चारिहुँ सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुख निधि लक्ष्मीनिधि को लखि सखन सहित सतकारे।
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिछिन सानुज निरखि राम छबि सखन सहित सुखसाने ।
लक्ष्मीनिधि मुख दरश पाय के रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल वैन उचारे ।
करन कलेऊ हेतु पठाओ चारिहुँ राजदुलारे ॥
सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ।
चारिहु कुंवर बुलाय बेगहीं बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगर की जान तैयारी सेवक सब मुख पागे ।
निजनिज प्रभुहिं सवाँरन लागे लैभूषण वर वागे ।,
रघूनन्दन शिर पाग जरक सी लसी श्रिभङ्गी बाँधी ।
तिमि नौरङ्गी झुकी कलंगी रुचि–रुचि पैं जनु साधी ॥
कनक कलित अति ललित मणिन की मंजुल मोर विराजी ।
सिंधुर मणि के सजे सेहरा जोहि होत मनराजी ॥
ताके कोर कोर चहुँओर मिलगी रतन की पाती ।
जगमग ज्योति होत चहुँदिशि ते लखि अखियान झपाती ॥

कुण्डल लोलै हलै कपोले लगी अमोलै मोती ।
जेवदार जगमगहि जड़ाऊ युगल जंजीरन जोती ।।
जालिम जोर जोहरी जुल्फै युवतिन जीवन हारी ।
छूटी झलकैं चहुदिशि मनहुँ मपन तरवारी ।।
रत नारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखे ।
रसवारी वरवस वसकारी प्यारी आनन राखे ।।
अति अवरंगी तिररस रङ्गी चढ़ी त्रिमङ्गी भोहें ।
मनहुँ मदन के युगधनु सोहैं जोइ जोहें सोइ मोहैं ।।
तिलक रसाल विशाल भाल पर किमि वरणों छवि ताको ।
जनु नवधन पर रीझि दामिनी नेमलियो थिरताको ।।
अरुण अधर बिच दामिनि दुति दमके दशननि पाँती ।
सनमुख मुखकरि जेहि दिशि वोले अजब छटाछहराती ।।
जगमगात अति श्यामगात पर जरब जरनि को जामा ।
ताके कोर-२ चहुँओर निगुथे रतनमणि ग्रामा ।।
पीत सुफेटा सुछबि सपेटा कमर लपेटा राजे ।
नवल पटू को करन लटूको कन्धपटू को भ्राजे ।।
छोरन लगीं करोरन मोती कोरन लगी किनारी ।
अतिशय हलकै लगे न पलके लखि ललके सुरनारी ।।
सिंधुर मणि के परे चौलड़े मणि न माल बहुसोहें ।
कठुला कण्ठ बिजापठ बाहन देखत ही मनमोहें ।।
दो०-वरणि सकै को राम को अनुपम दूलह वेष ।
जेहि लखि शिव सदकादिको, रहतन तनहि सरेख ।।

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारों राजदुलारे ।
बड़े उमङ्गन चढ़े तुरंगन अङ्गन वसन सँवारे ।।
जो रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभुकहँ प्राण प्यारे ।
चढ़े तुरंग संगते गमने राम रंग मतवारे ।।
बोले चोप दार ले मामे निज-निज युक्ति अलापे ।
चंचल चमर चले दुहुँदिशि ते छत्रसखा सिरढापे ।।
राम वाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं ।
चंचल वागे किये तुरंग की बात करत मन मोहें ।।
जगवन्दन जेहि नाम जाहिरौ रघुनन्दन को बाजी ।
ताको गुणछवि कहँ लौं वरणों जोहि होत मनराजी ।।
इमि मग होत विलास विविध विधि बिपुल वाजने बाजे
सुनन नकीव पुकार नगर तिय कढ़ि बैठी दरवाजे ।।
कोउतिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमासो पागी
भरी सनेह देह सुधि नाही राम रूप अनुरागी ।।
कोउ घूंघट पट खोलि सुन्दरी लै पानी ।
देखत दूलह रूप राम को आनन्द सिंधु समानी ।।
दो०-कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुख पागि ।
मधुरी मूरति में पगीं, निज सूरति सुख त्यागि ।।
कोउ रघुनन्दन छबि विलोकि कै बोली सुनसखि वैन ।
राजकुमार सब करन कलेऊ जात जनक के ऐना ।।
छं०-बोली अपर सखी सुनु सजनी भलीबात बनि आई ।
हमहुँ चले सब जनक महल को हँसिये इन्हे हँसाई ।।

तुरंग नचावत मग छवि छावत बाजत विपुल नगारे।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पग धारे ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सवारे।
राजकुंवर रघुवंशिन के तह ठाढ़ भये मतबारे ॥
चोपदार जाँगरे अलापे बहुविधि नौवत बाजै।
फहरे विपुल निशान जरीके नवगयन्द गजराजै ॥
तेहि छिन तहाँ गये रघनन्दन मन फन्दन वरुवेषा।
देखत उठी सकल रनिवासे रह्यो न तनहि सरोषा ॥
करि आरती वारिमणि भूषण सादर पाँय पखारे।
चारि रंग के चार सिहासन चारहु वर बैठारे ॥
पुनि करजोरि राम सो रानी बोली अति मृदु मोई।
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहुँ राजदुलारे।
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निजकर पाँय पखारे ॥
रचना अधिक मखमलि तापर जाजिम बैठारे सबभाई
कञ्चन थारी मृदुल सोहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरुप भुप सुत जेंवत पवन डुलावै सासु।
बुझि बुझि रुचि व्यंजन परसे वरणि न जाय हुलासु।
स्वाद सराहि पाय पुनि अंचये सखियन पान खवाये।
बैठे पहिरि पोशाक सखनयुत विविध सुगन्ध लगाये ॥
दो०-राजऐन, सब चैन युत, राजे राजकुमार।
जिनको हांस विलास लखि, लाजहि लाखन मार ॥

॥ दूसरा दिन का कलेऊ ॥

६०-व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्याइ कै।
मुख सरोज युत ल्याय परोसे आय कै॥
मेवा मिश्री युत हविष्य मणि थारन ल्याई।
सरहज सब निजकर सरोज ते धरि यकठाँई॥
बहुरि अमित पकवान थार सहचरि ले आई।
लाई बहुरि मलाई अपर सब तरह मिठाई॥
ललित कटोरन में धरे दधि भाजनहिं बनाइ कै।
सब दुलहन को कहत भई पावहु प्रेम अघाइ कै॥
पावत कोउ नाहीं सरहज मन में अनुमानी।
दीन्ह अमित मणि रत्न नेग मन में सुखमानी॥
लगे जेवने सब कुमार सब कुँवरि सहीता।
मृदु कहि सबहिं हँसाइ देति रघुवर अरुसीता॥
यहि विधि भोजन करि अभिरामा।
किय आचमन बन्धु युत रामा॥
उठि चामि करार चौकिन जाई।
दैय मुख वीरा सुख पाई॥
कुशध्वज नन्दन प्रिया निध्या जेहिकर नाम है।
सन्मुख बैठी श्याम के प्रेम भरी छबि धाम है॥
चली हाँस की वयन लाल तुम काको जायो।
कौशिल्या है गौर राय पुनि गौर सुहायो॥
तुमको देखत श्याम ताहि ते शंका आई।
लक्ष्मण काहे गौर श्याम तुम देहु बुझाई॥

मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहात है ।
मातु पिता तबे गौर है यह परपंच देखात है।।
दुइ दुलहिन है श्याम राम कहि मृदु मुसकाने ।
सुनहुँ कुँअरि अब श्याम हेतु हम सत्य बखाने ।।
है शृंगार को श्याम रंग शृंगार रुप हम ।
ताते मेरो अंग श्याम छबि धाम काम सम ।।
निध्या पुनि वोलति भईहै परत्व पुनि गौर को ।
श्याम जहाँ मौहित रहें तुम आयो इत दौरि को।।
सुनहु कौन मकरंद हित मधुपहिं कौन बोलाई ।
भ्रमर आपने आवई जहँ सुगन्ध रस छाई ।।
सुनि सरहज रस मर्म को फूली हिय अरबिन्द ।
सबके मन अति मोद भई ताकति मुख रघुनन्दन ।।

।। श्रीसिद्धि सदनमें राम कलेवा ।।

तेहि अवसर सुधि पाय सखी युत लक्ष्मीनिधि की नारी ।
नाम सिद्धि परसिद्धि जासु गुण रूप शील उजियारी ।।
अति गुणवान निधान रूप की सव विधि सुभग सयानी ।
लक्ष्मीनिधि की प्राण पियारी निमिकुल की महरानी ।।
अलबेली सरहज अति प्यारी बड़ी सनेह शृंगारी ।
प्रीतम प्रीति निवाहन हारी रामरूप रिझवारी ।।
चंचल चखत चहुदिशि चितवति देखन को अतुराई ।
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई ।।

निरखि वदन अरविन्द लिए कर विहँसत मन्दिर सोहै।
रामकुँवर को पकर लाड़िली बोली ताकि तिरछोहै॥
ए चितचोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमरि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे॥
उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई।
तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमार अवाई॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई॥
सुनत राम के बचन लाड़िली बोली मृदु मुस्काई।
तुम्हरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई॥
सासु सुनैना के समीप महँ देत जबाब बनै ना।
पाणि पकर रघुनन्दनजी को गई लवाइ निज ऐना।
चारि सिंहासन दे तहँ आसन भरीं हुलासन प्यारी।
बारहिं बार निहार बदन छवि बहु आरती उतारी॥
मेलि सुकंठ मालती माला बसननि अतर लगायो।
अंचल सो मुख पोछि दुलह को निजकर पान खवायो।
कोउ उपंग मुरचंग मिलावै दै मृदंग मुख थापै।
कोउ लै वीण नवीन सुरन ते मनहुँ बसीकर जापै॥
कोउ मृगनयनी कोकिल बैनी पञ्चमगीत अलापै।
परत कानमें मधुर तान जेहि विरहिनके जियकाँपै॥
जे निमिराज नेवत सुनि आई कोटिन राजकुमारी।
राम मिलन की बड़ी लालसा कहि न सकै सुकुमारी॥

अति निरदूषन भूषित कंजन कैसी बनी नवेली ।
रूपशील गुणवान रंगीली राजकुँवर अलबेली ।।
जानहिं प्रीति रीति की बाते केलिन कुशल नवेली ।
जिन जोहत मुनिजन मन मोहत मनहुँ मदन की चेली ।
जिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहुभाई ।
तुरतहि पहुची सबहीं प्यारी जानि समय सुखदाई ।।
देखन राजकुँवर सव आई राम दरस की प्यारी ।
अति सनमान कियो सबही को सिद्धिसदन सुखकारी ।।
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकै मुख पर छूटी ।
जोहत जहर चढ़त युवतिन को जड़ीन लागत बूटी ।।
मन्द हँसनि जनु फँसनि लाल को भोह कसति गरवीली
अतिसुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ।
तहँ प्यारी गारी रघुवर को देन दिवावन लागी ।।
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ।
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइजायो ।।
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई ।
एक बात तुमसो हम पूछत लालन राखहु गोई ।।
होत ब्याह सम्बन्ध सबन को अपने जातहिं माहीं ।
निज बहिनी श्रृंगी ऋषि को तुम कैसे दियो बिवाही ।।
की उनको सुनीश लैं भागयो कै वोइ मुनि संगलाजी ।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ।।

लखन कह्यो यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखदीना
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना ।।
कहँ हम राजकुंवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी ।
भयो हमार व्याह तुमरे घर विधि गति गनै को भागी ।।
औरो एक हास उरआवै अचरज है सब काहू ।
तुमतो हो सिद्धि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि कस ब्याहू ।।
एक सखी कह सुनहु लालजी तुम्हें सकै को जीती ।
जाहिर अहैं सकल जगमाहीं तुमरे घर की रीती ।।
अति उदार करतूति दार सब अवधपुरी की बामा ।
खीर खाय पैदा सुत करती पतिकर कछु नहि कामा ।।
सखी बचन सुनतै रघुनन्दन बोले मृदु मुस्काते ।
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बाते ।।
कोउ नहि जनमें मातु पिता बिनु बंधी बेद की नीती ।
तुमरे तो महि ते सब उपजे अस हमरे नहिं कहैती ।।
वोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी ।
सिद्धि कुंवर की नन्द सुप्यारी लक्ष्मीनिधि की दुलारी ।
लरिकाई ते रह्योलालजी तुम यसिन संग माहीं ।
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ।।
की मुनि नारिन के संग सीखे की निज भगिनी पासे ।
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहि भासे ।।
बोले भरत भली कह सजनी तुम्हु तो अवै कुमारी ।
वर्णहु पुरुष संग की बाते सो कहँ सीखे दुलारी ।।

रहे मुनिन संग ज्ञान सिखन को सो सब सिखे सिखाये ।
कामिनि काम कला अब सीखन हम तुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुमने वखानो ।
तुम्हरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानो ॥
भरत कहत तुम साँची कहत हौ हम साधु परकाजी ।
ऐसी सेवा करो कामिनी जासो हो मनराजी ॥
आये ऐन अपूरब योगी अस निजमन गुणि लीजै ।
अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहिं पुजन कीजै ॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ।
मख राखन को गये कुँवर ये तहँ हम यह सुधि पाई ॥
इन्ह कहँ सुन्दर देखि कामवश त्रिया ताड़का आई ।
सो करतूति न भइ लालन सो मारेहु तेहि खिसिआई ॥
वोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ।
जो करतूति बने नहि इनते सो हम से भरि लीजै ॥
बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो ब्याहू ।
यो पछि ताव न राखो प्यारी अब करि लेहु समाहू ॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावत सो मति करहु उपाई ।
वैसीनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारहु भाई ॥
सुनि बानि रिपुदमन लाल की बोलि कोउ सुकुमारी ।
कहँ पाई ऐसी चतुराई कहिये लाल बिचारी ॥
की कहूँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन संग कीने ।
तीनो भाइन ते तुम्हरे महँ लखियत चिन्ह नवीने ॥

रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहि जाने ।
गणिका नारिनहूँ ते सौगुण तुम्हें अधिक हम माने ।।
हमरो तुम्हरो चिन्ह लाड़िली एकै भाँति लखाई ।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चहिए अवसि सगाई ।।
सुनि नवयुक्ति युक्ति की बाते बोली सिद्धि कुमारी ।
सुनिए रसिकराय रघुनन्दन आनन्द कन्द बिहारी ।।
अति अभिराम कामहूँ मोहत मूरति देखि तुम्हारी ।
कैसे बची होयगीं तुमसे अवधपुरी की नारी ।।
यो कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुख ऐना ।
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु बैन ।।
अनुचित उचित बिचरि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ।
तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ ।।
यह सुनि भरत लखन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ भई सुखारी ।।
यहि विधि हँसि हँसाय रघुवर सोंदे दिवाय मृदु गारी ।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगी करन सुकुमारी ।।
रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी ।
जस जाके जिय रही लालसा तस तेहिके रुचि राखी ।।
अवधपुरी दिलदार यार सों लगीं अलिन बिच प्यारी ।
परबस परी प्रेम पिंजरा में उड़ि न सकति सुकुमारी ।।
रघनन्दन तब कह्यो सिद्धि सों जो तुम देहु निदेशू ।
तो अब हम गवने जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू ।।

सिद्धि सहित सबहीं सुकुमारी प्रेम सकै को भाषी ।।
चतुर कुँअर कोहबर गये, मन अहलाद बढ़ाय ।
पुर कन्या सारी जिती, गई कोहवर हरषाय ।।
दो०-कुँअर तहाँहि सबहीं कहि कहि बचन अनेक ।
सो सुख सजहि सोक हे, कहत बनत नहि येक ।।

।। छप्पय ।।

माता सब कुअरिन पवाई अचवाई सप्रीती ।
सषि सब सेवालहिं जवन सब दीन की रीतौ ।।
पान अतर सखि दीन्ह जननी अज्ञा कहँ पाई ।
चदर वोढ़ि अनूप शीस नव लो छविछाई ।।
षष्ट अष्ट षोडस सकल सजि समाज प्रमुदित अली ।
लक्षण भई अभिसार की हर्षितमन कोहबर चली ।।
अर्धराह में मिली सकल भोजाई प्रेमी ।
सिय मुख शसि के जो चकोरि दर्शन के नेमी ।।
सब कोहवर महँ जाई बैठीं गई निज निज आसन ।
मोहति रति अति काम नवल पिय हैरि विलासन ।।
श्रुति कीरति अरु मांडवी चारुशिलादिक कुंअरि सब ।
निज महलनिते आयऊ अति छबि भई कोहवरि तब ।।
सविधि बैठि गई सकल महल अदभुत छवि भयऊ ।
निज निज भवन मगन सबे मनमोदिन छयऊ ।।
सिद्धा कहि सबहीं सुनाई अति कोमल बानी ।
चलहु कुंअर सब अपनि कुन्ज उर्मिल संग सोहहीं ।।

भरत गये निज कुँज में संग माण्डवी सोहही ।
षष्ट अष्ट षोड़स सकल संग लसत मनमोहही ।।
लखन गये निज कुज अर्मिला संग बिराजे ।
सखियन की तह भीर सकल सेवा कह साजे ।।
रिपुसूदन श्रुति किरति संग निज कुन्ज गये है ।
सोभा कुन्ज निहारि फलि हिय बेलि नये है ।।
रामकुअर कुअरिन सहित गये कुन्ज सुख पाइ के ।
पुरकन्या निज घर गई युगल चरण मनलाइ के ।।
सरहज सव गई आपनि गेह कोहबर सुख पाई ।
कोहबर केर निकुंज मुदित बैठ रघुराई ।।
प्रिया सब लसहि समीप मोहनी रूप सोहावन ।
कोटि काम को काँति राम कुअरिन मनभावन ।।
सखियन विनय जनायऊ चलिये लालजी सेजवर ।
प्रिया संग तहँ बिहारिये यह तो युगल बिहार घर ।।
सखि तहँ अगनित यूक्ति भेद करि लाड़ लड़ाई ।
बिबिध भाँति रस को बढ़ाई कुअरिनि विहारई ।।
सज्जा सव की भीन्न भीन्न सुख अैन वनी हैं ।
कोमल अतिमान छविमान दिब्य सुभग गंध बनी है ।
तहँ कुअरि मन भावति लालसंग बहु सुख करे ।
रूप अनूप देखाई के कुअरिन लालन मनहरे ।
दो०-एहि विधि विहरत लालजी सकल प्रियनके संग ।
जालरंध्र सखि निरखहीं, क्रीड़ा नाना रंग ।।

तहँ की सकल विलास सुख, जानहि प्रिया अरुलाल।
दृष्टि भोग सहचरि करे, पुनि पुनि होत निहाल ॥
दुतिये रात है ब्याह की, लीला ललित अनन्त।
कुअँरि कुअंर विहार वर, सुखरस मिलत न अंत ॥

शेषचारि घटिका निशि जानि। मंगला चारत दृगसुआनि ॥
मदनकलादम्पति रुपनिहारी। भरहि दृगनमह कर बलिहारी
अगर कपुर और कस्तुरी। केशर अंग राग अति रुरी ॥
कमला लिय विमलकरसोहै। अति आशक्त लाल तन जोहै ॥
अनुपमभूषण वसनलिये हावन। चन्द्रकलाकर लिये मनभावन
यहि विधि विविध वस्तु सुहाई। सरहज रुख सहचरि लैआई
लगि होन मंगल बहुगाना। बजन लगे बाजन विधि नाना ॥
सब दुलहा सखि संग आई। सबके मनहि मोद समाई ॥
सिद्धा कहि सुनहु रघुराई। आपन नेग लेहु मनभाई ॥
उपटन मोहि लगावन देहु। कोहबर किस वरिति करेहु ॥
मणि थारन मणिमुक्ता आई। नाना रत्न अमोल सोहाई ॥
भूषण भरि बहु थारन आई। गुथी अंगनित सोहाई ॥
चीरा सम लाताज अनेका। रचना अधिक येक ते येका ॥

अवस्व तन्त्र बर दुलहिन विहरै निज रुचि पाइकैं।
रहहु जोगवत रूचि सकल निरखहु नयन अघायकै ॥

दो०-प्राचीदिस की महल की सब घर देहु खोलाय।
उहँही सकल कुवरि रहहिं सब दिन रहीं हर्षाय ॥

गई सिद्धा सहचरी सहित सब घर देखेउ खोली ।
रचना नाना तरह की, सब विधि सव अनमोल ॥

॥ शयन महल ॥

चौथ उच्चता पर अनूप एक महल विराजै ।
अतिशोभा को ऐन एकाँतिक बहु छवि छाजै ॥
तहा सब सुख की कुंज पृथक रति कोमन हरई ।
पूरण भोग विलास धाम को वरणन करई ॥
जालरंध्रन ते चर्तुदिशि पुर शोभा सब लखि परै ।
कमला दर्शन होत है त्रिविध पवन बहि चितहरै ॥
प्रथम आवर्ण सात तेहि भिन्न मणि वर्ण ।
संज्ञा भिन्नसु जानिये यथा चिन्ह अनुहर्ण ॥
प्रथम स्वेत फटिकमणि तरुण तरणि इव कान्ती ।
अति विशाल अतिउच्च पर लसत कँगूरा पान्ती ॥
चतुरदिशा लौकित चतुर विस्तृत कनक अकार ।
ता मधि विद्रुममणि कलित रम्भा कुसुम सुढार ॥
तापर मधुर मयूर छवि शोभित नृत्य सुभाव ।
मुख लच्छामोतिन को चहुँ कन में चितचाव ।
नव खण्डे नवरंग के अतिविचित्र मणि गोक ।
ताकी छवि छलकत अधिक लखि लज्जित श्रीओक ।
ललित झरोखे जाल बहुँ छज्जे झालरी सोह ।
तोरण कलस विचित्र अति ध्वज पताक मनमोहे ।

परदा परे विचित्र ढंग कहुँ मणिमुक्ता जाल ।
तहँ निवसत अलिगन अमित लिय सियलाल ।।
बिछे बिछोना मखमलि विविध रंग सकलाद ।
ताकी कवन प्रकार बहुनिरखि रमा सन्नबाद ।।
कहु सिंहासन मणि रचित कहुँ मसलन्द विचित्र ।
कहुँ पर्यंक सुहावने सुखप्रद घोषित मित्र ।।
तनी चाँदनी बादले कहु किमखाप सुरंग ।
कहुँ अतलस बहु रंग कहु ईकरंग दई रंग ।।
लच्छे लटकत पाटके कलित सुकंचन तार ।
मणि मानिक मुक्तान की बूटे सघन अपार ।।
परदे कहु सुरंग रंग कहू नील पीत सीत देखु ।
कहुँ पित दीन कर दुति, कहुँ विचित्र वहुयेषु ।।
रचना तीन प्रदान में कनक रुप पोली तार ।
मणि माणिक मुक्तानकी बेलबूट छबि साह ।।
तीनके बूटे बेल वहुँ मणिवहु रंग अपार ।
तीसपर दान के प्रान्ति में कनक किंकिनी जाल ।।
जब छोरत अलिकर गहि तब सख होत रसाल ।

।। सवैया ।।

भूमिमणि भये रंग विरंग विचित्र कहु एक रंग सोहै ।
कुज तहाँ कल कंचन चित्र विचित्र झलाझल लखि विमोहै ।
जाल झरोषामी झालरी मोतिन जोतिन को वरनौ असकोहै
खंभ खचेमणि कंचन के बहुमुरती ताखवनी सखिन सोहै ।।

वाटिका प्रफुलित रंग अनेक सुगुन्जत भृङ्ग मधु मतवारे।
कुन्जत वारी विहंग अनेकन हंसिनि हंस विहार की नारे॥
सारस लक्ष्मणयुत खेलत नाचत मोर मंजुरी निहारे।
फूल नीके द्रुम फूल अनेक लता सुवितान निकुँज अपारे॥
दो०-सिद्धा चहुँदिसि देखि के महल विचित्र अनूप।
भई मनमोद विशेष ते रचना अद्भुत स्वरुप॥
आई सरस समीप पुनि कहि लखी सब धाम।
अति अद्भुत मोहि लखि परै जोग जानकी राम॥
महरानी कहने लगी निज प्रिय बधुन सुनाय।
जब ते सीता मम भवन प्रगट भई सुखदाय॥
तबहिते वह महल की रचना अनुपम एक।
प्रति सम्मत होन लगी करि परम विवेक॥
अब विहरे तेहि महल सह सीतारमन स्बतन्त्र।
सब दिन को श्रम सुफल है यहि हमारे मत्त्र॥
सब दिन वहि वितावहि करहु सकल अनुकूल।
सुनत बचन मृदु सास के हृदय बन जगई फुल॥
जब मुहुर्त शुभ आयऊ सीता बहिन समेत।
करि सिंगार मनमोहनी गवनि ताहि निकेत॥
पुनि रघुनन्दनहुँ गये प्रमुदित सुखमा सहेत।
सकल प्रिया सेवहिमुदित वनत न उपमा देत॥
एहि विधि पश्चिम दिशि रहे भरत माण्डवी भवन।
श्रुति कीरति के भवन में दक्षिण दिशि रिपुदवन॥

लखन उरमिला धामते, उतर करहि विहार।
प्रिया मगन पियकी छवि पियाप्रिय बदन निहार ।।
सखी तहाँ अगनित भेदयुक्त कर लाड़ लड़ाई।
विविध भाँति रसको वढ़ाय कुंवरिन विहराई ।।
सेज्जया सबके भिन्न भिन्न सुख सौज सकल धरिहै।
कोमल अति छवि मान दिव्य शुभगंध सनी है ।।
तहँ कुँवरि मन भावती लालसंग बहु सुख करै।
रूप अनूप दिखाये के कुमरिन लालन मन हरै ।।
यहि विधि विहरत रघुलाल सकल प्रिय के संग।
सो०-सेवा कौ अधिकार जिन जिन कौ जिहि भाँति दिय।
तिहि विधि बुद्धि उदार, परिचर्जा रुचि सौं करहि ।।
अभिधान सखी श्रीमाना। निज अनुगामिनी जुत मतिवाना
सेष चारि घटिका निसिजानी। मंगला रतिहि करत सुआनी
मदनकला दंपति रुप निहारी। भरहि दृगन महकर बलिहारी
प्रातमंगलीक वस्तु जू होई। सुखमा दरसावत तह सोई ।।
सांति सुरुपिनि रहि ढिगमाहीं। दुहुन दंतु धावन करवाती ।।
नाना सुरभि सुनामिनि आली। करहिं उदवर्तन रचि हाली।
स्नान निकुन्ज स्वच्छ सोभना। अन्हवावत तन दरस विलोना
दो०-कुमरिन की उपमा नहीं सकल अनूपम सोह।
जिनके एक-२ अंग पर कोटिन रतिहि विमोह ।।
करि सिंगारनि हरलि महल निजानन्द सुखमाही।
लखि छवि महरानिन मुदित कहिवे की कछु नाहि ।।

सब दुलहिन की भई सिंगारा। अब वरनत हौ राजकुमारा ॥
बड़के दिशि की सरहज आई। सब शृंगार लिये छबि छाई ॥
चारुशिला सखी कर लीन्हे। सकल सौज सेवा मन दीन्हे ॥
सखी उज्वला माल वहु ल्याई। फूल पंच रंग परम सोहाई ॥
काँचनी अतर दान कर लीन्हे। चितवहि दुलह रूप छविभीने।
विमला पान दान कर सोहै। ललित सुगन्धित वीरी भरो है।
जोवक अतितर अरुन सोहाई। सोना जलमह मेल मिलाई ॥
उत्कर्षनी कोप-२ मह लीन्हे। चितवत दूलह श्याममन दीन्हे
कजला अति मृदु श्याम सोहावन। संतोषाकर लिये मनभावन
चित्रा मेहदी ललित बनाईं। लिये हाथ में अति सुखदाई ॥
अगर कपूर और कस्तूरी। केशर अँग राग अति रूरी ॥
कमला लिये विमल जलझारीसोहै। अतिआसक्तलालतनजोहै
मणि नूपुर बहु शब्द सोहावन। चन्द्रकला करलिये मनभावन
यहिविधिसकलवस्तुसुखदाई। सरहजरुख सहचरी लै आई ॥
लगी होन मंगल बहु गाना। वाजन लगे बहु बाजन नाना ॥
सिद्धा कहि सुनहु रघुराई। आपन नेग देहु मन भाई ॥
तब रघुवर कछु वसन उतारी। भरथादिक उतारी छविभारी
बैठे सकल कुँवर अति सोहै। भामिनि सकल देखि मनमोहैं।
सव सरहज पुर की सारी। अब टौनी पर भई तयारी ॥
बाँटि लीन्ह सव निज विजसेवा। लगे लगावन प्रेम समेवा ॥
दो०-अंग सुगन्ध मिड़ी कै, वसन गुलावी भिजाई।
सब अंग पोछत भई सो सुख वरनि न जाई ॥

भूषण नख शिख साजी के जाबक चरण लगाय ।
अंजन नैनन आँजि के, वीरी ललित खवाय ।।
बैठाय पुनि पलंग पर, सादर राजकुमार ।
दर्पण सबके कर दये देखत मुख सुकुमार ।।

पुष्प माल तब लगी पेन्हावन । लगी सखी गनमंगल गावन ।।
सिद्धा रामहि दई पहिराई । निध्याकर भरत मन भाई ।।
लखनहि पहिराईरतिमोहनी । रिपुसूदन मदनावली सोहावनी

दो०-प्रीति सहित निध्या कही, विनय जनाई श्याम ।
कछु भोजन करि बैठिये, राजीव मन अभिराम ।।
श्रीसिद्धा रघुलाल को करगहि कही मृदुमय वैन ।
षट ऋतु आज बिहार है सुखप्रद मंगल ऐन ।।

विबाह के बाद श्रीकौशिल्या माताजी श्रीसुनैना माताजी से मिलना

सुदिन सुअवसर मंगल आवा । होय राम सिय मातु मिलावा ।
भेजे कुँअर गये जनवासे । बैठे शीशनाइ नृप भाषे ।।
भूप प्यार सुचि सादर कीना । पितु संदेश कह कुंवर प्रवीना ।
राम मातु दर्शन मम माता । आजु प्रतिक्षा कर हर्षाता ।।
आयसु होइ तो जाउँ लिबाई । सुनत नृपति अन्त:पुर आई ।।
सर्वहिं जानकहि कीन्ह तयारी । सह रनिवास मातु पगुधारी ।
रतन पालकी सबहिं विराजी । कुअँर लिवाय चले सुखसाजी।
रक्षक सेवक दासी दासा । बाजत विविध वाद्य सुखबासा ।।

दो०-सुखसंह विविध बनाव युत, अन्तःपुर के पास ।
लक्ष्मीनिधि सह पहुँचिगे, श्रीदशरथ रनिवास ।।
सुनत सुनैना हिय हर्षानी । आरती करी मिली सन्मानी ।।
राममातु सिय मातुमिलापा । वरनि न जाइसोप्रेम प्रतापा ।।
युग रनिवास परस्पर मीला । प्रीति रीति सुठि सुन्दरशीला ।
पुनि अनुपम आसन बैठारी । षोडष पूजेउ रानि सुखारी ।।
राम सिया के विविध चरित्रा । कहहिं सुनहिं मनकरनपवित्रा
सियामातु सबहिन करजोरी । व्यंजन विविध पवाय वहोरी।
बीड़ा दै शुचि गन्ध लगाई । बिविध भेटि अरपी सुखछाई ।।
बस्त्र अमोलक मणिगन नाना । भूषण साज अनेक विधाना ।।
दो०-अलग अलग सब कहँ दियो,सीय मातु सुखदान ।
दशरथ तिय भई नेह वश, भाव प्रेम लखिमान ।।
बोली राम मातु सुख छाई । आजु भेट भई भाग सुहाई ।।
सुनी प्रशंसा राउर केरी । अधिक लखी निज नैनन हेरी ।।
रूपशील गुणधाम सरलता । भगति ज्ञान वैराग निपुनता ।।
सीय मातु सुनि अतिहिं लजाई । बोली तेहिं पदशीश झुकाई।
देबि बड़ेन की इहै सुरीती । नीचहुँ नवहिं मानकरि प्रीती ।
जासु कोख भे राम गोसाई । कस न होइ तस सोल सुहाई ।।
चिर अभिलाष आज मम पूजी । मोसम भागवंत नहिं दूजी ।।
दो०-सब प्रकार पावन भई, लही बड़ाई देबि ।
राउर गृह सम्बन्ध भे, पूर्ण सुखी पद सेवि ।।
दूनहुँ रानि परस्पर नवहीं । सीयराम मातहिं असफवही ।।

सुदिन सुमंगल विनुगुरुवानी । सीय दरश नहिं निज मनआनी
यद्यपि मातु नयन अकुलाते । बिना दरश सुख शांति नपाते ।
तदपि कौशिला धीरजधारी । मनहिं चलत जनवास बिचारी।
सीय मातु रुचि समुझि सुहाई । कहेउजाननिज कुँवर बुलाई।।
हिलिमिलि सुभग दोउ रनिवासा । भयोप्रेम बस दर्शन आशा
यथा रीति गृह आवन भयऊ । तथा कुँवर पहुँचावन गयऊ ।।
पहुँचि बास अन्तःपुर माहीं । हिये लगाई रघुवर काहीं ।।
दो०-सीता मातु को प्रेम शुचि, स्वागत अतिहिं उदार ।
राम मातु भूपहिं कहेउ, भयो यथा ब्यवहार ।।

॥ मिथिला पुरिकरन ॥

प्रिया वचन सुनि प्रीतिहिं पागे । दशरथ राउ अधिक अनुरागे
यहि विधि नितनव उत्सव होई । कहत न बने समय सुखसोई
प्रमुदित मिथिलानगर निवासी । रहत सदा देखत सुखरासी ।
जो सुख मिथिलानगर मझारा । सो सुख नहिं बैकुण्ठ निहारा
नितप्रति कुंवर जाहिं रनिवासा । होत महासुख हास विलासा
नितनुतन आदर अधिकाई । दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ।।
नितप्रति मिथिलानगर भुवारा । करहिं नवीन राज सतकारा
नित नवमंगल आनन्द उछाहु । दसरथ गवन सोहाइन काहु ।।
भूले बरातिन अवधहिं काही । कहहिं जाब मिथिला ते नाही।
यहिविधि वीति गयों बहुकाला । नितनित नवनवमोदविशाला

॥ श्रीदशरथजी मिथिला परिचहन ॥

को कहिसकै समग्र उछाहू । इतै जनक उत कौशल नाहू ।।

जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ । दुलहिन सीता महासुख पयऊ
दशरथ कहुकहु देखन मिथिला । कहहु जायजहँ कमलाविमला
रथ चढ़ि चारो ओर सुहाये । देखे शिव मंदिर मन भाये ।।
इष्टदेव बद्रीनारायण । निमिकुल केरे सहज सुभायन ।।
तिन मन्दिर देखे रघुराजा । भये मगन मन सहित समाजा ।।
दो०-मिथिलावसि नृप मुकुटमणि,सह समाज रसबोर ।
जाय जाय बहु तीर्थवर, देखे चारों ओर ।।
रघुपति ब्याह उछाह में, वीते दिन बहु रैन ।
जानि परे छन एकसम, पाय महाचित चैन ।।
दिन प्रति अवधपती महराजा । चाहहिं अवधगवनकृत काजा
जनक बंधुसह चलब न चाहै । राखहिं अधिक सनेह उछाहै ।।
नित नवीन सत्कार महाना । होबे सुखद न जाइ बखाना ।।

।। बिदाई के लिये ।।

यहि विधि वासर वीतत जाही । जानि न परै सुखद सबकाही
प्रेम पास फसि गये बराता । जान अवध कहिजाइ न वाता ।।
एक समय वशिष्ठ निजधामा । बैठे रहे सुमिरि हिय रामा ।।

।। मिथिला विलास ।।

विविध भाँति भोजन करवाये । मुतसम हितसिय मातु बिठाये
विदा माँग जनवासे आये । नृपको सब बृतान्त सुनाये ।।
अति हित समुझि सनेह बढ़ाये । कौशलपति सब मुनिहिसुनाये
तिरहुति नाथप्रीति गुनरासी। छिनछिनप्रतिइमि करतखवासी
जिमि प्रसन्न अति कौशल राऊ । रहै अमित विधि रचै उपाऊ

अमित असंख्य बराती साथा । नृप सम सेवत तिरहुति नाथा
नित प्रति सकल बरातिन डेरा । जाइ हेतु अति साँझ सबेरा ।
निज गुण सब कहै बसकरिलीने । सहित अवधपति भयेअधीने
सात दीप के सज्जन भूपा । रिषि मुनि साधक सिद्ध सरूपा ।।
नारदसुक सनकादिक चारी । जोगेश्वर नव दृढ़ ब्रतधारी ।।
होइ सभा सिद्धान्त प्रसंगा । राम रूप अनुराग अभंगा ।।
सव आसक्त भये छबि देखी । बिसरे निजनिज विरति विसेखी
वेदशास्त्र अरु स्मृति पुराना । अमित प्रमाण और अनुमाना
राम प्रत्यच्छ लख्यौ सब ठाना । मिटै विवाद नाम दृढ़ज्ञाना ।
यहि विधि दिन दस पांच बिताई । एक दिवस नहुसभा जुराई
परिजन पुरजन सकल बुलाये । अतिउर हरखि सबै जुरिआये
देवराज सम दोउ नृप राजैं । मुनि मंडली अधिक छबि छाजै
कुंवर मंडली दुहुँदिसि केरी । प्रजामोद परसत हित हेरी ।।
कौशलपति सौ तिरहुति नाथा । कहन लगे मिथिला वनगाथा
महाराज मिथिला श्रुति गाई । विष्णु लोकहूँ ते अधिकाई ।।
मिथिलाविपिनवसहिंमुनिदेबा । मिथिलागतिजानहिंकरिसेवा
महाप्रलय ईस जब करई । काल रूप लोकन संहरई ।।
तहाँ न मिथिला कर प्रभुनासा । सदा एकरस अमित प्रकाशा
दिव्य रूप मिथिला के वासी । ब्रह्म समान देह अविनाशी ।।
नित्य विलास महारस भोगी । परतम ईस परम संजोगी ।।
प्रथमआठवन मिथिलाराजै । निरखन मुनिमन अतिसुखसाजै
ताकर भिन्न भिन्न नृप नामा । सुनत श्रवण अतिही सुखधामा

प्रथमकमल वनसुन्दर सोहा । पूरवदिशि लखि विगत विमोहा
कमलासरित वरा तहँ राजै । मणिन रचित वहुघाट विराजै ।
सिलानाथ तहँ वसहिं महेशा । चहुँओर अति रुचिर प्रदेशा ।।
सेवहिं सकल अपसरा आई । प्रीति सहित मृदुगान सुनाई ।।
महामोद वरसै दिन राती । रितु वसंत लखि अधिक लुभाती
रंग विपिन उतरदिशि भारी । मिथिलेश्वर तहँ वसहि पुरारी
सर सुन्दर वापिका विसाला । तहँअतिकौतुक लखिय भुवाला
आवहिं सुरतिय कौतुकजाला । रचिरचिपहिरहिं कंजनिमाला
लीला जुतसर मज्जन करहीं । गान तान संकर मन हरहीं ।।
दक्षिनदिसिगिरजाबनसुन्दर । अतिविशाल चित्रितमणिमंदिर
नाना रंग वाग सर नाना । गुंजत भँवर करत पिक गाना ।।
कनक कोटि रेषितरचनावर । सुरनिवास चहुँदिशि सोभाकर
गंधर्वगान करहिं नित आई । पूजहि गिरिजहि प्रेम बढ़ाई ।।

दो०-पश्चिम दिशि नेपथ्य वन, तहाँ जलेश्वर ईस ।
वनदेवी तहाँ वारुनी, नित सेवत सुर ईस ।।
हरि चंदन संतान बहु, पारिजात मंदार ।
कल्प साखि सुर दारु बहु, अमृत फली उदार ।।

रंग रंग के कुसुम अपारा । कनकपाट शोभित काशारा ।।
नील पीत सित पंकज राजै । हरित अरुण कहुँ कहुँ छवि छाजै
मत्त मधुप गुंजत अति सोहा । नाना खग मुखरनि मनमोहा ।।
मृगवहु जाति अभय तहाँ चरई । सिंघ मतंग वैर नहि करई ।।
मणि आकर बहुरंगनि सरसे । तहँ रजनीतम कबहुँ न परसे ।।

सुरतिय नित शिव पूजन आवै । वीण बजाई मधुर सुरगावै ।
चारिउपदिशाविपिनचारिउ वर। कामदवन पूरव अरु उत्तर ।
पूरब दक्षिण मधु संदीपन । पश्चिम दक्षिन दीपक दीपन ।।
पश्चिम उत्तर वृन्दक सोहै । महारम्य मुनिजन मन मोहै ।।
कामद माधविका अरुदीपा । क्रम ते लखि वनदेव महीपा ।।
बृन्दा बृन्दक विपिन विराजे । सेवत सकल सिद्धि सुखसाजे ।।
तेहितेषोडसविपिनअधिकवर । चलिदेखियेमहिपालविदितवर
अपनाये मिथिला बड़भागी । मै सेऊँ पद निज सुख त्यागी ।।
मिथिला विपिन प्रदक्षिण कीजै । अपनी प्रजामानि सुखदीजै।
धर्मशील नृप कहि मृदुवानी । नृप अहो परम विवेकी ज्ञानी ।
मैं राउर आयसु अनुगामी । जानहु प्रीति रीति सब स्वामी ।।
मुनि वशिष्ठ कुल इष्ट गुसाई । तेहि प्रसन्न करि हमैं भलाई ।
कौशिक सतानन्द पुनि तैसे । मो कहुँ विन इन कौन अँदेसे ।।
मुनि वसिष्ट दोउ नृप रुचिजानी । बोले परम मनहोर वानी ।
भलो समाज समय भलराऊ । सबही के मन परम उछाऊ ।।
मिथिला तथा जथा नृपवरनी । ताप पाप हरनी सुख करनीं ।
येक समय पूछा मुनि नारद । विश्व पितामह ज्ञान विसारद ।
श्रीमिथिला अरु अवध प्रसंगा । नित्य एकरस रहत अभंगा ।।
कही पितामह कथा अनूपा । अति परतर परतम समरूपा ।।
सकल धाम कारन दोउ धामा । परतम परम ईस विश्रामा ।।
कहत कहत चतुरानन अंगा । उदय भयौ अति प्रेम प्रसंगा ।।
लीन भयो चित कछु न कहाई । रही सभा सब प्रेम समाई ।।

पुनि विधि सब कहँ कहा बुझाई । गोपनीय यह कथा सुहाई ।।
काहू सन अवलौं नहि भाखा । निजउर भवन गुप्त करिराखा
इत सब कहँ अधिकारी जानी । सुनौ नृपति यह कथा बखानी
चलिये बेगि बिलम्ब न कीजै । सबकहँ अति दुर्लभ सुख दीजै ।
दोउ नृप सुनि वसिष्ठ मुनिवानी । अतिमुद हियेन जातबखानी
पुरवासी परिजनसब हरषे । लोभिहि लाभअधिक जिमि परसे
रुख लखि वहु चोपदार सुजाना । कनक छड़ी करमें निजबाना
सब डेरन छिनमहँ फिर आये । राजसैन सब साज सजाये ।।
पुरवासी सब सजि सजि आये । वाजीशज सुखपाल सुहाये ।।
कोऊ भये स्यंदन असवारा । मिथिल महाजन के सुकुमारा ।।
सजी फौज बहु तिरहुति नाथा । निजरनिवास कियों सबसाथा

मिथिला वन छवि निरखि अति, कौसलपति मनमोद ।
तिरहुति नाथहि संग लै, देखत मृगन विनोद ।।

एक एक जन मंदिर राखी । अतिहि वृद्ध बहुविधि हित भाषी
चली सकल मिथिला उमगाई । रतनाकर जनुनिधि उपराई।
राजकुमारन की असवारी । लखि मोहैं हरिहर मुख चारी ।।
चर्म असी धरकर धनुवाना । पैदल संग रंग बहुवाना ।।
रंग रंग मिलि चले सुहाये । रंग तत्व जनु फौज वनाये ।।
कनक दण्डकर लिये अपारा । आगे भीर चलत चोपदारा ।।
एक संग जब बोलत टेरी । मनो रजोगुन मत्त सजेरी ।।
कनक जरित सोटे छविकारी । आगे भीर सोटे वरदारी ।।
साजे रंग तुरंग अपारा । तापर सजिवहु जन असवारा ।।

सजते सुजन चहुँ ओरन भीरा। टाप सवद गो सागर तीरा ॥
हय गय भये मुक्ति प्रद आई। महिरज करि बैकुण्ठ बसाई ॥
हरि हिय हरष भयो अधिकाई। धन्य भाग मिथिला रजपाई।
पीछे दोउ नृप की असवारी। कोटि पुरन्दर वैभव भारी ॥
कौशिक अरु दोउ राज पुरोधा। अपर मुनि बहु सम्यकबोधा।
तिनको रथ आगे करि चलहीं। धर्म रेख नहिं लव संचरही ॥
विश्वामित्र तहाँ चलि आये। उठि बशिष्ठ आसन बैठाये ॥
गाधि सुवन कह मंजुलवानी। सुनहु ब्रह्मानन्द मतिखानी ॥
बहुत दिवस मिथिला में बीते। उभयराज नहिं सुख सोरीते।
दो०-वीति गयो बहुकाल पुनि, मिथिला वसे बरात।
उचित अवध को गवन अब,सो तुम साधहु तात।
उभय महीपति मोदरस, मगन भये यहिकाल।
जानत नहिं निशिवासर, नित नव हर्ष विशाल ॥
सुनत गाधि सुत की बड़वानी। बोले ब्रह्म तनय विज्ञानी ॥
सत्य कहेउ कौशिक अवदाता। चलन अवध अबउचित बराता
ताते सतानंद बुलवाई। हम अब जतन करव मुनि जाई ॥
तब बशिष्ठ कौशिक सँग लीना। गौतम सुवनहुँ रहे प्रवीना ॥
जाइ जनक कहँ बहु समझायो। भई मकर संक्रान्तिहुँ गायो ॥
गवन अवधपुर चहत नरेशा। हिय हरषि असदेहु निदेशा ॥
दिन दिन प्रीति पगे एहिभाँती। रहिहैं दशरथ आवत जाती।
अवधजान सुनिजनक बिभोरा। मुनि निदेश धरिधीरज थोरा
आयसु नाथ शीश कहि मेरे। तुतर बुलायो पुत्रहिं नेरे ॥

भीतर जाइ जनावहु ऐहा । अवधनाथ चह गवनत गेहा ।।

दो०-विरह पगेपुर लोग सब, नृप गृह कहुँ जनवास ।
आवत जात अचेत सब, मननहिं लहत सुपास ।

।। चौबोला छन्द ।।

अन्तःपुरहिं जाई गौतम सुत विदा खबरि खुलि गाई ।
हहरि उठयो रनिवास सकल सुनि जनुसुख दियो गँवाई ।
रानि सुनैना विलखि कह्यो तब अबै न जाइ बराता ।
सुख समुद्र कुँभज कस होवहु समय सुखद उत्पाता ।

दो०-फैलत फैलत फैलिगै, खवरि नगर चहुँओर ।
करत काल्हि भूपति विदा, चलन चहत चितचोर ।।

असकहि विबिध सभ्य समझावहिं, पैन धरहिं कोउ धीरा ।
मिलहिं बरातिन्ह सो चली पुरजन नयन वहावत नीरा ।।
जथा जनकपुर वासिन को दुख, अवध निवासिन तैसो ।
दोउ दिशि के भे बिकल नेहबश कोउ समुझावे कैसो ।।
मिलि-२ कहत अवधपुर के जन, तजेहु न सुरति हमारी ।
तैसेहिं कहत जनकपुर बासी, विछुरन दुसह तिहारी ।।
और कछुक दिन रहै अवधपति, होइ आनंद बधाऊ ।
अथवा छोड़ि रामकहँ कछु दिन, जाहिं अवध कहँ राऊ ।।
कह कोउ सज्जन कहहिं जनन कहँ राम प्राण ते प्यारे ।
अवध प्रजा किमि धरहिं धीर उर, विनु रघुवीर निहारे ।।

दो०-जस तुमको लागै इतै, राम अवध नहिं जाहिं ।
तैसहि अवध प्रजा सकल, बिन देखे विलखाहिं ।।

दो०-जब ते सतानन्द अन्तःपुर सीय विदा मुख भाषे ।
तबते सव रनिवास हुलास निवास बिरंचिहिं माषे ।।
दुखसानी वानी रानी कहि करती विदा तैयारी ।
सियहिं विलोकि विलोचनते सब विलखि वहावहिं बारी
सीय मातु कुशकेतु कामिनी सिद्धि समेत बुलाई ।
बैठि सिखावहिं जोहिं जानकिहिं पतिब्रत धर्मबताई ।

॥ माताजी सिक्षा ललीजू को देतीहै ॥

दोउ कुल की मरजाद कन्या का हाथे बसति कुमारी ।
इष्टदेव गुरुदेव कन्त कहँ मानहु धर्म बिचारी ।।
रीति सनातन ते चलि आईं कन्या पति घर जाहीं ।
गौरि गिरा इन्दिरा शची निजनिज पिय पास सोहाहीं ।
नहिं बेटी बिलखहु चितमें कछु पठे तिहारो भाई ।
परिछन हीके पीछे आछे लई हैं भूप बोलाई ।।
दशरथ सरिस स्वसुर जग में नहिं जनक-२ समपाई ।
कंतभानुकुल कमल दिवाकर तुहि समद्वितीय न जाई।
रहियो सदा पति के रुख राखत परिहरि सब सुखप्यारी ।
पति शासन अनुसार काज सब कीन्हों धर्म विचारी ।।
सास ससुर को पूजन करियो जनक जननि सन मानी।
नातो जाको जौन होइ कुल सो मानहु निज जानी ।
चारौं भगिनी मिलि रहियो नित, कबहुँ न होइ बिरोधू ।
सब सासुन को मान राखियो करियो कबहु न क्रोधू ।।

प्रीति रीति उर राखि देवरन मान्यो बालक भाऊ।
कुलवंतिन नारिन रघुकुल की साध्यो सील स्वभाऊ।।
गृह कारज आरज के कारज सब दिन रह्यो सम्हारे।
रघुकुल की निमिकुलहूँ की अब है कर लाज तुम्हारे।।
पुनि उर्मिला मांडवी और श्रुतिकीर्नि लियो बुलाई।
जननि सिखावन देइविविध विधि अम्बुजअम्बु बहाई।
रहियो सबैं सिया के सम्मत करियो सिय सेवकाई।
दोउ कुल पतिब्रत धर्म उजागर रहे सुयश जग छाई।।
दो०-अँखियन में अँसुवा भरे, सुनि जननी की सीख।
कहति न सिय कछु सकुच वस,लही नीति की भीख।।

।। रामजी का विदा मागने जाना ।।

तहँ वसिष्ठ मुनि अतिसुख पाये। राम सहित सब बंधु बुलाये
कह्यो विदेह निवास पधारो। बधू बिदा करि सुदिन न टारो।
तजत जनकपुर उपजत पीरा। मनहीं मन विलखत रघुवीरा।
मानिराम गुरु पिता रजाई। चले विदेह महल सब भाई।।
उदासीन पुर देखत जाही। तेहि अवसर उछाह कछु नाहीं।।
सकल जनकपुर प्रजा दुखारी। सीय विदा सुनि ढारहिं वारी
पृथक-२ प्रभु प्रजा जुहारे। रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारे।।
दो०-पग पग महँ घेरहिं प्रजा, चारिहुँ राजकिशोर।
अनिमिष निरखहिं मुखन को, जैसे चन्द चकोर।।
कब पुनि दरश लहव इनकेरे। अवध जात अव कुँवर सबेरे।।
जब लगि रहीं जनकपुर सीता। नित नवमंगल मोद पुनीता।

यद्यपिजनकसिय बहुरिबुलैहैं। पुनि पुनि लाल लिवावन अइहै
दशरथ पाहिं कहौ कोइ जाई। यद्यपि करी मिथिलेश विदाई
तदपि सकल मिथिलापुरवासी। राखहिं एक दिवस सुखरासी
कोउकह जाइकहौ मिथिलेसहिं।आजुसुदिन नहिं गवनभदेशहिं
कहैं नारि कोउ विगत उछाहू। लेहु आजु लगि लोचन लाहू।
कहौ कुमारन को चलि कोऊ रहिहै कालि दया बस ओऊ ॥
कोउसखि प्रेम विवशअस भाषे। बरबस पकरि दुलहु कहँराखे
जाहिं अवधपुर राउ भलाई। रहै मौन मिथिलापुर साई ॥
हमहीं राखब दूलह चारी। जब लगि पूजि न आस हमारी ॥
कोउसखि कहहिंन करहु खभारा।सुदिवसआजुहोत भिनसारा
जब लगि जाइ बुझाय सुनैना। राखव कुंअरन भूपति ऐना ॥
कोउकह अससुख अबकवहोई। लखीं राम सियपुनिधनिसोई।
दो०-अलक पास पसरायमन, लियो विहंग फसाइ।
हाय दई यह निर्दयी, का करिहै घर जाइ ॥
एहि बिधि सुनत नारिनरवानी। चलेजात रघुपति छविखानी
अतिविमनसकछु कहतन बानी। प्रीतिरीति नहीं जातिबखानी
दौरि दूत तेहि अवसर आये। मिथिलापति कहँ खवरि जनाये
आवत राजकुंवर मनभाये। सोहत सखा संग छवि छाये ॥
उठे भूप आये चलि आगे। राम दरश कहँ अति अनुरागे ॥
आवत देखि विदेह कुमारा। उतरि तुरंगन ते मिले इकवारा
किये प्रणाम नाम निज लीन्हे। भूप यथोचित आसन दीन्हे ॥
सभा भवन महँ गये लिवाई। सिंहासन आसीन कराई ॥

यथा योग सब सखन महीपा। बैठाये रघुनाथ समीपा ।।
तेहि काल श्रीरघुलाल वचन रसाल कहकर जोरि के।
नयननि नवाय सुछाव जल मानहुँ सवनि चितचोरि के।
तुम अवधपति सममम पिता हम अहैं बालक रावरे।
जो भयो कछु अपराध तौ प्रभु छमिय मुनिनिज रावरे।
प्रभु छोह मोह सदैव राखियो आपने शिशु जानिकै।
हम अहैं लक्ष्मीनिधि सरिस अस सुरति राखियो मानिकै
अव चलन चाहत अवध को अवधेश सँयुत साहनी।
मोहिं विदा माँगन हित पठायो वात है दिल दाहिनी ।।
आवन चहत आपुहिं इतै माँगन विदा अब आपसों।
हमरो सकल सिद्ध काज होई आप कृपा प्रताप सो ।।
जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण बंदन करौं।
अवजाइ अन्त:पुर सपदि निमिकुल निरखि आनंदभरौ।
सुनि प्राण प्यारे के बचन विलख्यो विदेह महीप है।
गदगद गिरा कछु कहि न आवत बचन परम प्रतीप है।
असुवानि ढारत जोरि कर बोले बचन मिथिलेश हैं ।।
तुम जाहु असकिमि कढ़ै मुख दृग ओट होत कलेश है ।।
यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरे।
तुम आइहौ मिथिला अवध हम जाब नितनित साँवरे ।।
यद्यपि सकल थल रावरे को रूप मोहिं लखात है।
तद्यपि लला तुम जाहुअस नहिं बदन सों कहिजात है ।।

जस होइ राउर मन प्रसन्न निदेश जस अवधेश को।
सो करहु सुरति न छाड़ियो निज जानि यह मिथिलेशको।
अब आसु चलि रनिवास महं कीजै नयन शीतल लला।
तुम अहौं सबको प्राणधन जानत न कोउ तिहरी कला।
सुनिकै विदेह निदेश सहित सनेह तिन सिरनाइ के।
संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुंवर लिवाइ के ।।
प्रभु जाइ अन्तःपुर सबन्धुन चरण बंदे सासु के।
मिथिलेश महिषी चूमि मुख बैठाइ सहित हुलसि के ।।
रनिवास में फैली खबर आये करावन बर विदा।
सब नारि धाई दरशहित जोई देखि मनसिज सरमिदा ।।
अब अवध कहँ अवधेश गवनत कह्यो मोहिं बुलाइ कै।
मिथिलेश अरु रनिवास पहँ तुम विदा होवहु जाइ कै ।।
देखि सुनैना हिय हरखानी। सहरनिवास प्रेम रससानी ।।
आरति करि मुदमय बरचारी। चारसिंहासन लाय पधारी ।।
ताते विदा अब देहु जननी सहित आर्शीवाद है।
तुम्हरी कृपा दश दिशहूँ मंगल हमहिं अतिअहलाद है।
जनि सुरति मोहि विसारबी जिय जानि बालक आपनो।
फिरि आइबी हम दरशहित आनंद अदभुत धापनो।
जननी बिलगन मानबी हम सबंदा तब निकट हैं।
जव सुरति करवी आइहैं नहिं कतहुँ संकट बिकट हैं।
इत आइ सतगुण अवध ते सुख लहयो तुम सत्कारसो।
जननी न आवति सुरति कहू आपकी सनेह अपारसो।

है जनक साँचो जनक हमरे जननि सीते जननि है ।
नहिं कबहुँ मोर बिछोह होइहै जानु साँची भननि है ।

दो०-सुनत सुनैना लाल के, बयन नैन जल ढारि ।
बोली आनन्द अयन सो, कोटि मयन छवि वारि ।
अवन न जाहु प्यारे कवहु, इतहीं करहु निवास ।
दरश ओट की चोट लगी, करिहैं प्राण प्रवास ॥
दरश देहु नितहीं हमें, करहु कलेऊ आय ।
चारहुँ बंधु विशेषिते, आँगन खेलहु धाय ॥
वसि विदेहपुर कछुक दिन कीजै अवध पयान ।
अवधनगर मिथिलानगर, लालन तुम्हैं समान ॥
लाल तुम्हे देखे बिना, किमि रहिहै तन प्राण ।
बार-२ बिनती करौ अवजनि करहू पयान ॥

प्रभु जननी सनेह बस जानी । भरि आये नयनन में पानी ॥
धरि धीरज पुनि दोउ करजोरी । कहौंवचन विनती असमोरी
मातु रजाइ शीश महँ मोरे । नहि बिसंच मोहि सन्निधितोरे॥
तोर सनेह विलोंकि अघाता । नहिं उत्तर आवत कछुभाता ॥
जो कछु उचित करौ अबसोई । करिहौ मैं जो आयसु होई ॥
कबहूँ न तोहि वियोग हमारा । ते जननी हम तोर कुमारा ॥
भोजन देहू भूख अति लागी । अब जनि और कहौ बड़भागी ।
सुनत लाल के वचन सुनैना । उठी आसु उर आनंद ऐना ॥
बहुरि धीर धरि मातु मनभाई । चारहू भाई सविधि नहवाई।
भूषण वसन अनेक प्रकारा । चारहू दुलह कहँ कीन श्रृंगारा ॥

मन रंजन व्यंजन लै आई। राम सहित बन्धुन बैठारी ॥
भाँति अनेक रुचिर षटव्यंजन। मातु पावई जन मन रंजन॥
पुनि अचवाय गंध सुचि दीन्ही। वीरामधुर सुसिद्धि प्रवीनही
बैठायो पुनि आसन माही। जुरि सकल रनिवास तहाही॥
दो०-लै अपने कर कमल सो, बीरी विमल वनाय।
चारो भाईन को हुलसी,दिन्ही सिद्धि मृदु खवाय।
दिये दहेज नेग बहूद्रव्य अपारा। पाये प्रिय चारहू कुमारा॥
विरह गवन तन थरथर काँपि। मातु सुनैना प्रीतिन मापि॥

॥ श्रीदशरथजी का विदा होना ॥

उते अवधपुर करन पयाने। भूप चक्रवर्ती अतुराने॥
सहित वशिष्ठ सुबृन्द समाजा। गये विदा होन हित राजा॥
अवधनाथ की जानि अवाई। लियो द्वार ते निमिकुल राई॥
ल्याये सभा मंदिर बैठायो। करि सत्कार बहुरि यश गायो॥
तब बशिष्ठ बोले मृदुवानी। सुनहु जनक भूपति विज्ञानी॥
राउ संकोच सनेह तिहारे। विदा न मांगि सकत दुख भारे॥
करन चहत अब अवध पयाना। वीते बहु दिन जात न जाना।
कुँवरी विदाकरि सुदिवस आजु।देहु रजायस सहित समाजा॥
अस को करि प्रीति की रीति। जस तुम नेह निवाही नीति॥
दो०-सुनि वशिष्ठ मुनि के बचन जानि अवधपुर जात।
नृप विदेह के नेह वस, दुख नहिं देह समात॥
सजल नयन गदगद भयऊ। नृपति हुलास बीति सब गयऊ॥
पुनि धरि धीरज भूप विज्ञानी। वोलेउ बचन जोरियुगपानी।

शील सिन्धु प्रभुकौशल राऊ। किमितिनकीबिछुरनिसहिजाऊ
दीन जानि मोहि दीन्ह बड़ाई। किमिनिकसै मुख तासुबिदाई।
तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई। मोरे शिर पर आप रजाई ।।
बहुरि बिदेह सनेह बड़ाई। दशरथ सो अति विनय सुनाई ।।
तुम समरथ कौशल पुरराऊ। शील सिन्धु जग प्रगट प्रभाऊ।।
जानेहु मिथिलापुरी हमारी। मोहि भलपग पाँवरी तिहारी ।।
जासु राम असपुत्र प्रधाना। सकै कौन करि विरद बखाना ।।
अगुन जानि अब कृपा करीजै। करौं सकल जो अनुशासनदीजै
सौपहुँ नाथ कुमारि चारी। पालव लघु सेवकी बिचारी ।।
दो०-धोखों अनुधोखो कछुक, जौंन चूक परिजाय।
क्षमा करव निज बाल गुनि,मोरमान सुधिल्याय।
करि सनेह विदेह सुवानी। सुनि कहराउ नयन भरिपानी ।।
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी। इनसे अधिक न परे निहारीं ।।
करिय विदेहनकछुकखवारा। जिमिमिथिला प्रतिअवधअगारा
सब सौंपति करिहै सब सासू। होइहैं सुनिनित निरखि हूलासू
पुत्रवधू पुत्रन ते अधिक प्यारी। तापरपुनि मिथिलेशदुलारी।
धन्य भाग हमारे घर जाती। अधिक न इनते दरसाती ।।
दो०-आपने जानि सनेह करि, राखेहु सुरति हमारि।
कोन अधम जो रावरी, दैहै सुरति बिसारि ।।
शतानन्द तिहि अवसर आये। तिहि बसिष्ठ कहि वचनबुझाये
आयो विदा मुहरत जबही। परिछन होइ जनावहुसवही ।।
परिछन करै जनक महरानी। दै दधि बिन्दु उतारहि पानी ।।

आयसु अकनि जनक मगवाई। रतन पाल की सुभग सजाई।
बर दुलहिन पालकी चढ़ाई। द्वार देस महँ ठाढ़ कराई॥
वर लै विदा बाहिर आई। करहिं गवन आगे सब भाई॥
पाछे चलहि पालकी चारी। अस अनुमति मुनि अहै हमारी।
सुनत बशिष्ठ बचनहुलसाई। आसू गौतमसुवन जायरनिवासू
बोले सुनैनहि दियो बुझाई। रानी चारि रतन पालकी मगाई
दूलह दुलहिन सपदि चढ़ाई। मंगल गीत मनोहर गाई॥
कनक थार आरती उतारी। पढ़ि सुभ मंत्र उतारयो वारी॥
कीन्हयोंसबबिधिपरिछन चारा। लियो बहोरी उतारिकुमारा
कनक पीठ महँ वर बैठाई। विविध वसन भूषण पहिराई॥
दो०-मणिमनिक मुकुता मुकुट, वर हीरन के हार।
अति अनुपम पाये विबिध बिधि दीन्हे नृपतिवहोर
वोले राम जोरि जुग पानी। जननी ते अधिक जननि सुखदाई
देहु मातु अब मोहि रजाई। अवध अम्ब अवलोंकहु जाई॥
क्षोह मोह राख्यो सब भाँती। तैं न विसारिहै मोहि दिनराती
कोशिल्या कैकेयी सुमित्रा। यद्यपि मातु मम प्रीति पवित्रा॥
सबते अधिक मातु तैं मोरे। जस लक्ष्मीनिधि हौ तस तोरे॥
जब करिहै सुमिरन मोहि माता। तबहि अइहौं मृषान वाता।
यदपि प्रबोध्यो बहुबिधि रामा। रामविछोह भई तनु क्षामा।
प्रभु जान्यो मोहिकरतपयाना।तजिहै अवसि जननीप्रियप्राना
दीन्हो भक्ति ज्ञान अवदाता। पोछि नयन बोली तब बाता॥
तुम सर्वज्ञ सकल गुनआगर। प्रेम नेम जानहुँ नय नागर॥

दो०-रह्यौ न देखन की दुखी, दर्शन दीजै आय।
होंहु ओट इन नयन के अस कसकै कहि जाय ॥

चरणवन्दि पुनि चारो भाई। सिद्धि समीप गये अतुराई ॥
उठी जनक सुतबधू सयानी। करगहि कही प्रीति बस वानी।
नेह लगाय नरेश किशोरा। अवमति जाहु अवध की ओरा ॥
दरशन बिना किमिरहि शरीरा। विछुरतहोत दुसह तनु पीरा
प्रभु मुसक्याय कहि मृदुवानी। यदपि न गमनत वचनसयानी
पितुसासन शिरपर सब भाँती। काह करौ अबमति अकुलाती
देहौ दरशन बहूरि मै आई। तुम जानि शोचकरहू मनभाई।
जन्म जन्म नातो यह होई। तुम सरहज हम ननदोई ॥
तुमहिंकबहूँनहिं विछुरिन मोरी। येहो अवशिप्रीति लखितोरी
यह सम्बन्ध सनातन केरा। तुमहूअ वधपुर करहू बसेरा ॥

दो०-सिद्धि सुनत ननदोई के बचन,पुनि बोलि करजोरि।
पालब सब अपराध क्षमी, ननदि चारहू मोरि ॥

पालब सकल अनुचरि जानी। इतना कहत ढारयो दृगपानी।
सिद्धि प्रीतिनहिजाय बखानी। बोले सीतारमन मनोहरवानी
अवध जनकपुर भेदन काऊ। उभय अमान समान प्रभाऊ ॥
प्रीति विवस दूलह वंदन कीन्हे। बाहर चलन हेतु मनदीन्हे।
मणि भूषण सुन्दर पट नाना। दियो सिद्धिनहि चित्तअघाना।
सुन्दरमणि मुदरी इक ल्याई। दियोसियदूलह अंगुलिपहिराई

दो०-सो मुदरी मणि में लिखे, अस आखर रस भीन।
कबहू न सिद्धिसुधि छोड़िहौ, लाल प्रवीन प्रवीन ॥

गे कुशकेतु रानि ढिग नाथा। बोले बचन नाय तिहि माथा ।।

दो०-चारहुँ बंधुन की अहौ, जननी युगल समान।
कौशिल्यादिक मातु महँ मोहि न भेद दिखान।

राखेहु सुरति मातु सब काला। चारिहु बन्धु तुम्हारे लाला ।।
सुनि कुशकेतु दार प्रभु बानी। प्रीतिविवशअतिमतिअकुलानी
वोली कंजकरन युगजोरी। राखेहुसुरतिआपनलालक्षमिखोरी
यदपि सनातन ते चलि आई। ह्वै विवाह वरवधू विदाई ।।
पुनि कुशकेतु भूप की रानी। रत्न विभूषण पट वहु आनी ।।
चारिहु बंधुन दियौ समाना। भेद भाव मनमें नहि जाना ।।
नगर नारि रनिवास निवासिनीं। जे आई दर्शन की आसिनी
बारबार मिथिलापुर आई। दीजै दरस चूक विसराई ।।
तब सबको करिकै सनमाना। जानि सुनैना सिद्धि समाना ।।
बैठे सभा जहाँ दोउ राजा। भ्रातन सहित गये रघुराजा ।।

दो०-आवत लखि रघुराज को, सिगरी उठी समाज।
श्वशुर पिता पद बंदि प्रभु, बैठे शील दराज ।।

पंच सहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बुलाई।
नृप समान दीन्हों पटभूषण हयगय रथन मँगाई ।।
पुनि एक एक गजमुत्तन माला पृथक-२ पहिराई।
एक एक चिन्तामणि नामक दीन्हों मणि सुखदाई।।
जनक पानि पंकज निज चारिहुँ कुंवरन दिय पहिराई।
गज मुत्तन के महाहार यकजिहि बीचबीच छविछाई।

चन्द्रकान्ती औ सूर्यकान्ती मणि लगी तेज समुदाई ।
सो कर हार धार मिथिलापति दशरथ को पहिराई।
अक्षोहिनी एक मिथिला की जाति कुमारिन संगा ।
लाखन अभिलाखन गमनत संग दासी दास सुभंगा ॥
तिनकर पोषण पालन लालन राउर हाथ पहीपा ।
हम सेवक रावरे सदाके, आप भानु हम दीपा ॥
तहाँ जनक सब सचिव बुलाये । ल्यावहु दाइज बचन सुनाये ॥
राजा वहुरि सभा महँ आये । मंत्री सकल बोलाइ पठाये ॥
कहिजय जीव सीसतिन्ह नाये । बैठे निज आसन रूष पाये ॥
जनक राय कहि तिनहि सुनाई । अवध चले अब दशरथराई ।
जहँ जहँ आवत बसे बराती । भेजहुँ वस्तु तहाँ बहुभाँती ॥
तुरत उठे सब भेजन लागे । चले लोग सब अति अनुरागे ॥
सकल ठौर बहु बस्तु भराई । मेवा अन्न अनेक मिठाई ॥
पुनि सु आर तहँ भेज्यो नाना । ठौर ठौर तिन्ह करि अस्थाना
राहखर्च ते भई सुचि ताई । भोजन वस्तु अनेक पठाई ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा । सकल सँवारे नख अरुसीसा ॥
देव विमान विलोकि लजाहीं । रबिरथ तेहि रथ तूलतनाही ।
दो०-दश हजार हाथी सजी, बहु मणिमय शृंगार ।
जिनहि देखि दिग्गज लजे, शोभा अमित प्रकार ।
सोना मणिगण नाना जाती । वसन अनुपम अगणित भाँती ॥
गाड़िन पर सब लाद पठाई । सो बर धन लखिधनद लजाई ॥
पुनि महीषी वर धेनु मगाई । काम सुरभि सरिस दीन्हसोहाई
यहि वस्तुसब विविध मँगबाई । नृपति अवधपुर दीन्ह पठाई॥

लोकपाल अवलोकि सिहाने । जनक विभवलखि सब सकुचाने
तब राजा मनमहँ अनुमाना । कइबार दइ दाइज नाना ॥
सो सब नृप जाँचक कहँ दयऊ । अवधपुरी नहिं एको गयऊ ॥
पुनि वहि विधि सब वस्तु मगाई । जनक अवधपुर दीन्हपठाई
दो०-जानी रानि बरात अब चलि, रहिहि अब नाहीं ।
भई विकल जिमि मीनगण, थोरे जल के माहीं ॥
दिये बरातिन लघु बड़ सबहि जाहि जौन जस भाये ।
कोउ नहि रह्यो तहँ अस जन जो पट भूषण नहि पायो ॥
जनक नगर के सभ्य महाजन धनि धनदकी जोरी ।
पृथक पृथक दाईज ते दिन्हे करि कीरति चहुँ ओरी ॥
अवध निवासी सकल सराहत जनक उदार सुभाऊ ।
जनि करहु अचर्य कोई जानिय सिया कृपा प्रभाऊ ॥
अधिक अधिक सो बड़यो घटयो नहिसिय महिमा अधिकाने।
जहाँ प्रत्यक्ष रमा तहँ की केहि विधि संपति जाय बखानी ॥
तेहि अवसर गौतम सुवन बोल्यो बचन बिचारी ।
गवन मुहुरत आइगो कन्या चले सिधारी ॥
गवन करै वर चारहुँ यहि मुहुरत माही ।
पुर वाहर परखहीं । पितै नृप अंतहपुर जाही ॥

॥ मंडप का बन्धन खोलना ॥

॥ छन्द चौबोला ॥

करि विधि मंडप मोचन समधिनि सो रचि फाग ।
पुत्रवधु लै संग गवन करै सहित वराति बड़भाग ॥

दो०-एव मस्तु दशरथ कह्यो चले राम चारहु भाय ।
चले तुरंगन पिता सशुर पद शीरनाय ॥
लक्ष्मीनिधि को पाणि पकरि कै उठे अवधपति आशू ।
विधि मंडप मोचनी करन को चले हर्षि रनिवासू ॥
परिचारिका सुनैना की तहँ डयोढ़ी ते चलि लीन्ह्यो ।
अवध चक्रवर्ती को मंडप के तर आसन दीन्ह्यो ॥
सुरभित तैल अनेक मशाले ताँबूलन युत ल्याई ।
बृद्ध बृद्ध कुलनारि पाणि निज दियो लगाय खवाई ॥
फेरि कह्यो करजोरि भूप सो मंडप बंधन छोरौ ।
नेगन में निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुखमोरौ ॥
नृप उठि मंडप को बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू ।
कह्यों बहुरि मुसक्याय सुनहु मम वचन विचोरि विवेकू ॥
हम लेने कौशलते आये नहिं दीबे के हेतू ।
जो जो देहो सो लैके हम जैहै बहुरि निकेतू ॥
दीन्हो पुत्रवधू अति सुन्दरि सो पुत्रन को भाग ।
हम न अवधपुर जाब छूछकर कछु हाथे नहिलाग ।
जो मिथिलेश भगिनि होवे कहुँ तो नेगमँह दीजै ।
ना तो चलै सुनैना रानी यहि तिवाह करीजै ॥
सुनि सुल वधू बृद्ध नृपबानी कही सुनैना जाई ।
अवसर जानि चारकरिवे हित सो बाहर कढ़िआई ।
कनकथार लै पाणि रंगभरि धरि काजर टिकुली को ।
करि प्रणाम समधी को सुन्दरि दियो भालमहँ टीको ॥

अंगनि अंग रंग लै ढारयो सहित उमंगा ।
नयननि में काजर पुनि दीन्हो करि कछु कपट प्रसंगा ।
उठि कौशलपति सब समधिनि को करि प्रणाम सुख पायो ।
चिंतामणि मणिहार पाणि लै समधिन को पहिरायो ।।
पद्मराग मणि माल सुनैना समधी के गल दीन्ही ।
जोरि पाणि पंकज भूपति सो सनै विनय असकीन्ही ।।
ये चारिहु दारिका हमारी परिचारिका तिहारीं ।
लालन पालन अव इनको सब कीन्हयो बाल विचारी ।।
तुम्हरे कर सौपहुँ नरनायक ई चारिहु कुमारी ।
ये अजान जानती नहीं कछु पालेहू भूल विसारी ।।
अपनी अरुसिगरी सासुन की सेवा सब करवायो ।
केहु सों कबहुँ विरोध होइ नहिं निजकुल रीति सिखायो ।।
सुनत सुनैना वैन अवधपति जोरि पाणि कहवानी ।
प्राणहुँ ते प्रिय पुत्रवधू मम स्वप्ने दुख नहिंरानी ।।
जस मिथिलापुर तस कौशलपुर भेद कछू न विचारो ।
को नहिं करत पतोहु छोह जग यह संदेह बिसारो ।।
शासन देहु जाहुँ कौशलपुर पुनि ऐहौं बहुबारा ।
मिथिलापति को अहै अवधपुर मिथिलानगर हमारा ।।
असकहि करि प्रणाम समधिनि को भूपति वाहर जायो ।
चलन हेतु मिथिलापति सो पुनि जोरि पानि उचारयो ।।
शासन देहु बिलम्ब होति बड़ि तुम अवलम्ब हमारे ।
मोद कदम्ब मिलनि राउरि मोहि विसरी नहिं विसारे ।

कह्यो विदेह विवश ह्वै पहूचैहौं कछु दूरी ।
यह कुल रीति नाथ वर जौं जनि तुव विछुरनि दुखभूरि ।
नृप प्रणाम करि चल्यो चढ़ियो रथ वाजे विविध नगारे ।
मिथिलापति सो कह वशिष्ठ सब सूदिवस सुभग विचारे ।
आयसु अकनि जनक मँगवाई रतन पालकी सुभग सजाई ।
चढ़ै पालकी सकल कुमारी साजहु साज बिलम्ब विसारी ।
पुनिपुनि सीतहिहृदय लगावौ । करत प्यारबहु विधिसमुझावौ
सिया पितापद लखि लपटानी । सोदुख अब किमिजायबखानी
लली लपटिदाऊ कहि रोती । कहि नजाय गति तहँ विरहौती
वारबार पितु मिलति जानकी । छूटि गयी मर्याद ज्ञानकी ।।
सियदशा लखिनिज परिवारा । सहतिविरह अबकलेशअपारा
रहे कहावत परम विज्ञानी । तौन ज्ञान गति सकल भुलानी ।।
कहि न सकत मुखते कछु वानी । तेहि अवसर धीरता परानी
भाषत सीय वहोरि बहोरी । छाड़हु पिता सुरति नहि मोरी ।।
मच्यो कोलाहलसब रनिवासू । तिहिक्षण भयो सकलसुखहासू
दो०-करुणा विरह परवस लखे जनक सकल परिवार ।
सियहि चढ़ायो पालकीहि, जानि लगन सुखसार ।।
सुमिरि शिवाशिव सुखद गणेश । सकल कुँअरिय धराय नरेश
जस तस कै धरि धीरज राजा । बोल्यो बिलखत मन्द अवाजा
निमिकुल की सिगरी मर्यादा । रक्षण कियहु विहाय विषादा ।
अमल श्वसुरकुलसुता सिधारी । जसइत तसउत पितुमहतारी
ल्याउव हमइत वारहि बारा । किहहु न नेसुक मनहिं खभारा

करिहै मोसे अधिक दुलारा । ज्ञान शिरोमणि श्वसुर तिहारा
पतिरुख राखि कीहहु सबकाजा । सदा प्रसन्न रहहु पतिकाजा
इतना कहत गला भरि आयो । जनक निकरि तब बाहरआयो
सियहि बुझाय कहेउ तब भइया । अइहौ अवधहि वने लिवैया
मिलि सिय कुभकेतुहि जाई । तनु ते धीरज गयो पराई ॥
लीन्हो लाय सिय उरमाही । रहयो धीरता लेशहु नाही ॥
करगहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनि बाहर दुखजानी ।
मातु अंक महँ सिय लपटानी । मनहू करुणारस सरि उमगानी
लियो सुनैना गोद बैठाई । धरि धीरज कछु बात बुझाई ॥
तहाँ कुशकेतू भूप की रानी । कहत बुझाय परम प्रियवानी ॥
जनि मानहू दुख मनहि कुमारी । लेहू सनातन रीति विचारी
कन्या अवसि सासुरे जाती । पुनि मइके अवशि सब आती ॥
दो०-बार बार मिलि भेटति, सबसन सकल कुमारि ।
भई असीस धुनि दशदिशा, भीर सकल पुरनारि ।

॥ छप्पय ॥

जनक द्वार पर महाभीर कछु बरनि न जाई ।
सब करि करि परितोष सिया की उठी सवारी ॥
चलि तेहि सँग कुँअरिन की नालकी की बरधारी ।
बाल बालिका जो सिय पाये । मातु निदेश सबहि सुहाये ॥
तिरहूत राउ सबहि कर प्यारा । दीन्हे भूषण वसन अपारा ॥
सबहि पालकी अमित मँगाई । भेजे सिय संग हरषि चढ़ाई ॥

पुत्री न ऊबै अवध मझारी। दीन्ही दासी सखी अपारी ॥
सीतहि सब विधि सेवन हारी। लखि रुखकार्य सँभारनवारी।
दो०-सिय सुख सेवाहित नृपति, करि करि सूक्ष्म विचार।
सबहि पठाये अवध कहँ, वस्तु अनेक संभार ॥

तेहि आगे अरु पाछ वाम दहिने सब दासी।
चढ़ी पालकी चली सकल सुख शोभारासी ॥
मिलति परस्पर यहि विधि सीता। द्वार देश लै गई पुनीता ॥
धरि धीरज तहं परम सयानी। आई आसु सुनैना रानी ॥
शिवकन आनि रत्नमय चारी। दिये चढ़ाय चारिहुँ कुमारी।
दो०-दधि टीका दै भाल में, सकुन सकल धरवाय।
करि परिछन की रीति सब दिये पालकी चलाय।
चलत पालकी नगर मझारी। कीन्ही प्रजा कोलाहल भारी ॥
चलत जानकी सुगन सुहाये। होन लगे बहुभाँति सुभाये ॥
पशु विहंग मिथिलापुर केरे। रोदन करत जानकी हेरे ॥
विप्र सचिवपरिजन परिवारा। सहित वन्धुमिथिलेश भुआरा
चले संग पहुचावन हेता। विरह करुण हिय किये निकेता ॥
जानि समय बहु बाद्यसू वाजे। सकल बराती वाहन साजे ॥
दशरथ राउ द्विजन शिरनाई। दानमान करि किये विदाई ॥
चरणरेणु निज शीश चढ़ायो। आशिश पाय हिये हरखाये ॥
दो०-पुनि पुनि सबहि प्रनाम करि, सुमिरि गणेश महेश।
मुदित निसान बजावते, जानहि चढ़े नरेश ॥

चलत महीपहि जानि सुर वरषहि सुमन अपार ।
मुदित हनहि वर दुन्दुभी, जयजय करत पुकार ॥
चढ़ै विमान देव युत दारा । तिय बिलोंकि बह आँसुनधारा ॥
तेहि छनक्रोंअस त्रिभुवनमाही । आयोजहिसियलखि दुखनाही
पाले सिय विहंग कुरंगा । रोवत चले पालकी संगा ॥
प्रेम विवश निमिनगर समाजा । पीछे चली भूलिसब काजा ।
दशरथ करि वर विनय सुहाई । शील सनेह बचन निपुनाई ॥
अक्षौहिनि साहनी साजी । चली संगमह हय गय राजी ॥
चले संग नाना नर याना । चढ़ि सखी सजि विविध विधाना ।
चले सकल पुरजन पहुँचावन । बाल बृद्ध करि मारग धावन ।
वार वार सब ईश मनावै । जल्दी जनक जानकी बुलावै ॥
यहि विधि सिय बरात महँआई । बाजे मुरज दुदुंभी सहनाई ।
दो०-दशरथ के तहँ मिलन हित, स सुतै बन्धु विदेह ।
मुनिन सहित आवत भये, भरे अछेह सनेह ॥
दशरथ करि वर विनय सुहाई । शील सनेह वचन निपुनाई ॥
फेरे सबहि कृतज्ञ कृपाला । बोलि जाचकन किये निहाला ॥
मागध सूत बन्दी वहु गायक । दिये अमित धन कौशलनायक ।
दै अशीश रघुवर उर राखी । फिर सकल मुख जय जयभाखी
जनकचले नृपसंग-२ जाही । फिरततिनहि मनभावत नाही ॥
आवत जानि विदेह महीपा । रुके अवधपति नगर समीपा ॥
तहाँ बिलोकी कौशलपति काही । वाहन तज विदेह तहाँही ॥
कछुक दूरि चलि जानहिरोकी । उतरी अवध नृपकहेंबिलोकी

दो०-फिरहि महीपति कुंअर सह, आये इत बड़ि दूर ।
कहत भुकारे सो भरे, नयन रहे जल पूर ।।
सुनत जनक अति भयेअधीरा । गदगद शब्द सुलोचन नीरा ।
चरण शीश धरि कह करजोरी । केहि विधि करौ बड़ाई तोरी
सकल क्षमेड अपराध हमारे । सेवा बने न योग तुम्हारे ।।
सबहि भाँति मैं लहेउ बड़ाई । कृपा तुम्हारी सुनहुँ नृपराई ।।
अवधनाथतहाँ सहित कुमारा । मिलि कछुक चलि प्रेमअपारा
राम सबन्धु आय शिर नाये । जनकललकि उरमाँही लगाये ।
असकहि वार बार उरलाई । चूमि वदन बहुविधि समुझाई ।।
कह्यो जनक सो प्रभुकरजोरी । राखहुँ वालमानि सुधिमोरी ।
प्रेम विवस नहिं वदत विदेहू । मूर्तिमान जनु राम सनेहू ।।
जस तस कै धरि धीरज राऊ । बोल्यो बैन न प्रेम अघाऊ ।।
यद्यपि मोहि तुम दीन्ह बड़ाई । पै मोहि रुचत चरन सेवकाई।
दो०-रघुनन्दन वन्दन कियो जनक लियो उरलाय ।
प्रीति रीति तेहिकाल की, वरनि कौन विधि जाय ।।
भरत लखन रिपुहन पुनि भेटे । दीन्हे अशीष प्रेंम लपेटे ।।
बहुरि कुँअर रघुनाथहि भेटे । हिय लगाय फफकत दुख मेटे ।।
पुनि विदेह कौशल पतिकाही । बारहि बार मिले मुदमाही ।।
समधी समधी नेह समाने । भरे कंठ नहिं वचन वखाने ।।
जस तस कै विदेह धरि धीरा । बोल्यो प्रेम गिरा गम्भीरा ।।
यह मिथिलापुर की ठकुराई । आपुनि जानब गुनि सेवकाई ।।
नहि कछु मोर रावरो सिगरो । करब माफ जो हमसे विगरो

दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारा। यह हमरे शिर महँ बड़भारा।
कौशल मिथिला उभय तुम्हारा। सेवक सिगरे मोर तुम्हारा।
तहाँ जनक मिलि वारहि वारा। चले भवन दृगवह जलधारा
कुंअरहि करत प्रणाम उठाई। दशरथ लीन्हे हृदय लगाई॥
दो०-ललन मोहि रघुनन्दन सम, प्यारे लगत सुजान।
रामहुँ मानत प्राण सम, सहित भ्रात सुखदान॥
आयहुँ अवध सुखद सुकुमारो। पित निदेश लखि प्राणअधारो
असकहि बारबार उरलाई। चूमि बदन बहुविधि समुझाई॥
फफकत कुंअरदण्डवतकरिकै। चलेउविकल विरहिउरभरिकै
गुरुबशिष्ठकौशिकऔरमुनिकहजाई। वन्देनृपतिहृदयअकुलाई
सुभग अशीष कृपा लहि राजा। वन्दे सीगरी मुनिन समाजा
विश्वामित्र समीप राय आय हर्षाई।
चरण वंदि करजोरि कर ठाढ़ भये वचन सुनाई॥
हे मुनि तब दरशन अमोघ पूरयौ सब आसा।
जो फल अगम अनूप कृपा तब सुलभ प्रकासा॥
जो सुख यस सुरपति चहे करत मनोरथ नहिं लहे।
सो सुख यस तब दरस ते अगम नहीं मोमन कहे॥
कुअँरहि करतप्रणामहिदेखी। दोउ ऋषिमुनि हरषेप्रेमविशेषी
हिय लगाय बहुँ भाँति दुलारे। अशीष दीन्हे अधिक सुखारे॥
सिय राम कहँ प्राणन प्यारे। होहूँ लाल सब गुणन अगारे॥
सुनि अशिष नयनन जल छाई। वन्दे सकल मुनिन शिरनाई।
मिथिलापुर पुरजन सुखरासी। मिले सकल कौशलपुरवासी।

महि बहुरत कोऊ भवन वहोरे। सिगरे बंधे प्रेम के डोरे॥
जस तस कै सब किये पयाना। करत अवध पति कीरति गाना
उत कौशलपुर चली बराता। बजे दुदुंभी शोर अघाता॥
दो०-सहित सुवन मिथिला महिप, आये रघुपति पासु।
हिय लगाय जमात सब, भेटत डारत आँसु॥
कुवरहुँ मिलि यथा विधिरामा। अनुभव बिनको कहै अकामा
जनक कहे रघुवीर कृपाला। अहो सदा प्रणत प्रतिपाला॥
परब्रह्म परमारथ अहऊ। नित्य एकरस अगमनिगमहू॥
आपन भाग कहौं किमि गाई। शेष शारदा अंत न पाई॥
निजजन जानि मोहि अपनायो। सर्बहिंभाँति यशपात्र बनायो
मिथिला विलग एक क्षननाही। रहौ सदा मानहुँ मनमाही॥
राउर ओझल कबहूँ न ह्वै हौ। दिव्य दृष्टि पथमाहि भ्रमैंहौ
यहि प्रकार श्वसुरहि समुझाई। कहे श्याम सुनिय नृपराई॥
दो०-गुरु बशिष्ठ कौशिक सरिस, पितु सम मोर आप।
कृपा छोह रखिऔ सदा, प्रीति अनूप अपनाय॥
असकहि कीन्ह प्रणाम कृपाला। लीन्हे हृदय लगाय भुआला।
मधुर मधुर मंगल पढ़राई। आशिष दीन्ह हृदय हरषाई॥
भरत लखन रिपुहन भेटे। हिय लगाय फफकत दुख मेटे॥
यथा राम सब भ्रातन मिले। चिपटि-२ हिय प्रेम रंगीले॥
रामहिनिरखिनयन जलढारी। कहेउ जाहुलाल अवधसिधारी
धरनि गिरि नेक सुधि नाही। देखे विकल रामतेहि काही॥
राम उठाय ताहि उरधारे। कछुक चेत लखि नृपति उचारे॥

पुनि पुनि कुअंरहि धीर धराई । हिय लै नयन नीर बहाई ॥
जनकहि बन्दि सुखद सरसाया । हरषि चढ़े रथ रघुकुलराय
चलत राम सब चली बराता । बजत निसान सुखद वहवाता
वरषहि सुमन छनेहि छन देवा। बाद्य बजावहि करि शुभसेवा
प्रीति रीति वरनत सब कोऊ । जाहि मुदित मन नेह सँजोऊ॥
इहाँ जनक रघुवीर पयाना । देखत रहे समय अधिकाना ॥

दो०-आशिष दीन्ह अनेक विधि,करि प्रणाम रघुनाथ ।
चले अवधपुर मनहिं मन, वरणत नृप गुणगाव ॥
जनक शील सत्कार गुनि, सम्मति सहज सुभाउ ।
वरणत पुनि-२अवधजन हिय नहि होत अघाउ ॥

छ०-बाजे बिविध विधि दुन्दुभी मुरचंग मुरज मृदङ्ग ।
नौवत बजत गज पर बजत तूरज उपङ्ग अभङ्ग ॥
फहरत पताके बहू किताके, आत पत्र अपार ।
घर्घरकरत रथचक्र चहुँकित झांझ की झनकार ॥
मणि जड़ित सोटे विविध वल्लभ मुकुत झालरदार ।
पैदर अनेकन बृन्द सायुध वसन अंग सुरङ्गदार ॥
तिन मध्य में सुन्दर युगल स्पंदन विराज अनूप ।
यक में चढ़े गुरु ब्रह्मसुत एक माँह कौशल भूप ॥
नर नाह पाछे वनक आछे छाजत गजन सवार ।
रघुवीर भरत लखन रिपुहन सहित सब सरदार॥
मंडित अतिहि मतंग मंडल चले रघुकुल वीर ।
संगचलि चारिहु पालकी मिथिलानगर की भीर ॥

यहि भाँति मिथिला नगर ते कौशलनगर की ओर ।
गवनी बरात वतियात सुख मिथिलेश यश चहुँओर ।
करिकै पतोहुन क्षोह छनछन लेत सुधि क्षितिनाह ।
नहि तृषित होहि न छुधित श्रमित कोऊ मग माह ।।
मिथिलेश के बहु सचिव तहँ सब सैन्य आगे जात ।
जे वास के थल रचे प्रथमहि तिन बतावत जात ।।
जहँ होय नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन्य निवास ।
करिपान भोजन वस्तु अगनित बने विविध अवास ।।
यहि भाँति मिथिला नगरते जब चलि अवध बरात ।
मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उर न मुदमोद समात ।।
अब चारिं चार तुरंग दिजै, अवधपुर कहं पठवाय ।
बने अवधपुर सब भाँति ते उत देहि सुभग सजाय ।।
तोरन पताके द्वार द्वारन देहु तुङ्ग निशान बधाय ।
सब राज मारगै गलिनगलिन सुगंध सलिल सिंचाय ।।
कौशल नगर के प्रजन घर-२ देहु खबर जनाय ।
आवत बरात विदेहपुरते वर बधुन सखिन लिवाय ।।
तिहि भाँति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आशु ।
परिछत तयारी करहि सब भाँतिन विविध हुलासु ।।
सुनिसब अनुसासन सचिव कहयो सपदि सकल विधान
चढ़ि के चपल तुरंग धाय चारि चार धावन प्रधान ।।
कौशलनगर घर घर सुचर वर जाय तिमि रनिवास ।
दीन्हेजनाय बरातआवत अवध पंथचारि करिनिवास ।

प्रथम वास तहँ जनक बनावा । मिथिला सम सबभाँति सुहवा
पाकर ग्राम वसे सुखदाई । सुख समधि सोये सरसाई ।।
तादिन जानि परम अनुकुला । बसे बराती सुखमय सबभूला ।

दो०-सुखसह सुखद बरात वर, वसि अमित सुखपाय ।
मिथिलाहि सोये मनहु, पगे मनहु लोभाय ।।

मिथिला प्रीति रीति मैं गाई । सिय विदा जस भई सुहाई ।।
यथा राम सिय सहित सुभ्राता । दसरथ राउ समेत बराता ।।
बहुरि भुप सव साज सँभारी । लै बरात चल दिय सुखारी ।।
वरनत मिथिला विविध प्रसंगा । चले जाहि हरषित सबअंगा
हरषहि गुनहि जनक पहुँनाई । करत परसपर विविध बड़ाई।
आये भवन विरह रसधाये । मियिला मनहु न नेकन भाये ।।
देखि विकल सबहि रनिवासा । रोवस कहि सिय राम अवासा
मिथिलापुर की विरह विषादा । अकथनिय नौशय प्रेमदा ।।
सिय विवाह आये मेहमाना । भूपति विप्र मुनीश सुजाना ।।
विविध भाँति लहि नृप सतकारा । भये विदा बहु होतसुखारा
मागध सुत वन्दि गुण गयक । नेगी भाट विदुषक नायक ।।
सबको उपाय अमित धनरासी । भे प्रसन्न सब भाँति सुपासी।
जनक सुनैना पुत पतोहु । बसहि सदन सिय राम सुमोहु ।।
राम प्रेम की चोटहुँ मीठी । जाहि पाय जग लागत सीठी ।।

दो०-सिया राम के विरह मधि, मिथिलापुर नर नारी ।
तीन दिवस भोजन भूले, नयन बहै जल धारि ।।

जनकराय निज महल में, आय विकल उदास ।
सियविनु देख्यो महल कहँ,करुणा विरह निवास ।
ब्रह्म अनन्त अखण्ड अमाई । वेदान्ती जहँ चित्त रमाई ।।
सोई वनेउ विहारी मिथिला । रमैं अब करि प्रभात शिथिला
दुलह वनि मौरहि शिरधारी । मैथिल गन सो कीन्हेउ प्यारी
नयनविषय मिथिलहिंकरि लखव । रहैछको नित प्रेमविशेषेव
मिथिला भाग अमित जगमाई । सब समर्थ प्रियनात बनाई ।।
दरश परस करि भाग महाना । निशदिन आनँद सिन्धुसमाना
कोऊ जामाय कोउ बहनोई । कोउ कहै ये प्रिय ननदोई ।।
दो०-धनि धनि बर मिथिलापुरी, ब्रह्म राम सो करि प्रेम ।
प्रेम सुखहि साने रहै, ज्ञान योग तजि सब नेम ।।
सो०-सीताराम विवाह, चरित गुनत करि नेमनित ।।
कहत सुनत उत्साह शान्ति विरति प्रभु प्रेम लहै

इति श्रीमिथिला मधुर विलासे पूर्वार्ध श्रीमिथिलेश राज-दुलारी जी को जन्मोत्सव पौगन्ड लीला श्रीविश्वामित्रा गमन, धनुष यज्ञ, अवध से मिथिला को बरात आना, विवाह होना श्रीचक्रवर्तीजू का विदा होना यहाँ तक प्रकरण पूर्ण हुआ ।

।। पूर्वार्ध समाप्त ।।

अगता जब रनिवास पठवा । कीय विचार दल सुमंगल गावा
कौशल्यादि सकल नृप वामा । आई सुखमहँ अवधि सुधामा ।।
पाव प्रमोद भोग पुरनारिनी । बड़मंगल मानिउ अधिकरिनी ।
आगम कौउत्तसवसुचि कीन्हा । निजनिजकार्य निवेदनलीन्हा

राम मातु अतिनिपुन महाना। दीन्हेउ सवन वहुप्यार सुजाना
मिलिवे कौहित जुरी सुखछाई। रघुकुलकी पुरयुवतिसबआई
सुनी विवाह कहँ हर्ष विशेषा। पुलके तन मन आनन्द अलेषा
दो०-सुन्दर ताई बंधुन की, समधि नेह अछोह।
वैभव प्रेम विदेह की, सुमिरत होत विदेह ।।
नीतिव्यवहारनिरतपुरभामिनि। सबकेजाँहिउभयदिनयामिनि
तेहि अवसर जे दूत पठाये। ते कौशलपुर कुशल लै आये ।।
कहीं भूप से मंगल बानी। अवध प्रजा दर्शन अकुलानी।।
इत बिलम्ब नहिं होइमहाना। रोजहिं कढ़हिं अवध अगवाना
दूत वचन सुनि भूप तुरंता। बोल्यों बचन हँकरि सुमंता ।।
दो०-चलवावहु सेना सकल, आसु अवध की ओर।
सुनि सुमंत शासन दियो, भयो दुन्दुभी शोर ।।
चली सेन कछु वरणि न जाई। मनहुँ उठी पूरब मेघवाई ।।
चढ़ि रघुनन्दन स्यंदन माहीं। चले सबंधु अवधपुर काहीं ।।
चढ़ि गुरु नृप निजनिज याना। कीय प्रमुदित अवध पयाना।।
पणव निशान बाजने बाजहिं। मुदित बराती जात विभ्राजहिं
चलि जनकपुरते जिमिसैना। तेहिविधि चली भली भरिचैना
बीच बीच वर बास बराती। मगलोगन्ह सुख दै सब भाँती।।
दूलह निरखि ग्राम नरनारी। पाय नयन फल होहिं सुखारी।
हर्षहिं गुनहिं जनक पहुँनाई। करत परस्पर विविध बड़ाई।।
कियो पन्थ दिन चारि वसेरा। लहे जनक सत्कार घनेरा ।।

जनक सचिव कीन्ह्यो सेवकाई । कहुँ न बिदेश निवास जनाई
यहिविधितहँबरातहु लसानी आय अवधपुरकहँ लखिनजिकानी
योंजन भरि महँ परिगो डेरा । जानिकाल्हि दिन परछिनकेरा
सबके नयन दुसह लखवे काही । राजकुँवर कबयुगल दिखाहीं
इत तव आपसु माँझ बुझावै । थोड़े दिवस महँ पाहुँन आवै ।।
बड़े अतिसुकृति अवधपति अहही । तिनकेभागधन्य सुखलहहीं
छवि निधि चार कुंवारन केरी । चार धर्म पत्नी तिन्ह हेरी ।।
नही सुनी भाषहि सबकोई । सीता नाम धरणिजा सोई ।।
कब हम देखब राजदुलारी । जेहि सब कहत त्रिपुर उजियारी
तेहि सेवा हित दीन्ह नरेशन । सुता सहस दश ब्याहि सुवेषन।
कोउ कहे लाये राम विहाही । ऐकते ऐक महाछवि ताही ।।
तिन्हकर गुहण कीन्ह रघुनाथा । आवहिं तेहु अवध कहँ साथा
कोउकहे ऊन सब राजकुल की । अपर बहु व्याही कहिपुलकी
राम अलभ्य पार पद दीन्हो । अकथ भूरि भामिनि भवचीन्हो
कोइ कहेप्रेमविवस बहु आई । सोउसब अदभुत ललित सोहाई
निज निज सुन्दर सदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ।।
वना बजारुन जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ।।
सफल पुग फल कदलि रसला । रोपै वकुल कदेव तमाला ।।
लगी सुभगतरु परसतधरनी । मनिमय आलबालक लकरनी ।
भुप भवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदन मन मोहा ।
दो०-विविध भाँति मंगल कलस, गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं, सब रघुवर पुरि निहारी ।।

कहि अपर युवति तिरहूत में अवधेश को रहियो भयो।
कोइ कहे अमित यूथ सखि आई मंडप कोहबर नेगन पाई।
आय सुनि सुधि पाँच लक्ष सुतान वर अनुसारयो।
इत अवधवासी चार वरन के पुत्री ब्याही कर धरयो।
मिथिलेश तिन कहँ दान मिथिला की सुकन्यन की करयो।
सो०-निज कुमारिन सँग, करिहौं विदा महीश मणि।
देहौ वित्त अभंग, आहे चारिय बरात महँ॥
दो०-भए न होइहैं होइ नहिं, ऐसो कतहुँ विवाहु।
सखि किये राम विवाह ने, सबहिं समान उछाहु॥
विदित भई सुधि सब पुरमाहीं। बढ़यो मोद मंगल जहँताहीं।
जनक सचिव सव जे सँग आये। माँगी विदा नृपहिं सिरनाए।
देन लगे नृप सम्पति नाना। लिये न मन अनुचित अनुमाना।
करि नृप की सिगरी सेवकाई। गए जनक पहिं माँगि बिदाई।
मंगल साज सजहिं हरषानी। गावहिं गीत सुमंगल साजी॥
घर घर होवहि मंगल रचना। सजहिं पताके तोरण ध्वजना।
मणिन चौक बहु गृहगृह पूरी। सिंचे सुगंधन मारग भूरी॥
अवधपुरी बहुभाँति सजाई। इन्द्रपुरी जेहिं देखि लजाई॥
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा। घरघर उत्सव गान उचारा।
सजत बरातिन सुखित अपारा। निशासिरानि भयो भिनुसारा
होत प्रभात कुमारन काही। कह्यो भूप विलमो अब नाहीं॥
करि मज्जन भोजन अति आसू। सजे कुँवर सब सहित हुलासू
सुभग रंग नारंग पोशाका। जेहि लखि सुर नरमुनि मनछाका

लसै मणीन मौर शुभ सीसे । रतन विभूषण अगनित दीसे ।।
काम विमोहक सकल कुमारा । बरणि कौन कवि पावत पारा
तेहि दिन नृपहुँ पीत पट धारे । गवन हेतु गज भए सवारे ।।
करि बहु बिनय बशिष्ठहुँ काहीं । भूप चढ़ायो सिंधुर माहीं ।।
दो०-भये अनंग समान सब, कुँअर तुरंग सवार ।
बजे नगारे निकट तहँ, बाजत बाद्य अपार ।।
सजी सैन सुन्दर चतुरंगा । चले बराती भूपति संगा ।।
आगे सुतर सवार अपारा । सोहि रहे गन्धर्व अपारा ।।
तिनके पाछे पैदल जाती । निज निज यूथबरण वहुभाँती ।।
लसहिंगजनपरविविध पताका । मनुतिनमहँ अरुझतरविचाका
बहु नागन पर नौबत बाजैं । तिनके गुरु गैयर गण गाजैं ।।
तहँ परिकर अगनित गतिसीधे । चले सवारन के पुनि पाछे ।।
कनक छड़ी वल्लम बहु सोटे । गवने सुन्दर जोटे जोटे ।।
परिचर बृन्दहि मध्य सिधारे । पंच सहस बर राजकुमारे ।।
दो०-राजकुमारन मध्य में, सोहत चारि कुमार ।
तिन पीछे गज पै चढ़यो, गवने अवध भुवार ।
रघुबंशी सरदार अपारा । सजे मतंगन भये सवारा ।।
तिनके पीछे चली पालकी । चारि बधुन की रतन जालकी ।
वर वाहन सिवकादि अनंता । आवैं तिन पछै दुतिवंता ।।
चली मिथिला की कन्या अपारा । दासीदास अनेक उदारा ।।
मिथिला की दुहिता तिन माही । बैठि महाँ मोद मन माँही ।।
कहहिं परस्पर सकल बराती । देखी कौशलपुरी सोहाती ।।

हने निसान पनव वर वाजै । भेरि संख धुनि हय गयगाजै ॥
हल्ला परयो अवधपुर जाई । अब बरातपुर नेरे आई ॥
झाँझि बिरवड़ि ड़िमिसुहाई । सरस राग बाजहि सहनाई ॥
पुरवासी सुनि अकनि बराता । भए मुदितमन पुलकितगाता ।
आतुर सजे अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ॥
चले लेन आशुहिं अगवानी । सकल पुण्य फल आपन जानी ॥
मंगल भेट हाथ निज लीन्हे । सकल चले मनभाव नवीने ॥
अवध प्रजा निरखन अभिलाषन । आए अगवानी कहँ लाषन
चारहुँ कुँअर निहारि निहारी । प्रेम मगन सबपुर नर नारी ।
इत बरात उत पुरजन रेला । मानहु तजे सिंधु युग बेला ॥
दो०-यद्यपि रहयो मैंदान बहु, कसमस परयो अघात ।
चली अवधपुर पंथ तब, मन्दहिं मंद बरात ॥
मिलहिं बराति पौरजन, प्रथमहि यही बताय ।
दुलहिन दूलह दुहुन को, दीजै तुरत दिखाय ॥
प्रविशे पुरजन दलमहँ आई । रामचरण परसहिं सुखछाई ॥
मन्द मन्द अब चली बराता । पुरजन करत परस्पर बाता ॥
पुनि पुरजन नर नाथ जोहारे । कृपा दृष्टि नृपसबन निहारे ।
प्रगटहिदुरहिंअटनपरभामिनि । चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
सुर सुगंध सुचि वरषहिं बारी । सुखी सकल शशिपुरनरनारी
करहिं निछावरिमणिमय चीरा । बारि बिलोचन पुलकसरीरा
आरतीकरहिं मुदितपुर नारी । हरषहिंनिरखि कुँवरवरचारी
शिबिका सुभग ओहार उघारी । देखि दुलहिनहोहिं सुखारी ।

॥ छन्द ॥

गोतनी आवत लगी महल में परिछन हेत ।
सुता पतोहनि सजे विमल अनुराग समेत ॥
रति मुर्छित जेहि देखिकै अस सुन्दरि नर नारी ।
सील सागरी गुणनिधि प्रेम भरि छवि सागरी ॥
पुनि दशरथ के अष्ठ भाई तिनकी सब रानी ।
आई अवधनरेश धाम बधु विद्या खानी ॥
वीरसिंह की युगल रानि समरुप सोंहावनी ।
रत्नमालिका सो एक जेठ सबही विधि पावनी ॥
रत्नकला पुनि दुसरि छवि सुख सोभा की सदन ।
निज समाज वर साजिके अति पुलकित हर्षित वदन ॥
सुरसिंह की रानी रत्नप्रभा सो आई ।
रुपवति जय सील सिंह के रानी सोहाई ॥
विजयसिंह मदवति रानी सो परम सोहावनि ।
रत्नभानु के भ्रमर केसिसत रति लजावनि ॥
मदन शीला पावनि परम सो तो चन्दशेखर प्रिय ।
सजि समाज आवति भई मन प्रफुलित हर्षित हिय ॥
महावाहु की चन्द्रवती रानी छबि खनी ।
धर्मशील की रानी सुचित्रा सुमति सयानी ॥

सब समाज निज सजि महल आई अतिप्रीति ।
कौशल्या सनमान पाई बैठी निज रीति ।।
उतरि चादर सकल की पान अतर पावति भई ।
पंच शब्द बाजन लागे सब गावहिं मंगल मई ।।
दो०-परिछन को ताईं आई सब, मन महँ मोहन थोरि ।
देवतिया संग राजहिं मुग्धा मध्या किशोरि ।।
ताहि समय नृप के महल महामीर अरु सोर ।
चहुदिशि भामिनि की दमक दामिनि सीतन गोर ।।
सीय दरश लालच बस नारी । राजसदन सब चली सुखारी ।
दो०-यहि विधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं,बन्धुह समेत कुमार ।।
करहिं आरती बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद कहै को पारा ।।
भूषण मणि पट नाना जाती । करहिं निछावरि अगणितभाँती
बधुन्ह समेत देखि सुतचारी । परमानंद मगन महतारी ।।
पुनिपुनि सीयराम छबि देखी । मुदित सफल जगजीवन लेखी
सखी सिय मुख पुनिपुनि चाही । गानकरहि निजसुकृतसराही
वरषहिं सुमन छनहि छन देवा । नाचहिं गावहिं लावहि सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी । शारद उपमा सकल ढढोरी ।।
देत न बनहिं निपट लघु लागी । एकटक रही रुप अनुरागी ।।

।। छन्द ।।

चारिहुँ दुलहिनि दूलहको तबलियो शिविकाते आसुउतारी ।
होनलगी न्यौछावरि तेहिछन मणिगण पटभूषण जरितारी ।

राई लोन उतारिस रवीजन पढ़ि मंगल मेनु पावक डारी ।
गावहिं मंगल शोर मनोहर श्रीरघुराज जाहिं बलिहारी ॥
सकुचति सिय सासुनको निरखति चलति मंदपद पदुम उठाई
पग आगे सखि धरहिं ठीकरी सियपग गहि तेहिं देहि छुआई ।
कहहिं राम ते लाल उठावहु, प्रभु जननी लखि रहे लजाई।
मुनिवर को करकमल पकरि अलिलेहिं ठीकरी हठि उठवाई
यहिविधि हासविलास विविधविधि करहिंसखी कौतुकदरषाई
गावत बाज बजावत वहुविधि नाचहिं भाव बताइ बताई ।
बैठाई रघुराज वधूवर रंगनाथ के मन्दिर लाई ।
करवावती वर बधुन्ह कर श्रीरंग पूजन विधि सहित ।
सियराम को सिखावहि सखी इनकी कृपा मेटति अहित
युग-२ जिये जोरी सु चारिहु लखैं हम एहि भाँति नित ।
यहि विधि मनावैं पुनि खिलावैं द्यूत दोहुन मोदमित ॥
कोउ कहैं मोरि पतोहु जीती कोउ कहे मम लालजित ।
रनिवास हास विलास एहि विधि होत सखिगण अतिहसित
एहि भाँति लोकाचार करि सब वर बन्धुन्ह लै गई तित ॥
जहँ सभा मन्दिर बन्यो सुन्दर विशद मणि गणते जटित ॥
बैठाय पूत पतोहू आगे सुछवि लखि सब भई चकित ।
कुल नारि सब रघुबंश की देखहि दुलहिनी आइ इत ॥
जानि मातु प्राण प्रियरामा । सोपि सब विधि सियहि ललामा
दिन्ही सासु सियहि हर्षाई । सुखकर नेगसु मुख दिखलाई ॥
देवि अरुनधति सिय मुख देखी । सुखमय भरि प्रमोद विशेषी

दै अशिष दीन्ही दिव्य भूषण । शीश परसी करवलि लै दरन
सिय मुख देखि सुभग सब सासु । होहि मगन मनप्रेम हुलासु ।
किन्ह प्रणाम सबहि सुचिसीता । आशीष लेहि सुमंगलपुनीता
मंगल गान आनन्द बधावा । नृप रनिवास सरस भरिछायो ।।
निजनिज वस्तु अमित मनभावत । दीन्ही नेग नेह सरसावत ।
लोकरीति कुलरिति कराई । देखि मातु सकुचत रघुराई ।।
सबहि मातु मनमोद अपारा । जनु पागि परमारथ सुखसारा
दो०-निगम नीति कुलरीति करि अरघ पावड़े देत ।
बधुन्ह सहित सुतपरछि सब, चली लिवाई निकेत।
लोकरीति लननी करहि वर दुलहिन सकुचाहि ।
मोद बिनोद बिलोकि वड़ राम मनहि मुसुकाहि ।
चारि सिहासन सहज सुहाये । जनु मनोज निजहाथ बनाये ।।
तिन पर कुंवरि कुंअर बैठारे । सादर पाँय पुनीत पखारे ।।
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि ।।
बारहि बार आरती करहीं । व्यजन चारु चामर सिरढरही ।।
वस्तु अनेक निछावर होही । भरी प्रमोद मातु सब सोही ।।
समय सुहावन जानी माता । खोली सिय मुखपट झलकाता ।।
फैली शशि मुख सरिस जुन्हाई । पूरि प्रकाश भरेव अँगनाई ।
लखि मुख सरसत सासु सुहाई । प्रेमविवश तन दशा भुलाई ।
अनुपम सिय मुख सुँदर टीका । अमितचन्द्र लाजहिलगिफीका
सुनी लखी नहि सुन्दरताई । जनकलली जस अहैं सुहाई ।।
असमन गुनत कौशिला सासू । प्रेम उमगि चलि आयोआँसू ।।